जिले में ५००० से अधिक मनुष्यों की कोई बस्ती नहीं है। सब से बड़ा गांव श्रीनगर है। जिसमें सन् १८८१ में केवल २१०० मनुष्य थे। दूसरे केवल ९ गांवों में ५०० से अधिक और १००० से कम मनुष्य बसते हैं।

सन् १८८१ में जिले के ५५०० वर्गमील क्षेत्रफल में केवल १७३ वर्गमील में खेती होती थी। इस जिले में बड़े परिश्रम से खेती का काम होता है। कई एक खेतों की चौड़ाई केवल ३ ही गज होती है। गेहूँ, धान और महुआ यहां की प्रधान फसिल है। नीचे दरजे के लोगों का मुख्य भोजन महुआ है। जिले के खर्च से पैदावार अधिक होता है।

सन् १४०० ई० से पहिले अलकनंदा की घाटी में अनेक छोटे २ प्रधान लोग अपना २ स्वाधीन गढ़ रखते थे, इसी लिये इस देश का नाम गढ़वाल पड़ा। उसके पश्चात् चांदपुर के हुकूमत करने वाला अजयपाल सब छोटे राजाओं को अपने आधीन लाया और वही गढ़वाल राज्य को नियत करने वाला हुआ। उसने श्रीनगर को राजधानी बना कर उसमें एक महल बनवाया, जिसकी निशानियां अब तक विद्यमान हैं अजयपाल के वंश के राजा गण, चांद घराने के नाम से प्रसिद्ध हैं, उन्नीसवीं सदी के आरंभ तक गढ़वाल और पास के टिहरी राज्य में राज्य करते रहे। गोरखा लोग सन् १८०३ ई० में चांद घराने के राजा मानशाह को भगा कर अन्याय से आप हुकूमत करने लगे। उस समय गांव उजड़ने लगे और वहां के निवासी वनों में भाग गए। जब वे लोग हिमालय के कदम के पास आक्रमण करने लगे तब तो सन् १८१४ में अंगरेजी सरकार से उनको लड़ाई हुई। सरकार ने सन् १८१५ में गोरखों को परास्त कर के मानशाह के पुत्र सुदर्शन शाह को राजा बनाया, जिनके पर पौत्र महाराज कीर्तिशाह टिहरी के वर्तमान नरेश हैं, किंतु अलकनंदा की घाटी गढ़वाल का १ अङ्गरेजी जिला बनाया गया। अङ्गरेजी अधिकार में होने पर अङ्गरेजी गढ़वाल जिले की बड़ी उन्नति हुई है। अन्न और चाह दोनों की खेती शीघ्र बहुत बढ़ गई है।

हरिद्वार से काठगोदाम तक के पहाड़ी देशों का, जो नाथ और बदरीनाथ की यात्रा में मिलते हैं, संक्षिप्त

भारत-भ्रमण

पांच खण्डों में से

पांचवां खण्ड

केदारनाथ और वदरीनाथजी की यात्रा

बाबू साधुचरणप्रसाद विरचित

काशी
यज्ञेश्वरयंत्रालय में मुद्रित।

१९०२ ई०

पहिली वार १००० पुस्तकें छपीं

मूल्य प्रति पुस्तक ।≈)
केवल प्रेस का खर्च

पांचवां खण्ड

केदारनाथ और बदरीनाथजी की यात्रा

बाबू साधुचरणप्रसाद विरचित

यन्त्र० मुद्रित।

पहिली बार १०००
पुस्तकें छपीं

प्रति पुस्तक ।≈)
प्रेस का खर्च
)

भारत-भ्रमण के पांचवें खण्ड का सूचीपत्र।

पांचवें खण्ड का शुद्धि पत्र।

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२	१	की ओर	०
२	१७	शाजहांपुर	शाहजहांपुर
३	११	कर्नी	कर्नाल
४	२२	जिला	जिला है
७	१७	पौड़ी	पौड़ी में
७	२३	कारण	इस कारणसे
८	२५	समान	सामान
१२	२२	पहाड़ सड़क	पहाड़ीसड़क
२०	२४	५ मील	६ मील
२३	२	समान	समान है
२३	१५	सवारी	सवारी है
२५	१५	और	ओर
२५	२२	उत्तर	ऊपर
२६	४	१५०००	१५००
२७	१	रती में	रेती में
२९	१५	आगे	आगे से
२९	२३	तखटा	तरवटा
२९	२४	काटकर	का टकर
३१	१	वंदीचट्टी	चंदरचट्टी
४७	११	माग	मार्ग
४७	१८	वागघाट	वांगघाट
४९	१	होकर	०
६२	१९	आगे	आगे से
११६	७	हिमलाय	हिमालय
१२१	३	पावभर	तीनपाव
१४६	२५	है,	के

भारत-भ्रमण।

पांचवां खण्ड।

श्रीगणेशाय नमः।

सोरठा।

संभु चरन सिर नाय, साधुचरन परसाद अब।
पंचम खंड सुहाय, बरनत है भारत भ्रमन॥

प्रथम अध्याय।

हृषीकेश, गंगोत्तरी और मानसरोवर।

हृषीकेश।

मेरी पंचम यात्रा सन् १८९६ ई० (संवत् १९५३) के अप्रैल (वैशाख) में मेरी जन्मभूमि "चरजपुरा" से आरंभ हुई।

चरजपुरा से १२ मील दक्षिण गंगा के उस पार शाहाबाद जिले के बिहिया में ईष्टइण्डियन रेलवे का स्टेशन है। मैं वहां रेल गाड़ी में बैठ केदारनाथ और बदरीनाथ के दर्शन के अर्थ चला। और बनारस तथा बरैली होते हुए हरिद्वार

पहुंचा। विहिया की ओर से पश्चिमोत्तर २९ मील वक्सर, ८७ मील मुगलसराय जंक्शन, ९४ वनारस, १३३ मील जौनपुर, २१३ मील अयोध्या, २१७ मील फैजावाद, २९६ मील लखनऊ, ४४२ मील वरैली जंक्शन ४८६ मील चंदौसी जंक्शन, ४९८ मील मुरादावाद, ५८९ मील लक्सर जंक्शन और ६०१ मील पर हरिद्वार का रेलवे स्टेशन है।

रेलवे—हरिद्वार के निकट के लक्सर जंक्शन से अवध रुहेल खंड रेलवे, की लाइन ३ ओर गई है। इसके तीसरे दर्जे का महसूल प्रति मील २$\frac{1}{2}$ पाई है।

(१) लक्सर से पूर्व-दक्षिण—
मील, प्रसिद्ध स्टेशन।
२९ नजीवावाद।
३९ नगीना।
४९ धामपुर।
८७ मुरादावाद।
९९ चंदौसी जंक्शन।
१४३ वरैली जंक्शन।
१८७ शाजहांपुर।
२२५ हरदोई।
२५८ संडिला।
२८९ लखनऊ जंक्शन।
३०६ वारावंकी जंक्शन।
३६८ फैजावाद जंक्शन।
३७२ अयोध्या।
४५२ जौनपुर।
४८८ वनारस छावनी।
४९१ वनारस राजघाट।
४९८ मुगलसराय जंक्शन।

चंदौसी जंक्शन से दक्षिण पश्चिम ३१ मील राजघाट और ६१ मील अलीगढ़ जंक्शन।

वरैली जंक्शन से उत्तर १२ मील भोजपुरा जंक्शन ६२ मील हलद्वानी और ६६ मील काठगोदाम।

लखनऊ जंक्शन से दक्षिण-पूर्व ४९ मील रायवरैली उत्तर कुछ पश्चिम रुहेलखंड कमाऊं रेलवे पर ५५ मील सीतापुर, ८० मील खेरी, १६३ मील पीलीभीत १८७ मील भोजपुरा जंक्शन और २४१ मील काठगोदाम और लखनऊ से दक्षिण-पश्चिम ३४ मील उन्नाव और ४६ मील कानपुर जंक्शन।

वारावंकी जंक्शन से २१

मील पूर्वोत्तर बहरामघाट ।

फैजाबाद जंक्शन से ६ मील पूर्वोत्तर अयोध्या का रामघाट स्टेशन ।

(२) लक्सर से पश्चिमोत्तर—

मील, प्रसिद्ध स्टेसन ।

७ लंधौरा ।

१२ रुड़की ।

२३ सहारनपुर अवध रुहेलखंड और नार्थ वेष्टर्न रेलवे का जंक्शन ।

८३ अंबाला जंक्शन ।

८८ अंबाला शहर ।

१०० राजपुर जंक्शन ।

१२४ लुधियाना ।

१६२ फिल्लौर ।

१८६ जलंधर छावनी ।

१८९ जलंधर शहर ।

२१२ ब्यास ।

२३८ अमृतसर जंक्शन ।

२७० लाहौर जंक्शन ।

३१२ गुजरांवाला ।

३३२ वजीराबाद जंक्शन ।

३४० गुजरात ।

३४५ लालामूसा जंक्शन ।

३७३ झेलम ।

४४८ रावलपिंडी ।

[illegible]

५२६ नवशहरा ।

५५० पेशावर शहर ।

५५३ पेशावर छावनी ।

सहारणपुर जंक्शन से दक्षिण १६ मील मुजफ्फर नगर, ६८ मील मेरठ छावनी ७१ मील मेरठ शहर और ९९ मील गाजियाबाद जंक्शन ।

अंबाला जंक्शन से दक्षिण कुछ पूर्व २६ मील थानेसर, ४७ मील कर्नाल, ६८ मील पानीपत और १२३ मील दिल्ली जंक्शन और ३९ मील पूर्वोत्तर कालका ।

राजपुर जंक्शन से पश्चिम थोड़ा दक्षिण १६ मील पटियाला, ३२ मील नाभा, ६८ मील बर्नाला और १०८ [illegible] भतिंडा जंक्शन ।

अमृतरस जंक्शन से पूर्वोत्तर २४ मील बटाला, ४४ मील गुरदासपुर, ५१ मील दीनानगर और ६६ मील पठानकोट ।

लाहौर जंक्शन से दक्षिण पश्चिम २४ मील रायबंद जंक्शन, २०७ मील मुलतान

[illegible]

क्शन, २७२ मील बहावलपुर ८५० मील रूक जंक्शन ३११ मील हैदराबाद, और ८१९ मील कराची शहर।

वजीराबाद जंक्शन से पूर्वोत्तर २६ मील स्यालकोट और ५१ मील जंबू के पास तावी।

लालामूसा जं० से पश्चिम कुछ दक्षिण ५२ मील मलिकवाल जंक्शन, ६४ मील पिंडदादनखां, और १६४ मील कुंडियान जंक्शन।

गुलरा जं० से ७० मील पश्चिम खुसालगढ़।

(३) लक्सर जंक्शन से पूर्वोत्तर— मील प्रसिद्ध स्टेशन।
१४ ज्वालापुर।
१६ हरिद्वार।

हरिद्वार—पश्चिमोत्तर देश के सहारन पुर जिले में शिवालिक पहाड़ के सिलसिले के दक्षिण की नेव के पास (२९ अन्श, ५७ कला ३० विकला उत्तर अक्षांश और ७८, अन्श १२ कला, ५२ विकला पूर्व देशांतर में) गंगा के दहिने किनारे पर हरिद्वार तीर्थ है। इसका वृत्तांत भारत भ्रमण के दूसरे खंड के आठवें अध्याय में देखो।

मैं रेलवे स्टेशन से १/४ मील दूर हरिद्वार में जाकर सूर्यमल को धर्मशाले में टिका। मेरा वदरीनाथ का पंडा, जिसका गृह देवप्रयाग में था, वह हरिद्वार ही में मिल गया। मैंने कई दिनों तक हरिद्वार में स्नान और देव दर्शन करके हृषीकेश का राह लिया।

गढ़वाल जिला—केदारनाथ और वदरीनाथ के मंदिर हिमालय पर्वत पर पश्चिमोत्तर देश के कमाऊं विभाग के गढ़वाल जिले में है. इस लिये गढ़वाल जिले का विवरण पहले से जान लेना आवश्यक है। कमाऊं विभाग के पश्चिमोत्तर में गढ़वाल जिला, जिसका क्षेत्रफल प्रायः ५५०० वर्ग मील है, इसके उत्तर तिब्बत देश. पूर्व कमाऊं जिला, दक्षिण विजनोर जिला और पश्चिम टिहरी का राज्य और देहरादून जिला है। इस जिले का सदर स्थान श्रीनगर से ८ मील दूर पौड़ी है, किंतु श्रीनगर तो जिले का प्रधान कसबा

घाटियां, जो एक शृङ्ग से दूसरे को पृथक करती हैं देखने में आती हैं। इनमें से श्रीनगर का सिलसिला जो सब से चौड़ा और समुद्र के जल से १८२० फीट ऊपर है, लगभग १ मील चौड़ा है। इस जिले में पहाड़ियों के दक्षिणी नेव से रुहेल खंड की नीची भूमि के बीच लगभग दो या तीन मील चौड़ी केवल इतनीही समतल भूमि है । जिले के भीतर की प्रधान चोटियों की ऊंचाई यह है;—२५६६१ फीट नंदादेवी, २५४१३ कामेंट, २३३८२ फीट त्रिशूल, २३१८१ फीट दूनागिरि, २२९०१ फीट बदरीनाथ और २२८५३ फीट केदारनाथ है । सरस्वती और धवली की घाटियों से चीन के राज्य में जाने का राह है। सरस्वती की घाटी को नानापास और धवली घाटी को नीतिपास कहते हैं। अलकनंदा नदी, जो गंगा की प्रधान सहायक नदियों में से एक है, नीची घाटियों में बहती है। संपूर्ण जिले का पानी झरने और नदियों के द्वारा उसी में गिरता है। अलकनंदा और दूसरी नदियों के संगम के पवित्र स्थानों में देवप्रयाग, रुद्रप्रयाग, कर्णप्रयाग, नंदप्रयाग और विष्णुप्रयाग ये पांच मुख्य हैं। देवप्रयाग के समीप अलकनंदा गंगाजी में मिल गई है। केवल रामगंगा नदी, जो लोहबा के समीप निकली है, गढ़वाल जिले में गंगा से नहीं मिली है। वह कमाऊं जिले और रुहल खंड के मैदान में बहने के पश्चात् फर्रुखाबाद जिले में गंगा से मिलती है। गढ़वाल जिले के संपूर्ण नदियों में तेज धारा होने के कारण नाव नहीं चल सकती है। जिले में प्रतिवर्ष जंगली भूमि में खेती बढ़ती जाती है।

इस जिले में सन् १८९१ की जन-संख्या के समय ४०६६३५ जन थे; अर्थात् १९९७४३ पुरुष और २०६८९२ स्त्री और सन् १८८१ में ३४५६२९ थे; अर्थात् ३४३१८६ हिंदू, २०७७ मुसलमान, २४२ क्रस्तान, ६९ जैन और ५५ बौद्ध थे। जातियों के खाने में २०४५१९ राजपूत, ७७९६० ब्राह्मण, ५२०६० डोम, ३६५७ बनिया और २६२० गोसाईं थे। बर्फदार सिल सिले के भीतर एक दूसरे प्रकार की जाति भुड़िया, जिनकी संख्या कम है, बसते हैं। इनका स्वभाव बड़ा मैला है। गढ़वाल के निवासियों में एक से अधिक विवाह करने की चाल है। प्रत्येक मनुष्य अपने सामर्थ्य के अनुसार स्त्री रख सकता है।

वृत्तांत;—हरिद्वार तक रेल है । हरिद्वार से केदारनाथ और बदरीनाथ की यात्रा आरंभ होती है। कुछ लोग नजीबाबाद से भी जाते हैं। हरिद्वार से हृषीकेश तक १२ मील बैलगाड़ी और एक्के की सड़क है। हृषीकेश से ४०३ मील काठगोदाम के पास के रानीबाग तक हिमालय पहाड़ की चढ़ाई उतराई है सवारी के झंपान या कंडी और असबाब लेजाने के लिये कंडी या कूली का बंदोबस्त हरिद्वार से करना चाहिये। जो हरिद्वार में बन्दोबस्त नहीं करता उसको हृषीकेश में भी उपरोक्तचीजें मिलती हैं। यात्रियों को अङ्गरखा, कंबल, लोई या दोलाई, छतरी, जूता, पायजामा, चढ़ाई उतराई के समय सहारे के लिये लाठी या छड़ी, पूजा चढ़ाने के लिये मेवों की पुड़िया और चने की दाल, रोग से बचने के लिये पाचक, कुनैन आदि औषधि अपने साथ लेजाना चाहिए। ये सब सामान हरिद्वार में तैयार रहते हैं । खाने के लिये कोई जिन्श साथ लेजाने की आवश्यकता नहीं है; क्योंकि रास्ते की संपूर्ण चट्टियों पर सब सामान मिलते हैं मामूली वर्तन भी दुकानदार देते हैं।

हरिद्वार से केदारनाथ और बदरीनाथ होकर रेलवे का स्टेशन काठगोदाम ४१७ मील पर मिलता है। लक्ष्मण झूला से मील चौरी तक गढ़वाल जिला और मील चौरी से आगे कमाऊं जीला है। गढ़वाल जिले का डिपिटी कमिश्नर श्रीनगर से ८ मील पौंडी और कमाऊं जिले का अल्मोड़े में रहते हैं। पहाड़ में जंगल और माल के दो महकमे अलग अलग हैं। जंगल का प्रबंध और फौजदारी का विचार खुद डिपटीकमिश्नर करते हैं और माल के बंदोबस्त के वास्ते पटवारी लोग मुकर्रर हैं। यही लोग मालगुजारी तहसील और वाकयातों की रिपोर्टें भी करते हैं। बड़ी बड़ी बस्तियों में पुलिस की चौकी है।

पहाड़ी मनुष्य—पहाड़ी मनुष्यों में क्षत्री और ब्राह्मण ही अधिक हैं। इनका निर्वाह एक पेशे से नहीं हो सकता, कारण इनमें से बहुत लोग कूली के काम भी करते हैं। इस देश में लोहार-बढ़ई, कुम्हार, तेली, दरजी, और नट बहुत नीच समझे जाते हैं । लोहार बदरीनाथ और केदारनाथ के कंकण, अंगूठी और बदरीनाथ का पट और बढ़ई—कठौते, कठारी, कलसी और प्याले बनाकर यात्रियों के हाथ बेचते हैं । नट लोग यात्रियों के आगे नटी को

नचाकर पैसे मंगाते हैं, और ये पहाड़ी लोगों के विवाहादि उत्सव में जाते हैं। चमार ढोल बजाते, कपड़ा सीते जूता बनाते और चौकीदार के काम करते हैं। लोहार आदि कई जाति मुर्गी पालते हैं। डोम के अतिरिक्त कोई आदमी जूठा नहीं खाता। अहिर, गंडेरी और कुर्मी भी कुछकुछ होते हैं। पहाड़ में मुसलमान बहुत कम हैं। मजखली चट्टी से ईधर व्योपारी मुसलमान देख पड़ते हैं। पहाड़ी लोग छोटी जाति के आदमी से साधारण काम करवाना अनुचित समझते हैं और बड़ी जाति के आदमी छोटे काम करने में लज्जा नहीं मानते। झम्पान और कंडो ढोनें वालों में क्षत्रीहीं अधिक हैं। अब तो ब्राह्मण झम्पान ढोते नहीं देख पड़ते; परन्तु कंडी तो ढोते हैं। मोदी का काम ब्राह्मण क्षत्री तथा पण्डे लोग अधिक करते हैं। स्त्री दूकानों पर नही बैठतीं; परन्तु श्रीनगर आदि बड़ी बड़ी चट्टियों पर देख पड़ती हैं। और पशु पालन का काम छोटे बड़े सब जाति के लोग करते हैं पर अधिकांश राजपूतही खेती करते हैं। पहाड़ी लोग जोते बोये हुये खेतों में किसी को मल त्याग नहीं करने देते।

(मनुस्मृति के चौथे अध्याय और गौतम स्मृति के नवें ९ अध्याय में लिखा है कि खेत में मल मूत्र का त्याग न करो) किसीकिसी स्थान पर एक जगह कई विगहे खेत नीची ऊंची जमीन पर देख पड़ते हैं। नहीं तो सर्वत्र पर्वतों के कमर पर जहां मट्टी है सीढ़ियों के समान नीचे से ऊपर तक पहाड़ी लोग खेत बनाए हैं। पहाड़ी मवेशियां जिनमें काले रंग की बहुत हैं छोटीछोटी और मोटीं ताजी होती हैं। भेड़ और बकरे बड़ेबड़े और मजबूत भी होते हैं। पहाड़ी लोग अपना चौका किसी को छूने नहीं देते पर इनमें शौच आचार बहुत कम है। यहां ब्राह्मण अशक्त होनें पर क्षत्री का बनाया हुआ कच्ची रसोंई खालेते हैं। ठंढा मुलुक होने से नित्य स्नान करनें की रीति यहां नहीं है। पहाड़ी लोग बड़े सच्चे होते हैं। वे किसी जिन्श में नकली चीज नहीं मिलाते एक बोली और एक भाव से जिन्श आदि समान बेचते हैं और चोरी नहीं करते। किसीं का असबाब कीसी जगह पड़ा रहे कोई नहीं उठाता। इस देश के पहाड़ी लोग दूसरे देशों के पहाड़ियों के समान गंवार

और कुरूप नहीं। इनका स्वभाव नम्र और दीन है। ये बड़े साहसी होते हैं और झगड़े के समय किसी से नहीं दबते पर किसी यात्री से एक टोपी दो चार हाथ तागा या एक सूई के लिए दुकान्दार खेतिहर तथा भिक्षुक सब लोग हाथ पसार कर दौड़ते हैं। बहुतेरे यात्री टोपी बटुए सूई तागा और बिन्दी हरिद्वार से ले आते हैं और उनको बांटते हैं। पहाड़ी लोगों ने हिन्दुस्तान को दो हिस्सों में विभक्त किया है अर्थात् एक देश और दूसरा पहाड़। हिमालय पहाड़ से दक्षिण के देशों को वे देश, और इनके निवासियों को देशी कहते हैं। कोई पहाड़ी आदमी पश्चिमोत्तर, पंजाब, बंगाले, राजपुताना आदि हिमालय से नीचे के देशों में गया हो, तो वे उसको कहते हैं कि वह देश गया है। उपरोक्त प्रदेशों के यात्रियों को ये लोग कहते हैं कि देशी हैं और देश से आये हैं। इससे अनुमान हो सकता है कि इन लोगों का देश किसी समय हिमालय से दक्षिण ही होगा। पहाड़ी लोग अपने घर से उत्तर के देश को ऊपर और दक्षिण को नीचे कहते हैं। पहाड़ी पुरुषों का पहिरावा लुंगी, कम्बल का कोट, अंगा, चोगा, गोल टोपी और पायजामा है और कम्बल ओढ़ते हैं। जिस जगह अधिक जाड़ा है वहां के लोग दिन-रात पायजामा पहिने रहते हैं। एक प्रकार के महीन और चिकनो कम्बल पहाड़ में बनता है। इसी का अंगा पायजामा आदि बनता है। देवप्रयाग, श्रीनगर आदि प्रसिद्ध बस्तियों के लोग कपड़े का अंगा, कुर्ता और पगड़ी पहिनते हैं। उनमें टोपी पहिनने की बड़ी रीति है। सिर खुला कोई नहीं देख पड़ता। कोई कोई अपने हाथों में चान्दी का कड़ा पहिनते हैं। पहाड़ में संक्रांति मास और हिन्दी अक्षर प्रचलित है। सरकारी काम देवनागरी में होता है। पहाड़ी भाषा एक दूसरी ही है; पर जैसे पंजाब, पश्चिमोत्तर देश, बंगाल, राजपुताना और बम्बे के लोग एक दूसरे देशवालों से बातचीत करलेते हैं वैसेही पहाड़ी लोगों के साथ भी देशीलोगों की बातचीत होती है। पहाड़ी लोग नदी को गाड़, गांव को सौड, पुल को सांगा, पौसरा को प्याऊ कहते हैं और वे लोग केवल २००० गज को १ कोस मानते हैं, जैसा कि पुराणों में १००० धनुष याने ४००० हाथ का १ कोस लिखा है। पहाड़ी स्त्रियां कम्बल की सारी, कपड़े

के कोट या चोलो पहिनती हैं; समय समय पर सिर पर अंगोछा बांध लेती हैं और गले में चान्दी की कई किस्म की अनेक सिकड़ियां और नाक में छोटी नथ पहनती हैं। बहुतेरी स्त्रियों में विशेष कर पहाड़ के दक्षिण हिस्से की रहने वालियों में कपड़े की सारी पहिनने की चाल है। पंजाबी स्त्रियां के समान ये पर्दे में नहीं रहतीं। पहाड़ी लोग गाय, बैल, भैंस, घोड़े, भेड़ और बकरे आदि पालते हैं। इन पशुओं को जन्महीं से दौड़ने फान्दने को समतल भूमि नहीं मिलती, इससे सब का स्वभाव शुद्ध होता है परन्तु जिन्स से लदे हुये भेड़ बकरे तेजी से पांव उठा कर पहाड़ों पर चलते हैं। साधारण भेड़ बकरों पर १० सेर, १२ सेर, किसी किसीं पर १५ सेर. किसी पर तो २० सेर जिन्स लादा जाता है। पहाड़ी दुलहों के चढ़ने को झम्पान हीं के समान पालकी होतीं है। मोलचौरी से दक्षिण के पर्वतीय मनुष्यों की चाल कुछ बदली है। इधर कम्बल के कपड़े पहिने हुये कोई नहीं देख पड़ते।

पहाड़—लक्ष्मण झूला से काठगोदाम के पास रानीबाग तक सर्वत्र पहाड़ मिलता है। दो चार मील की लाम्बी चौड़ी समतल भूमि किसीं जगह नहीं देख पड़ती। पर्वत के ऊंचे शिखर पर चढ़ने से ढेरियों के समान चारो ओर छोटी बड़ी हिमालय की चोटियां देख पड़ती हैं। केदारनाथ और बदरीनाथ ऊंचे पहाड़ पर हैं। वहां से भी चारो ओर के ऊंचे ऊंचे शिखर दिखलाई देते हैं। रुद्रप्रयाग से केदारनाथ तक और केदारनाथ से लौटने पर चमोली तक, तथा गुलाब कोटि से बदरीनाथ तक छोटे बड़े गुफे और बड़े बड़े पत्थरों के ढोंके देख पड़ते हैं। किसी किसी गुफे में दोही एक आदमी और किसी में पचीसों आदमी वर्षा के पानी से बच सकते हैं। बिरही और अलकनन्दा के संगम से कर्णप्रयाग तक अलकनन्दा के किनारों के पहाड़ों में पत्थर के गोलाकार टुकड़े और मिट्टी बहुत हैं। चमोली से कर्णप्रयाग तक कई जगह हवा से किनारे के पर्वत के हिस्से गिरे हुए और गिरते हुए देख पड़े। नदीयों में जगह जगह नील, पीत, शुक्ल, रक्त; हरित, सबहीं रंग के पत्थर के टुकड़े पड़े हैं, पर शुद्ध रंगबाले कामिल नहीं हैं।

जंगल - पहाड़ी जंगल के चीड़, रामूला (जो चीड़ से भी ऊंचे हैं) तून, सिरिस, सीसो, गइड, हल्दु, गेठी, सानन, धवड़ा, साल, कंडार, जामुन, आदि वृक्षों की लकड़ियां मकानों के काम में आती हैं। चीड़ और रामूल के पेड़ बहुत ऊंचे और सीधे ताड़ के समान होते हैं। पीपल, वट, आम, गूलर, सहिजन, कचनार, निम्ब, अखरोट हड़ा, तेजवल पद्म काठ, करौना के वृक्ष भी कहीं कहीं मिलते हैं। मन्दाकिनी नदी के दोनों किनारे पहाड़ी पौधों की झाड़ियों से हरे भरे हैं। वृक्षों पर तरह तरह के पौधों औ फूलों के वेल विचित्र तरह से लपटे हैं। जंगल का मनोहर दृश्य देख कर मनुष्य चकित होजाते हैं कर्णप्रयाग से इधर रानीवाग तक जगह जगह पर हरित और घने जंगल हैं। मन्दाकिनी के किनारे पर और चमोली से उत्तर आम के वृक्ष नहीं देख पड़े। जंगलीवृक्षों में कायफल, महोल और तोतल आदि कई वृक्षों में खाने के योग्य मीठे फल होते हैं, पर ये ऐसे फल नहीं हैं कि इनको मनुष्य खाकर सन्तुष्ट होजाय। पर्वती और जंगली वृक्ष अगर आम, कटहल, अमरूत, महुये आदि फल वाले वृक्षों के समान फल देते, तो हिन्दुस्तान के लोगों के अहार का यह एक वड़ा वसीला होजाता। जंगल में वुरांश, गुलचीनी आदि बहुत फूल फुलते हैं पर इनमें सुगन्ध नहीं होता। अवश्य गरना अर्थात् करौने का जंगल जहां है वहां समय समय वड़ा सुगन्ध फैलता है। वदरीनाथ और केदारनाथ के अतिरिक्त सर्वत्र लकड़ी सस्ती है। भागीरथी के किनारे पर जंगल में सूखी लकड़ी बहुत मिलती है। पहाड़ी लोग जब चाहते हैं पर्वत के जंगलों में आग लगा देते हैं। कई दिनों तक वह जला करता है। रात्त को दूर से देखने में अच्छा मालूम पड़ता है। आग लगने से जगह साफ होजाती है या पुराने सूखे हुये वृक्ष जल कर नये हरित वृक्ष उत्पन्न होते हैं। कमाऊं जिले के रानी खेत और नैनीताल के आसपास के जंगल में वनडाढ़ा लगाने की रोकावट है। कण्डाली नामक एक किसम का पौधा जंगल में और जगह जगह सड़कों के पास होता है, जिसके छू जाने से विच्छू काटने के समान एक दिन तक आदमी के शरीर में छन छनाहट रहती है।

नदी—पहाड़ी नदियों का पानी घाटियों की पत्थरैली भूमि पर वेग से गिरता है। ऊंचे पर्वत के बीच में संकीर्ण प्रवाह से नदी वहती है। हरिद्वार से काठगोदाम के पास रानीवाग तक नदियों में किसी जगह नाव नहीं चलती है और न पुलों के नीचे नदियों के बीच में पाये वने हैं। सर्वत्र दोनों किनारों पर पाया बनाकर लोहा या रस्से और लकड़ी के लटकाऊं पुल, जिनको झूला कहते हैं वने हैं, छोटी नदियों पर इस किनारे से उस किनारे तक लकड़ी के शहतीर डाल कर लकड़ी के पुल वने हैं। थोड़ा पानी में हल कर भी कोई नदी के पार नहीं जासकता। यात्रियों के जाने वाली सड़क के पास की नदियों पर काठ और लोहे के लटकाऊं पुल वनाये गये हैं। वस्ती वालों ने किसी किसी जगह अपनी वस्ती के पास नदी उतरने के लिये लकड़ी और रस्सों से झूले वनाये हैं। छोटी नदियों में वड़े झरने के समान पानी की धार, जो वर्षा काल में चौड़ी होजाती है, देखने में आती है। अनेक स्थानों में वड़े वड़े ढोकों पर नदियों का पानी ठोकर खाकर आगे जाता है। वर्फ मय पहाड़ के पास का पानी मट्ठा के समान श्वेत और दूसरी जगहों का हरित देख पड़ता है।

झरना—वर्षा का पानी पहाड़ के दरारों में या किसी निम्न जगह में रुक कर पहाड़ के भीतर से या उसके ऊपर से निकल कर किसी नदी अथवा घाटी में गिरता है। जान नहीं पड़ता कि किस रास्ते से पानी आता है। दिन रात एक तरह से पानी गिरा करता है। किसी जगह सींक के समान पतली और किसी जगह मनुष्य को वहा ले जाने के योग्य झरने की मोटी धार गिरती है। झरने ही के पानी से नदी वन जाती है।

पहाड़ सड़क—प्रायः सव सड़क अंगरेजी राज्य में नदी अथवा पहाड़ की घाटी के किनारे हैं। किसी जगह नदी के पानी से वहुत ऊपर और किसी जगह थोड़ेही ऊपर दो फीट से दस वारह फीट तक चौड़ी चढ़ाई उतराई की सड़क वनी है। सड़कों के एक ओर पहाड़ और दूसरी ओर नीचे नदी का पानी या घाटी है। वीच में पर्वत के कमर पर सड़क निकाली गई है। जिस जगह केवल पत्थर का पहाड़ है उस जगह की सड़क संकरी होती

है। यात्रियों को गिरने का भय नहीं है; केवल चढ़ाई उतराई का क्लेशही है। रूद्रप्रयाग से केदारनाथ तक और केदारनाथ से बदरीनाथ तक अधिकांश स्थलों की सड़क ठोकर वाली है। सर्वत्र की सड़क बाएं दहिने चौरस और आगे पीछे नीची ऊंची है। बिजनी, त्रियुगी नारायण, केदारनाथ, तुंगनाथ आदि जगहों की चढ़ाई कठिन है। पहाड़ी बस्तियों की पगडण्डी राहें पर्वत के शिरो भाग से नीचे की ओर बनी हैं। सुगमराह और उतराई की सड़क पर एकघंटे में करीब $1\frac{1}{2}$ मील और कड़ी चढ़ाई की सड़क पर एक घंटे में $1\frac{1}{4}$ मील के हिसाब से यात्री लोग चलते हैं।

चट्टी और बस्ती—पहाड़ में लम्बे चौड़े और सीधे छप्पर वाले मकान होते हैं। यहां पत्थर और लकड़ी के लिये बहुत खरच करना या इनको दूर से ले आना नहीं पड़ता। चीड़ आदि कई तरहके वृक्ष गढी हुई लरही के समान सीधे होते हैं। पहाड़ी लोग पत्थर के शुद्ध दिवार बना कर दोनों पालाओं पर लरही के समान दश बारह लकड़ी देकर तख्तों से पाटते हैं और तख्तों के ऊपर पटियों से या पहाड़ी खर से छा लेते हैं पटिया तो १ हाथ या इससे कम बेशी लम्बी तथा चौड़ी और एक अंगुल मोटी होती है। सरकारी धर्मशाले आदि कितने मकान केवल लरही के समान लकड़ियों से पाटकर छाए गए हैं। चट्टियों के कितने मकान दश बारह हाथ चौड़े और बड़े बड़े लम्बे और कितने दो मंजिले हैं। बस्तियों के छोटे बड़े मकान भी इसी तरह से बनते हैं। इनके अतिरिक्त बनलकड़ी की डाल पात और नरकट तथा रिंगाल पर खर से भी मकान छाए जाते हैं और पत्थर के अनगढ़े टुकड़ों से भी दिवार बनाई जाती है। छोटी छोटी कई चट्टियों पर जंगली लकड़ी के खंभे और डाल पात और खरे से बने हुए मकान बने हैं प्रायः सब पहाड़ी मकानों में आंगन नहीं होता, क्योंकि वे पहाड़ के कमर पर बनते हैं। साधारण खरचे से इस देश के मकान बंगलों के समान हो जाते हैं। पहाड़ पर जिस बस्ती में ३० या ४० कमान हैं, वह बड़ी बस्ती कहलाती है। पहाड़ों के कमर पर और उनके ऊपर जगह जगह २-४-१०-१५ घर की

बस्तियां देख पड़ती हैं। पहले कई चट्टियों पर अहल्याबाई की धर्मशालायें थीं; अब बड़ी बड़ी प्रायः सब चट्टियों पर सरकार अंगरेज ने एक एक धर्मशाला बनवा दिया है।

जिन्स—आटा, नया और मोटा चावल, उड़द की दाल, निमक, घी, चने का चबैना और गुड़ सब चट्टियों पर; महीन और पुराना चावल अरहर, मसूर और मूँग की दाल और तम्बाकू बहुतेरी चट्टियों पर; चने की दाल, बेसन, पूरी, पेड़ें, गरी, छोहाड़ा, बादाम, किशमिश, सौंफ आदि मसाले, चीनी, तेल, दूध बिरले चट्टियों पर; आलू, कच्चे केले, कोंहड़ा, पिंडालू (अरूई) अदबरी किसी किसी चट्टी पर, कोदू, कांदल्या, लिंगड़े और मरसे के साग ऊंचे पहाड़ों के किसी किसी चट्टी पर; आम नीचे के पहाड़ों पर; कपड़े बरतंन, कागज, पेन्सिल दियासलाई आदि देवप्रयाग, श्रीनगर, रुद्र-प्रयाग, ऊखीमट, चमोली, पीपलकोटी कुम्हारचट्टी जोशीमठ बदरीनाथ नन्द-प्रयाग और कर्णप्रयाग में; और नासपाती, आड़ू, अनार, धोबीघाट चट्टी से नीचे मिलते हैं।

सूचना - केदारनाथ और बदरीनाथ के मार्ग पहले से अब बहुत सुगम होगये हैं प्रति दिन सैकड़ों आदमी स्त्री, पुरुष, वृद्ध, जवान, लड़के और लड़कियां झम्पान और कण्डियों में तथा पैदल जाती हैं। ६ मास के लड़के भी अपनी मा की गोदी में झम्पान पर और दो चार वर्ष के लड़के और लड़कियां कण्डियों में और कूलियों के कन्धे पर जाते हुए देख पड़ते हैं। झम्पान और कण्डी का भाड़ा हरिद्वार और हृषीकेश में होता है। इनके अतिरिक्त रास्ते में किसी जगह झम्पान और बहुतेरी जगह कण्डी मिल जाती है। जो आदमी रास्ते में थक जाता है, अथवा बीमार पड़ जाता है, वह रास्ते में कंडी का भाड़ा करके उस पर चढ़ लेता हैं; पर मोटे ताजे आदमी को कण्डी नहीं मिलती। पर्दा में रहने वाली स्त्री झम्पान पर पर्दा लगा सकती हैं। एक या कई आदमी मिलकर कण्डी का भाड़ा करके उसमें अपना असबाब लेजाते हैं। मिलचौरी से उत्तर सवारी के लिये टट्टू मिलते हैं। श्रीनगर में धोबी और देवप्रयाग और श्रीनगर में नाई मिलते हैं। जो आदमी मोदी का जिन्स

देता है उसको वह टिकने का मकान और यथा साध्य बरतन देता है। सब चट्टियों पर और सब मोदियों की दुकानों में एक बोली एक दर से जिन्स बिकती है। केदारनाथ जाने वाला यात्री नाला चट्टी से आगे और बदरीनाथ जाने वाला चमोली से आगे किसी चट्टी पर किसी दुकान्दार के पास अपने जरूरी काम से अधिक असबाब रख देते और लौटने पर ले लेते हैं। पहाड़ में पान नहीं होता और अच्छी तम्बाकू नहीं मिलती। सब चट्टियों पर भाजी नहीं बिकती। तेल कम होता है और किसी किसी जगह बहुत महंगा मिलता है। यात्री लोग लकड़ी जलाकर अथवा घी से रोशनी करलेते हैं। रास्ते में कई जगह चमार जूते बेचते हैं। थोड़ी थोड़ी दूर पर चट्टी बनी हैं, जिनमें टिकने का सुबीता है। श्रीनगर आदि बड़ी बड़ी चट्टियों की दुकानों पर नोट बिक जाते हैं। राजा महाराजों को जिनके साथ बहुत लोग हों ननीताल में साहेब कमिश्नर बहादुर के पास अथवा पौड़ी में डिपुटीकमिश्नर के पास दरखास्त करने से रसद आदि की पूरी मदद मिल सकती है। रास्ते में किसी जगह हिंसक जन्तु का भय नहीं है। रुद्रप्रयाग से आगे केदारनाथ के रास्ते में और उखीमठ से आगे बदरीनाथ की ओर एक प्रकार की मक्खी आदमी को काटती है। काटने के समय जान नहीं पड़ता; परन्तु पीछे घाव होकर बहुत दिनों तक खजुलाता और बढ़ता जाता है। कर्णप्रयाग और मीलचौरी के बीच की आबहवा खराब है। इस देश में झरनों का पानी बहुत मीठा और स्वास्थ कर है। हरिद्वार से काठगोदाम तक अंगरेजी सरकार ने जगह जगह डाकखाना, शफाखाना और पुलीस की चौकी नियत कर दी है। अधिकांश यात्री प्रति दिन सबेरे चार पांच बजे उठते हैं और ग्यारह बारह बजे चट्टी पर टिक जाते हैं। कुछ लोग खा पीकर शाम को भी थोड़ा चलते हैं। हरिद्वार से चलकर ४१७ मील काठगोदाम के रेलवे स्टेशन पर चालीस पैंतालीस दिन में आराम से आदमी पहुंच जाते हैं। जब तक केदारनाथ और बदरीनाथ के पट खुले रहते हैं, तब तक यात्रा जारी रहती है; परन्तु श्रावण तक यात्रियों की भीड़ भाड़ बहुत रहती है। वर्षा काल में पर्वत, नदी और जंगल

अधिक रम्य और मनोहर होजाते हैं। केदारनाथ और बदरीनाथ के पहाड़ों पर वैशाख और जेठ में भी बरफ जमा रहता है। बरसात में बरफ गल जाने पर बहुतेरी जगहों में सुन्दर पौधे निकल आते हैं। अब यात्रियों को इस मार्ग में दो बात का क्लेश रहगया है जिन से वे लोग घबड़ा कर पहाड़ से जल्दी बाहर होने की इच्छा करते हैं। एक तो पहाड़ की चढ़ाई उतराई और दूसरी जगहों की संकीर्णता परन्तु ये दोनों काम असाध्य हैं। आटा हृषीकेश में डेढ़ आने सेर, बदरीनाथ में ४ आने सेर और केदारनाथ में ६ आने सेर बिकता है।

केदारनाथ और बदरीनाथ, की यात्रा में हरिद्वार से काठ गोदाम तक नीचे लिखे हुए क्रमसे चट्टियां मिलती हैं।

(१) हरिद्वार से उत्तर थोड़ा पूर्व रुद्रप्रयाग तक, हरिद्वार से फासिला—

मील, चट्टियोंका नाम।

६ सत्यनारायण।

१२ हृषी केश।

१४ लक्ष्मणझूला।

१७½ फुलवाड़ीचट्टी।

१९¾ सेंमलचट्टी।

२०¾ गूलरचट्टी।

२२¾ मोहनचट्टी।

२५½ बिजनीचट्टी।

२८¼ कुण्डचट्टी।

३१½ बन्दरचट्टी।

३४¾ महादेवचट्टी।

३८ ४/५ सेंमालोचट्टी।

४०½ कण्डी की छोटीचट्टी।

४१¼ कण्डी की बड़ीचट्टी।

४५¾ ब्यासचट्टी।

४८½ छालूरी चट्टी।

५०¾ उमरासूचट्टी।

५४¾ देवप्रयाग।

६२ रानीबागचट्टी।

६४¾ रामपुरचट्टी।

६७¾ भगवानचट्टी।

७२¾ श्रीनगर।

८१¼ भट्टीसेराचट्टी।

८२½ छान्तीखालचट्टी।

८४¼ खांकराचट्टी।

८७¼ नरकोटाचट्टी।

९० गुलाबरायचट्टी।

९१¾ रुद्रप्रयाग।

(२) रुद्रप्रयाग से उत्तर कुछ पूर्व केदार-

नाथ तक रुद्रप्रयाग से फासिला।
मील, चट्टीयों का नाम—
४¼ छितोली वा तिलवड़ा।
७ रामपुरचट्टी।
१०¼ अगस्तचट्टी।
१३¼ महादेवचट्टी वा सौंड़ीचट्टी।
१५ चन्द्रापुरीचट्टी।
१८ भीरीचट्टो।
२१½ कुण्डचट्टी।
२४ गुप्तकाशी।
२४¼ नालागांव।
२६ भीतगांव।
२७½ व्युंगगढ़चट्टी।
३१ फट्टाचट्टी।
३४ शेरसीचट्टी।
३५½ रामपुरचट्टी।
४०¼ त्रियुगी नारायण।
४३ सोनप्रयाग।
४६ गौरीकुण्ड।
५०½ रामवाड़ाचट्टी।
५५ केदारनाथ।

(३) केदारनाथ से दक्षिण थोड़ा पूर्व चमोली तक केदारनाथ से फासिला
मील, चट्टीयों का नाम।
२०½ केदारनाथ से नालागांव चट्टी पूर्व कथनानुसार सोनप्रयाग से सीधा रास्ता त्रियुगी नारायण छोड़कर।
२८¼ ऊखीमठ।
३१ गणेशचट्टो।
३२¼ दुर्गाचट्टी वड़ी।
३३½ दुर्गाचट्टी छोटी।
३५½ पाथीभासाचट्टी।
३७½ कुन्दनचट्टी।
३८½ चौपत्ताचट्टी।
४४ तुंगनाथ होकर भीमचट्टी।
४५ जंगलचट्टी।
४५¼ पांगरचट्टी।
४९ मण्डलचट्टी।
५३¼ वीरभद्रचट्टी
५५ गोपेश्वर।
५७ चमोली।

(४) चमोली से उत्तर को ओर वदरीनाथ तक चमोली से फासिला—
मील, चट्टीयों का नाम।
२½ मठचट्टी।
४ वालानी चट्टी।
७ हाटचट्टी।
९ पीपल कोटी।
१३ गरुड़गंगा चट्टी।
१४½ देवदारू चट्टी।
१६¼ पातालगंगा।
१८¼ गुलावकोठो।
२० कुमार चट्टी छोटी।
२०½ कुमार चट्टी वड़ी।

२३ पैनीचट्टी।
२६ छोटीचट्टी।
२७¼ जोसीमठ।
२८¾ विष्णुप्रयाग।
३३ घाटचट्टी।
३५ पाण्डुकेश्वर।
३७¾ लाभनगढ़चट्टी।
४१ हनुमानचट्टी।
४५¼ वदरीनाथ।

(५) लवटती वदरीनाथ से दक्षिण थोड़ा पश्चिम कर्णप्रयागतक, वदरीनाथ से फासिला—

मील, चट्टीयोंका नाम।
४४¼ चमोली पूर्व कथनानुसार जोसी मठ छोड़ कर विष्णुप्रयाग और छोटी चट्टी होकर।
४६¼ कुवेलचट्टी।
४८¼ छोटी चट्टी।
५१¼ नन्दप्रयाग।
५४¼ सुरला चट्टी।
५७¾ लिंगासू चट्टी।
६३¾ कर्णप्रयाग।

(६) कर्णप्रयाग से पश्चिम रुद्रप्रयाग तक कर्णप्रयाग से फासिला—

मील, चट्टीयों का नाम।
५ चटवा पीपल चट्टी।
१० वगडासू।
१३ शिवानन्दी।
२१ रुद्रप्रयाग।

रुद्रप्रयाग से पूर्व कथनानुसार हरिद्वार ९१¾ मील पर है। हरिद्वार होकर अपने घर जाने वाले यात्री कर्णप्रयाग से रुद्रप्रयाग होकर जाते हैं।

(७) कर्णप्रयाग से दक्षिण-पूर्व काठगोदाम रेलवे स्टेशन तक कर्णप्रयाग से फासिला

मील चट्टियों का नाम।
३¼ सेमलचट्टी।
६ सिरौलीचट्टी।
७॥ वटोलीचट्टी।
११¾ आदिवदरी।
१६¼ जोंकापानीचट्टी।
१९½ कालीमाटी चट्टी।
२०¼ सिंहकोटीचट्टी।
२१¾ गोहरचट्टी।
२३¼ धोवीघाट।
२६½ छोटीचट्टी।
२९ मीलचौरी।
३१ सिमालखेतचट्टी।
३२¾ नारायणचट्टी।
३५ वृषभूचट्टी।
३६¼ छोटीचट्टी।
३७ चौखुटिया या गनाई।
४१¼ महाकालचट्टी।
४२ शाहपुरचट्टी।

४३½ घराटचट्टी।
४६ अमीरचट्टी।
४७½ द्वारहाट।
५१¼ मनरगों की दूकान।
५२½ वगवालीपोखर।
५३½ वांसुरी सेरा।
५५ मलयनद्दी चट्टी।
५७ रेवनीगांव चट्टी।
५८¼ मजखलीचट्टी।
५९¼ मजखली-धर्मशाला।
६८¼ सीताचट्टी या जंगलचट्टी।
७४ कांकरी घाट चट्टी।
७५¼ पहड़िया चट्टी।
७८ चमड़िया चट्टी।
८०¼ खैरना।
८१ गरमपानी चट्टी।
८२¾ रामगढ़ चट्टी।
८४½ एकचट्टी।
८७¼ फैंचीचट्टी।
८९¾ निंगलाटचट्टी।
९२¼ भिमौली चट्टी।
९३½ परसवली चट्टी।
९६¾ भीमताल।
१०१¼ नवचण्डी चट्टी।
१०२¼ रानीवाग।
१०४¼ काठगोदाम।

हरिद्वार से काठगोदाम तक का जोड़

मील	वृतान्त
९१¾	हरिद्वार से उत्तर थोड़ा पूर्व रुद्रप्रयाग।
५५	रुद्रप्रयाग से उत्तर कुछ पूर्व केदारनाथ।
५७	केदारनाथ से दक्षिण थोड़ा पूर्व चमोली।
४५¼	चमोली से उत्तरकीओर वदरीनाथ
६३¾	वदरीनाथ से दक्षिण की ओर कर्णप्रयाग।
३१२¾	जोड़ कर्णप्रयाग तक।
१०४¼	कर्णप्रयाग से दक्षिण-पूर्व काठगोदाम।
४१७	जोड़ काठगोदाम तक

हरिद्वार से केदारनाथ और वदरीनाथ होकर हरिद्वार लौटने का मार्ग।

मील	वृतान्त
३१२¾	हरिद्वार से कर्णप्रयाग तक पूर्व लेख के अनुसार।
२१	कर्णप्रयाग से रुद्रप्रयाग।
९१¾	रुद्रप्रयाग से हरिद्वार।
४२५½	संपूर्ण जोड़।

पहाड़ी यात्रा आरंभ—वैशाख शुक्ल तृतीया (सम्वत् १९५३—सन् १८९६ ई०) को मैंने हरिद्वार छोड़ा। हरिद्वार की हरिपैरी से १ मील उत्तर गंगा के दहिने किनारे पर भीमगोड़ा नामक स्थान है। यहां पहाड़ी के नीचे भीम-

कुण्ड नामक आठपहला पक्का एक कुण्ड है, जिसके पास भीमेश्वर शिवलिंग और पहाड़ी के कमर पर एक छोटे मन्दिर में भीम, गंगा और भगीरथ की मूर्ति हैं। उससे आगे जगह जगह कतरा मूंज लगी हुई जमीन, जगहजगह बड़े बड़े वृक्षों का घना जंगल और स्थानस्थान पर दीमक के टीले देख पड़े। गरना(करौन्धा)आदि वृक्षों के फूलों की सुगन्धी से मन प्रसन्न होगया। हरिद्वार से २ मील आगे गंगा छूट जाती है। ३ मील आगे मोतीचूर नदी में ठेहुन से नीचे जल वहता है। ४॥ मील आगे रावलगांव के पास पूरी मिठाई और मोदियो की कई दुकानें हैं। ५½ मील आगे सुसूआ नदी में ठेहुन से नीचे जल लांघना होता है, पर वर्षा काल में इस नदी की धारा वड़ी तेज़ और इसकी चौड़ाई भी बहुत होजाती है। उसी समय किराये के हाथी पर चढ़ कर या तुमड़ियों के बेड़े पर लोग पार होते हैं। हरिद्वार से ६ मील आगे सत्य-नारायण का नया मंदिर है।

सत्यनारायण का मन्दिर—यहां एक छोटे मन्दिर में सत्यनारायण, लक्ष्मी और महावीर की मूर्ति २ दलान और ४ कोठरियों की एकधर्म-शाला कई छपरों की बस्ती; उत्तम पानी का एक कुआं और मोदियों की कई दुकानें हैं।

सत्यनारायण के पासही उत्तर सौंक नदी पर काठ का पुल बना है। वर्षा काल में तुम्बे का वेड़ा या हाथी पर लोग पार उतरते हैं। उस से आगे १ मील के भीतर दो जगह इसी नदी के दो नाले, जिनमें ठेहुन से नीचे पानी वहता है और उससे आगे जगहजगह गेहूं का खेत और जगहजगह जंगल में वनडाढ़ा लगा हुआ, जिसको जंगल साफ करने के लिये लोग लगाए थे, देख पड़े सत्यनारायण से २½ मील पर एक कूप ३½ मील पर वहुत छोटा नाला ५ मील पर पथरूवा नदी, जिसमें ठेहुने से नीचे जल है; ५¼ मील पर गंगा और सत्यनारायण से ६ मील (हरिद्वार से १२ मील) आगे देहरा दून के जिले में हृषीकेश हैं।

हृषीकेश—हृषीकेश में गंगा के दहिने किनारे पर रामजानकी का मन्दिर है। मन्दिर के आगे गंगा की ओर कुब्जांवर नामक एक पक्का कुण्ड है। झरना

का पानी कुण्ड में होकर गंगा में जाता है। मन्दिर से थोड़ी दूर पर वाराहजी का छोटा मन्दिर और एक दूसरा शिखरदार मन्दिर है। इनके अतिरिक्त हृषीकेश में कई छोटे छोटे मन्दिर हैं।

भरतजी का शिखरदार मन्दिर हृषीकेश के मन्दिरों मे प्रधान है, यह हृषीकेश के उत्तर भाग में पूर्व मुख से स्थित है, मन्दिर दो डेवढ़ी का है। भीतर के डेवढ़ी में स्यामल चतुर्भुज शंख, चक्र, गदा, पद्म लिए हुए शरीर पर सुन्दर वस्त्र, सिर पर मुकुट धारण किए हुए भरतजी खड़े हैं। मन्दिर के आगे जगमोहन और चारो ओर दीवार और कुछ मकान हैं। मन्दिर प्राचीन है। लोग कहते हैं कि भरतजी मुर्ति को (सन् ई० के ९ वीं शदी में) शंकराचार्य्य ने स्थापित किया। ५०—६० वर्ष पहिले यहां भरतजी के मन्दिर के अतिरिक्त कोई पक्का मकान न था, केवल विरक्तों का निवास था।

हृषीकेश में जगाद्री वाले की, नजीवावाद वाले की, कलकत्ते वालों की और अन्य कई धर्मशालाएं और सदावर्त हैं। गंगा के किनारे सन्यासी, वैरागी, आदि साधु कुटी वना कर वसे हैं। कलकत्ते वालों की धर्मशाले में रोटी दाल नित्य साधुओं को दी जाती है (पराशरस्मृति के पहले अध्याय में लिखा है कि यति और ब्रह्मचारी दोनों पक्के अन्न के अधिकारी हैं,) ऋषीकेश से दक्षिण कई मीलों पर्यन्त और उत्तर शत्रुघ्नजी के मन्दिर तक लग भग १०० कोढ़ी मढ़ी वांध कर वसे हैं और यात्रियों से पैसा मांगते हैं। ऋषीकेश में डाकघर और पुलिस की चौकी है। वाजार में खाने का सव सामान तय्यार रहता है और वहां से पहाड़ में जाता है। हरिद्वार से यहां तक वरावर जमीन है, और एक्के और वैलगाड़ी आती हैं। हरिद्वार के समान यहां भी झम्पान और कण्डीवाले कूली मुकरर होते हैं।

पहाड़ी सवारी—झम्पान, बरैलीदण्डी, दरीदण्डी और कण्डी पहाड़ी सवारी हैं।

झम्पान।
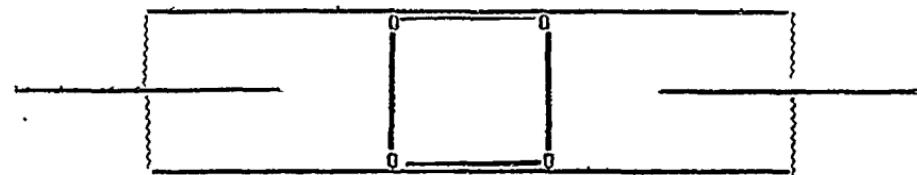
दरीदण्डी।
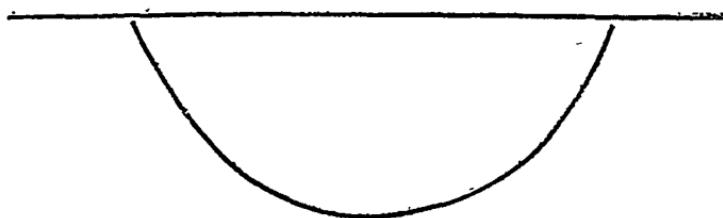
कण्डी।
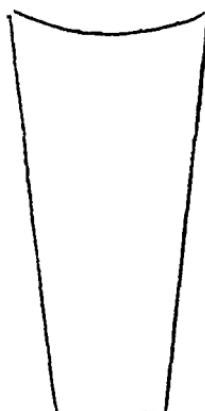
झम्पान, जिसमें एक आदमी पलथी मारकर आराम से बैठता है एक उलटी हुई मचिया के समान, जिसकी पाटी २ फीट लंबी होती है, इसके दोनों बगलों में ८½ फीट लम्बे दो बांस बान्धे जाते हैं इनके छोरों पर दोनों तरफ और रस्सियों से ढोले वान्धे रहते हैं। रस्सियों के बीच में एक झंपान के आगे और एक पीछे चार चार फीट लम्बो दो लकड़ियां या बांस लगा कर ४ कुली अपने कन्धों पर उठाकर लेचलते हैं। पर्दे में रहने वाली स्त्री झम्पान के ऊपर बांस की वत्ती बान्ध कर पर्दा लगासक्ती है। हृषीकेश अथवा हरिद्वार से मील चौरी तक झम्पान और कण्डी का किराया तै होता है क्यों कि झम्पान या कंडी के कुली उससे आगे नहीं जाते हैं मीलचौरी में दूसरे झम्पान का किराया किया जाता है झम्पान का किराया हृषीकेश से मीलचौरी तक का साधारण आदमी के लिये ७०) रुपये से ८०) रुपये तक और मोटे आदमी के लिये इस से दस वीस रुपया अधिक लगता है इसके अतिरिक्त जगह जगह रास्ते में करीब १०) रुपये झम्पान के कुलियों को मामूली इनाम देना पड़ता ह मैं १००) रुपये पर हृषी केश में एक झम्पान किराये पर किया।

बरेलीदण्डी झम्पान की तरह की होती है। वह बड़े आराम की सवारी उस पर कुर्सी के समान पैर लटका कर बैठने की जगह रहती है; उसके लिये कुछ चौड़ी सड़क की जरूरत है इससे वह इस मार्ग में मील चौरी से इधर नहीं चलती है।

दरीदण्डी एक बांस या लकड़ी के दोनो छोरों के पास एक छोटी दरी वान्ध दी जाती है। उसी पर झूले की तरह एक बगल में पैर लटका कर यात्री बैठता है। दोनों ओर दो कुली लगते हैं। दरींदण्डी में कोई विरलही चढ़ता है।

कण्डी एक गोली गहरी गावदुम टोकड़ी है। उसको एक कूली अपने पीठ पर खुले हुए मुह को ऊपर करके उसमें रस्सियां बान्ध कर कन्धे में लगाता है और उसमें नीचे कपड़े आदि भर देता है, जिस से बैठने वाला आराम से बैठजाय पांव लटकाने के लिये एक ओर से उसका किनारा कटा होता है इसमें बूढ़े लड़के या गरीब स्त्रियां बहुधा चढ़ती हैं। धनी लोग असवाब लेजाने के लिये कण्डी किराये करते हैं। कण्डी का किराया हृषीकेश

या हरिद्वार से मीलचौरी तक का एकमन असबाव लेजाने के लिये करीब २५) रुपया और सवारी के लिये लगभग ३६) रुपया लगता है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—स्कंद पुराण (केदार खंड, दूसरा भाग १६ वां अध्याय)। विष्णु भगवान ने १७ वें मन्वंतर में मधु और कैटभ दोनों दैत्यों को मार कर उनकी मेद से पृथ्वी को वनाया। उसके उपरांत वे पृथ्वी तल के सैकड़ों क्षेत्रों में भ्रमण करते हुए गंगाद्वार में गए। वहां वड़े तेजस्वी रैभ्य मुनि वहुत काल से तप कर रहे थे। विष्णुभगवान ने आम्र वृक्ष में प्राप्त होकर रैभ्य मुनि को, जो कुब्ज अर्थात कुवड़े होगए थे, दर्शन दिया। मुनि भगवान को देख कर वार वार दंडवत करके स्तुति करने लगा। भगवान वोले कि हे मुनीश्वर; मैं प्रसन्न हूं तुम इच्छित वर मांगो। मुनि वोले कि हे भगवान ! यदि आप प्रसन्न हैं तो आप इस स्थल पर नित्य निवास करो। सदा तुम्हारे और हमारे नाम से यह स्थान प्रसिद्ध रहे। भगवान ने कहा कि ऐसाही होगा। कुब्ज रूप तुम ने आम्र वृक्ष में प्राप्त मुझ को देखा इस कारण से इस स्थान का कुब्जाम्रक नाम होगा। इस तीर्थ में स्नान दान, जप आदि करने वालों मनुष्यों को कोटि कोटि फल लाभ होगा। जो यहां निवास करेगा उसको परम धाम प्राप्त होगा। यहां विंदु मात्र जल देने से पितरों का उद्धार हो जावेगा। मैं लक्ष्मी के सहित इस तीर्थ में सदा निवास करूंगा। हृषीक अर्थात इंद्रियों को जीत कर तुम ने मेरे दर्शन के लिये तप किया अथवा मैं, जो हृषीकेश हूं, यहां प्राप्त हुआ इस कारण से इस तीर्थ का दूसरा नाम हृषीकेश होगा। त्रेतायुग में राजा दशरथ के पुत्र भरत. जो हमारे चतुर्थांश भाग हैं, हमको यहां स्थापित करेंगे। वही मूर्ति कलियुग में भरत नाम से प्रसिद्ध होगी। जो प्राणी सतयुग में वाराह रूप से, त्रेता में कार्त्यवीर्य रूप से, द्वापर में वामन रूप से और कलि-युग में भरत रूप से स्थित मुझको यहां नमस्कार करेगा उसको निःसंदेह मुक्ति मिलेगी। ऐसा कह विष्णु भगवान अन्तरध्यान होगए। (१७ वां अध्याय) सुन्दरी से लेकर हेमवती नदी तक कुब्जाम्रक क्षेत्र है।

(यह कथा वाराह पुराण के १२२ वें अध्याय में है; किन्तु उसमें लिखा

है कि विष्णु भगवान ने रैभ्य मुनि के निकट के आम्र वृक्ष पर बैठ कर उनको दर्शन दिया। भगवान के भार से वह वृक्ष नम्र होकर कुबड़ा होगया इस कारण से उस तीर्थ का नाम कुब्जाम्रक करके प्रसिद्ध होगया।

वामनपुराण—(७९ अध्याय) प्रह्लादजी कुब्जाम्रक तीर्थ में गए। वह उस पवित्र तीर्थ में स्नान और हृषीकेश भगवान की पूजा करके वहां से बदरीकाश्रम चले गए।

कूर्मपुराण—(उपरि भाग ३४ वां अध्याय) कुब्जाम्रक नामक विष्णु का एक तीर्थ है। वहां विष्णु की पूजा करने से श्वेत द्वीप में निवास होता है जिस समय भगवान शंकर ने दक्षप्रजापति का यज्ञ विध्वंश किया उसी समय चारो ओर १ योजन विस्तार का वह क्षेत्र होगया और उसी समय से पुरुषोत्तम भगवान वहां निवास करते हैं।

नरसिंहपुराण—(६५ वां अध्याय) कुब्जागार में हरि भगवान का नाम हृषीकेश है।

गंगोत्री।

हृषीकेश से उत्तर और पहाड़ी राह से करीब १५६ मील पर गंगोत्री है। हृषीकेश से देहरा दून होकर करीब ६० मील टिहरी है टिहरी से ४२ मील "उत्तरकाशी" टिहरी-राज्य में एक पहाड़ी कसबा है। वहां विश्वनाथ, केदारनाथ, भैरव, अन्नपूर्णा, के चार मन्दिर; और पांच छः धर्मशाले; महाराजा इन्दौर और रायसूर्य्यमल का सदावर्त और मोदियों की दुकानें हैं। उत्तरकाशी से १७ मील पर भटवारी वस्ती में शिवमन्दिर और मोदियों की दुकानें हैं। भटवारी से ३७ मील, अर्थात टिहरी से ९६ मील और हृषीकेश से १५६ मील उत्तर समुद्र के जल से १४००० फीट से कुछ कम उत्तर गंगोत्री है, टिहरी से राह गंगा के दहिने किनारे जाती है। गंगोत्री से कई मील पहले राह गंगा के बाएं किनारे होगयी है टिहरी से आगे राह सुगम है। यात्रा के दिनों में बीच बीच में भी दुकान बैठजाती हैं। गंगोत्री में रायसूर्य्यमल का सदावर्त कई धर्मशाले और मोदियों की दुकानें हैं। वहां ३ मन्दिर हैं जिनमें से एक शिखरदार बड़े मन्दिर में गंगा, यमुना, नरनारायण, कुबेर जी और अन्नपूर्णा; दूसरे में भैरव

और तीसरे में महावीर जी हैं। वहां गोमुख से गंगा की धारा गिरती है, जिस का जल यात्री लोग ले आते हैं। उस स्थान से ११ मील और आगे लग भग ३०० फीट ऊंचे एक बर्फ के ढेर से लग भग २५ फीट चौड़ी और दो तीन फीट गहरी गंगा निकली है और लग भग १५०० मील बहने के पश्चात् १० मील चौड़ी धारा से समुद्र में गिरती है।

गंगोत्री के बहुतेरे यात्री टिहरी लौट कर वहां से श्री नगर होकर केदारनाथ और बदरीनाथ जाते हैं और बहुतेरे गंगोत्री से कई मील दक्षिण आकर वहां से सीधा पूर्व एक दूसरे राह से केदारनाथ से १५ मील फासिले पर त्रियुगीनारायण पहुँच कर केदारनाथ जाते हैं; परंतु यह राह पगदण्डी है और राह में सब जगह दुकान नहीं है। श्रीनगर से टिहरी होकर गंगोत्री तक मार्ग अच्छा है। खाने पीने का सामान सर्वत्र मिलता है।

मानसरोवर।

गंगोत्री से मुचकुन्द कुण्ड होते हुए साधु लोग मानसरोवर जाते हैं। राह में दुकानें नहीं हैं न किसी बस्ती में दाम देकर खाने का सामान मिलता है। साधु लोग बस्ती में भोजन का सामान मांग कर खालेते हैं।

संक्षिप्त प्राचीन कथा महाभारत—(अनुशासन पर्व्व—२५ वां अध्याय) उत्तर मानस में जाने से मनुष्य पाप से मुक्त होता है।

कूर्मपुराण— (उपरिभाग, ३६ वां अध्याय) मानसरोवर में स्नान करने से इन्द्र का अर्द्धासन मिलता है।

——*०*——

दूसरा अध्याय।

(गढ़वाल जिले में) देवप्रयाग, भिल्लेश्वर, श्रीनगर, पौड़ी, टिहरी और रुद्रप्रयाग।

देवप्रयाग।

लक्ष्मणझूला—हृषीकेश से १ मील उत्तर गंगा के दहिने किनारे पहाड़ी के

पास मौनी की रेती मे शत्रुघ्न जी का छोटा मन्दिर है। शत्रुघ्न जी की मूर्ति के वाएं वदरीनारायण की चतुर्भुजी मूर्ति है । वहां टिहरी के राजा के कर्मचारी झम्पान और कंडी के कूलियों से प्रति झम्पान और प्रति कंडी ४) रुपये महसूल लेकर झम्पान के सवार और कूलियों के नाम अपनी वही में लिख लेते हैं।

शत्रुघ्न जी के मन्दिर से लक्ष्मण जी के मन्दिर तक १ मील सुगम चढ़ाई उतराई की राह गंगा के किनारे किनारे गई है। यहां शिखरदार मन्दिर में २ हाथ ऊंची गौराङ्ग लक्ष्मण जी की मूर्ति है। मन्दिर के जगमोहन में एक ओर वदरीनाथ की एक प्राचीन मूर्ति; फर्श के नीचे एक गुम्बजदार मन्दिर में लक्ष्मणेश्वर महादेव और उनकी चारों ओर दश दूसरे शिवलिंग हैं। यहां एक छोटी धर्मशाला और चार पांच दुकानें हैं।

मन्दिर से करीव ¼ मील आगे गंगा जी पर लक्ष्मणझूला नामक लोहा का लटकाऊं पुल है।

लक्ष्मणझूला।
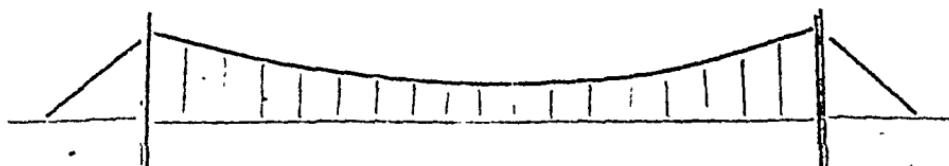
गंगा के दोनो किनारों पर पोख्ते दोदो पाये वने हैं जिन के सिरों पर इस किनारे से उस किनारे तक लोहे के मोटे मोटे कई एक रस्से (वरहे) लगे हैं, जो पुल से वाहर जाकर दोनों ओर नीचे मुख करके जमीन पर खूंटे में वंधे हैं। दोनों ओर के वरहों के नीचे भी इस किनारे से उस किनारे तक लोहे के रस्से हैं। ऊपर और नीचे के रस्सों के वीच में लोहे के खड़े छड़ लगे हैं, जो नीचे के वरहों को थांभ रक्खे हैं। नीचे के दोनों ओर के वरहों पर तख्ते पाट कर उस पर सुर्खी विछा दी गई है। जिस पर से झम्पान कण्डी, मनुष्य, घोड़े, भेड़ आदि सव पार होते हैं । सम्पूर्ण पुल का वोझ ऊपर वाले रस्सों पर रहता है। यह पुल २२८फीट लम्वा है इस को ३२०००)

रुपये के खर्च से झुंझनुवाले राय सूर्य्यमल ने बनवाया। सन १८९४ ई० में गोहना झील के टूट जाने पर गंगा की बाढ़ से, जब २० फीट से अधिक ऊंचा पानी इस पर होगया था, और यह पुल टूट गया ; परन्तु अब मरम्मत होने के कारण ज्यों का त्यों होगया है । पुल के पास, जहां ध्रुवकुंड गंगा जी में गुप्त है वहां ध्रुव जी की एक प्रतिमा है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—स्कंद पुराण—(केदार खंड दूसरा भाग २१ वां अध्याय) कुब्जाम्रक तीर्थ के उत्तर ऋषि पर्वत के निकट गंगा के पश्चिम तट पर मुनियों का तपोवन है । उस स्थान के नीचे के भाग की एक गुहा में शेष जी स्वयं निवास करते हैं।

श्रीरामचन्द्र जी रावण को मार कर सीता जी और लक्ष्मण जी के सहित अयोध्यापुरी में आए और अपने पिता के राज सिंहासन पर विराजे। उस के पश्चात् लक्ष्मण जी को राजयक्ष्मा रोग हुआ। श्री रामचन्द्र के पूछने पर महर्षि वशिष्ट ने कहा कि लक्ष्मण ने रावण के पुत्र इन्द्रजीत को, जो ब्राह्मण था और युद्ध से भाग कर तप करने गयाथा उसको मारा उसी दोष से इनको यह रोग हुआ है। यह कुब्जाम्रक तीर्थ में जाकर तप करें तब रोग से विमुक्त हो जायंगे और तुम भी रावण वध के पाप से छूटने के लिये तप का प्रयत्न वहीं करो।

(२३ वां अध्याय) कुब्जाम्रक से डेढ़ कोस उत्तर गंगा के तट में अब तक शेष जी विद्यमान हैं। श्री लक्ष्मण जी ने वहां जाकर १२ वर्ष निराहार रह शिव का तप किया। उसके पश्चात वह १०० वर्ष वायु भोजन करके और १०० वर्ष पत्रफल खाकर एक चरण से खड़े हो तप करते रहे। तब शंकर भगवान प्रकट होकर उनसे बोले कि हे लक्ष्मण हमारे प्रसाद से तुम्हारा सब पाप छूट गया। इस स्थान में एक बार स्नान करने से मनुष्य ३ किरोड़ ब्रह्महत्या से विमुक्त हो जायगा तुम तो मुनिहंता पापी राक्षस को मारा है। तुम्हारा रोग अब छूट गया। अब से यह स्थान तुम्हारे नाम से प्रसिद्ध होगा और हम लक्ष्मणेश्वर नाम से यहां स्थित रहें गे। मेरे दर्शन से पापियों का भी मोक्ष हो जायगा। शिव जी के अंतर्ध्यान होजाने पर लक्ष्मण जी अपने पूर्णअंश से

यहां स्थित हुए और उनके वाम भाग में लक्ष्मणेश्वर शिव विराजमान हैं, जिन के दर्शन करने से संपूर्ण पाप छूट जाता है। गंगा के पश्चिम तीर पर लक्ष्मण कुंड है। वहां स्नान और जप करने से अनंत फल लाभ होता है।

शिव पुराण (८ वां खण्ड—१५ वां अध्याय) में लिखा है कि कुब्जाम्रक तीर्थ और पूर्णतीर्थ के पास गंगा के बीच सोमेश्वर महादेव हैं। गंगा के पश्चिमी तट पर तपोवन है यहीं लक्ष्मण जी ने बड़ा तप किया था और शिव जी की कृपा से पवित्र होगये।

वन से आने पर लक्ष्मण जी को क्षयी का रोग हुआ क्योंकि उन्हों ने मेघनाद ब्राह्मण को मारा था। वशिष्ट जी के उपदेश से लक्ष्मण जी तपोवन में गए और शिव जी के तप करके उनके वरदान से रोग से विमुक्त हुए। शिव जी लिंग रूप से वहां रह गए और लक्ष्मणेश्वर नाम से विख्यात हुए। लक्ष्मण भी शेष का शरीर धारण कर उसी स्थान पर स्थित हुए हैं।

फुलवाड़ी चट्टी लक्ष्मण झूला से गंगा पार होकर बाएं किनारे से चलना पड़ता है। गंगा के दहिने टिहरी के राजा का राज्य और बाएं अंगरेजी राज्य है। झूला के १ मील आगे केदारनाथ और बदरीनाथ तक मील सूचक पत्थर गड़े हैं। -

लक्ष्मण झूला से १¼ मील पर एक जलका झरना और २¼ मील पर दूसरे झरने पर पनचक्की का मकान है।

पन चक्की साधारण चक्कियों (जांताओं) से बड़ी होती है और पानी के चलाने से चलती हैं। चक्की के नीचे नदी या झरने के पानी की धार जोर शोर से गिरती है। चक्की से नीचे पानी की धार तक गोलाकार एक लकड़ी लगी रहती है, जिस के ऊपर के सिरे पर लोहे का एक कील रहता है, जो चक्की का तखटा छेद कर उपरवटा में लगा रहता है। लकड़ी के नीचे के छोर पर चारो ओर कई खड़े तख्ते लगे रहते हैं, जिन में पानी काट कर लगने से लकड़ी घूमती है, जिसके साथ चक्की का उपरवटा घूमता है। चक्की के ऊपर जिन्स की गावदुम टोकड़ी रहती है, जिस से धीरे२ जिन्स चक्की में गिरती है। चक्की के ऊपर सुन्दर मकान बना रहता है। पनचक्की से १ मी-

ल और लक्ष्मणझूला से ३¾ मील गंगा के बाएं पानी के पास फुलवाड़ी चट्टी है। झूला से वहां तक मार्ग सुगम चढ़ाव उतार का है। वहां गंगा के किनारे कुछ मैदान है। सन १८९४ की बाढ़ में वहां की दुकानें बह गईं अब टट्टी और फूस के छप्परों से बहुतेरे मकान बने हैं।

फुलवाड़ीचट्टी से गंगा बाएं ओर छुट जाती है। हिउल नदी के बाएं किनारे से चलना होता है। फुलवाड़ी से २¾ मील आगे सेमलचट्टी पर टट्टी की कई दुकानें और एक पानी का बड़ा झरना और ३¾ मील आगे गूलरचट्टी पर गूलर के कई वृक्ष और टट्टी की कई दुकाने हैं। वहां से हिउल नदी पार कर उसके दहिने किनारे से चलना होता है। फुलवाड़ी चट्टी से ५ मील आगे एक झरना; नदी के उस पार बैरागढ़ागांव और एक पनचक्की; ५¾ मील आगे कई छप्परों की मोहनचट्टी; ५½ मील पर एक झरना; ६¾ मील पर एक दूसरा झरना और ८ मील पर बिजनी चट्टी है। मोहनचट्टी के एक मील पहले से बिजनीचट्टी तक नदी के दोनो ओर खड़े पहाड़ के बगलों पर खेतो की भूमि के असंख्य टुकड़े और जगह जगह पत्थर और टट्टी के मकान देख पड़ते हैं। मोहनचट्टी से बिजनी की कड़ी चढ़ाई आरंभ होती है।

बिजनी चट्टी बिजनीचट्टी पर मोदियों के चार पांच बड़े बड़े मकान जिनमें पत्थर और लकड़ी की दुमंजिली दुकाने हैं, एक पक्की सर्कारी धर्मशाला दो झरने और आम के बड़े बड़े ५ पेड़ हैं और पहाड़ के ऊपर बिजनीगांव बसा हुआ है।

बिजनीचट्टी से आगे २¾ मील कुण्डचट्टी, ४¾ मील के सामने नीचे नंद गांव, में ५¾ मील एक छोटा झरना और ६ मील बन्दरचट्टी है।

बिजनीचट्टी से २ मील आगे सुगम चढ़ाई से हिउल नदी और गंगा के बीच की चोटी पर आदमी पहुंचते हैं। ऊपर से गंगा की धार नाला के समान देख पड़ती है हिउल नदी, जो फुलवाड़ीचट्टी से मिलती है, १० मील के पीछे वहां छुट जाती है। वहां से गंगा के बाएं किनारे चलना होता है। कुण्डचट्टी गहरी जमीन पर है चट्टी पर एक मोदी, टट्टी के दो तीन मकान और एक छोटा झरना है।

वंदीन्चट्टी कुण्डचट्टी के १ मील पहले से घुमाव राह की कठिन उतराई है। वन्दरचट्टी गंगा के किनारे उसके पानी के पास है वहां २ पुरानी पक्की धर्मशालायें और नन्दगांव के मोदियों की टट्टी और छप्पर की बड़ी२ कई दुकानें हैं। सन १८९४ की बाढ़ से पहली दुकानें बहगई और एक धर्मशाले का ओसारा टूट गया चट्टी के पास झरना नहीं है सब लोग गंगा का पानी पीते हैं।

वन्दर चट्टी से आगे थोड़ी दूर पर छोटी वन्दर चट्टी और एक छोटी झरना, २¼ मील पर एक झरना, २¾ मील पर एक छोटा झरना; और ३¼ मील पर महादेव चट्टी है।

वन्दर चट्टी से १¼ मील आगे एक कड़ी चढ़ाई के उपरान्त पर्वत की चोटी पर पहुंचते हैं। उससे आधा मील आगे खड़ी उतराई है।

महादेवचट्टी—महादेवचट्टी पर मोदियों की तीन चार दुकानें और पांच सात छप्पर हैं। ८० सीढ़ियों के ऊपर पत्थर के टुकड़ों से छाई हुई एक कोठरीमें शिव लिंग है। वहां गंगा का पानी मिलता है और किनारे पर मैदान है।

महादेव चट्टी से आगे १¼ मील पर एक बहुत बड़ा झरना; १¾ मील पर एक कोटरी में गरुड़ की छोटी मूर्ति पानी का एक छोटा हौज और दो गुफे; ४ मील पर सेमालो चट्टी; ५¾ मील पर कण्डी की छोटी चट्टी, एक झरना, एक कोटरी में सीताजी की मूर्ति और आम के कई वृक्ष; कुछ आगे २ झरने; ६¼ मील पर एक छोटा झरना और ६½ मील पर कण्डी की बड़ी चट्टी है। सड़क से नीचे सेमालो चट्टी और सड़क के ऊपर एक झरना है। झरने का पानी लकड़ी के कई नालों से होकर चट्टी के पास जाता है।

कण्डीचट्टी—कण्डी की बड़ी चट्टी पर मोदियों के बड़े बड़े कई मकान, चट्टी के पास केले और आम के बहुतेरे वृक्ष और एक बड़ा झरना चट्टी के नीचे एक और झरना है, जिसका पानी गांववाले लेजाते हैं और चट्टी से थोड़ी दूर एक टीले पर कण्डी गांव है। गांव में पत्थर के १५—२० मकान बने हुए हैं।

कण्डीचट्टी से आगे १½ मील पर एक झरना, ४ मील पर व्यास गंगा और

४१/२ मील पर व्यास चट्टी है कण्डी चट्टी के दो मील आगे से १ १/२ मील की कठिन चढ़ाई के वाद पहाड़ की चोटी पर पहुँचते है। उसमे आगे १/२ मील कठिन उतराई के वाद व्यास गंगा का पुल मिलता हैं।

व्यास गंगा का पुल लक्ष्मणझूला के ढांचे का १८० फीट लंबा है वहां से व्यासगंगा के पास जाने का राह नहीं है। पुल से १/४ मील उत्तर जाकर व्यासगंगा भागीरथी गंगा मे मिल गई है। पुल के पास से एक सड़क दक्षिण ओर व्यासगंगा के दहिने किनारे होकर बांगवाट होती हुई, जो वहां से १८ मोल पर है, नजीवावाद को गई है।

व्यासचट्टी गंगा के वाएं व्यासचट्टी पर एक सरकारी पक्की धर्मशाला एक सर्कारी मोदी की दुकान, लकड़ी और खर से वने हुए मोदियों के वहुतेरे मकान और खेत का थोड़ा मैदान भी है वहां गंगा का जल मिलता है। सन् १८९४ की वाढ़ से वहां की पहली चट्टी और धर्मशालाएं वहगईं उस समय वहां ३३ फीट ऊंचा पानी चढ़ा था। पहाड़ के ऊपर नवगांव नामक वस्ती है चट्टी से थोड़ी दूर पर एक झरना और १/२ मील पर व्यास मंदिर है। वहां आगे पीछे २ कोठरी हैं। भीतर की कोठरी में व्यास और शुकदेव की छोटि मूर्ति है मन्दिर के पास एक दूसरी कोठरी और एक छोटा झरना है।

व्यास मंदिर से १८ मील पूर्व गढ़वालजिले का सदर स्थान और पौड़ी को एक पहाड़ी सड़क गई है। व्यास मंदिर से आगे देव प्रयाग तक अधिकांश जगहों पर पहली सड़क के ऊपर नई सड़क वनी है।

व्यासचट्टी से आगे १/२ मील व्यास मंदिर; १ मील एक झरना; २१/४ मील पर छालूडी चट्टी; ५ मील उमरासू या अमरकोट चट्टी ६१/४ मील एक नदी पर ५६ फीट लम्बा काठ का पुल ७ मील अनन्तराम पण्डा का मंदिर धर्मशाला, एक झरना और पन्त नामक वस्ती और व्यासचट्टी से ९ मील, हृपीकेश से ४२१/४ मील और हरिद्वार से ५४१/४ मील देवप्रयाग है।

छालूडी नामक छोटी चट्टी के पास एक झरना है। उमरासू गांव के पास उमरासू नामक वड़ी चट्टो पर छप्पर की दुकानों के अतिरिक्त तीन चार

बड़े बड़े पक्के मकान, २ झरने और बहुतेरे आम के पेड़ हैं। व्यासमन्दिर से देवप्रयाग तक गंगा के दहिने पर्वत के कमर और शृङ्गों पर जगह जगह छ सात बस्तियां देख पड़ती हैं। कई बस्तियों में पक्के मकान बने हुए हैं।

देव प्रयाग—देव प्रयाग के पास गंगा उत्तर से आइ हैं और अलकनन्दा पूर्वोत्तर से आकर गंगा (भागीरथी) में मिल गई हैं। अलकनन्दा के दहिने टिहरी के राजा का राज्य और बाएं अंगरेजी राज्य है। देव प्रयाग के पास अलकनन्दा पर लोहे का लटकाऊं पुल है। वह पुल दोनों किनारों के पायों के भीतर २५० फीट लम्बा और भीतरी २४½ फीट चौड़ा है। अलकनन्दा के बाएं किनारे पर अंगरेजी राज्य में सरकारी धर्मशाला और चालिस पचास घर की बाजार बनी थीं, जिस में सब तरह के दुकान्दार रहते थे। वे सब दुकानें सन् १८९४ की बाढ़ से बह गईं। अब वहां दो चार मकान बने हैं और एक डाक खाना भी है।

अलकनन्दा के दहिने और गंगा के बाएं संगम के पास समुद्र के जल से २२६६ फीट ऊपर टिहरी के राजा के राज्य में पहाड़ के बगल पर देवप्रयाग बसा है। पुलके पश्चिम चौरस फर्स के बींचमें रघुनाथजी का बड़ा मन्दिर है। मन्दिर के शिखरपर सुंदर कलश और छत्र लगे हैं और भीतर रघुनाथ जी की स्याम रङ्ग की विशाल मूर्ति खड़ी है। उनके दोनों चरणों और हाथों पर चांदी की जड़ाव, सिरपर सुनहला मुकुट, हाथों में धनुष बाण और कमर में ढाल तलवार है। रघुनाथजी के बाएं एक सिंहासन में श्री जानकीजी और दहिने राम और लक्ष्मण की चल मूर्ति हैं, जो रामनवमी और बसन्तपंचमी आदि उत्सवों में बाहर के पत्थर के सिंहासन पर बैठाई जाती हैं। मन्दिर के आगे जगमोहन से बाहर पीतल की बनी हुई गरुड़ की बड़ी मूर्ति है। मन्दिर के दहिने बदरीनाथ, महादेव और कालभैरव; पीछे महावीरजी और बाएं महादेव हैं। लोग कहते हैं कि रघुनाथजी की मूर्ति शंकराचार्य्य की स्थापित है। वहां का पुजारी महाराष्ट्र ब्राह्मण है। मन्दिर का चोबदार सबेरे के दर्शन के समय एक पैसा लेकर यात्री को मन्दिर में जाने देता है।

रघुनाथजी के मन्दिर से १०० सीढ़ी से अधिक नीचे भागीरथी और अलकनन्दा का संगम है। इस संगम पर अलकनन्दा के निकट वशिष्ठकुंड और गंगा के समीप ब्रह्मकुंड चट्टान में थे, जो सन् १८९४ की वाढ़ के समय जल के नीचे पड़ गए; अब इन में कोई स्नान नहीं कर सक्ता है। अब उस स्थान के ऊपर मुंडन और स्नान होता है और जव के पिसान की १६ गोलियां बनाकर पितरों को पिंडदान दिया जाता है। वहां एक छोटी और एक बड़ी गुफा है। छोटी गुफा में महादेव स्थित हैं।

सन् १८९४ ई० की वाढ़ के समय रघुनाथजी के मन्दिर के नीचे की वस्ती, बाजार, धर्मशाला और कई देवस्थान वहगए और ऊपर के सब बच गए। उस समय ७० फीट ऊंचा पानी वढ़ा था। देवप्रयाग से पूर्व ऊंची जमीन पर नई वस्ती बस रही है। रघुनाथजी के मन्दिर के उत्तर एक छोटो धर्मशाला और मन्दिर से करीब २०० सीढ़ी के ऊपर पर्वत पर क्षेत्रपाल का मन्दिर है। देवप्रयाग में इन्दौर के महाराज और रायबहादुर सूर्य्यमल के सदावर्त लगे हैं। बदरीनाथ के पण्डे देवप्रयाग ही में रहते हैं। वहां पण्डा ही लोगों के अधिक मकान हैं। पण्डे लोग वहां से या हरिद्वारही से धनी यात्रियों के साथ बदरीनाथ जाते हैं। देवप्रयाग गढ़वाल जिले के पांच प्रयागों में से एक है। दूसरे रुद्रप्रयाग, कर्णप्रयाग, नन्दप्रयाग और विष्णुप्रयाग उससे आगे मिलते हैं।

संगम से उत्तर स्थान स्थान पर गंगा के किनारों पर वाराहशिला, वैताल-शिला, पौष्पमालतीर्थ, इंद्रद्युम्न, विल्वतीर्थ, सूर्यतीर्थ और भरतजी का मंदिर है। बहुतेरे यात्री वैतालशिला पर पिंडदान करते हैं। एक स्थान में गंगा पर रस्सों का झूला बना हुआ है।

गंगोत्री के यात्री देवप्रयाग से गंगा के किनारे किनारे टिहरी होकर गंगोत्री जाते हैं। देवप्रयाग से लगभग २४ मील टिहरी और टिहरी से ९६ मील गंगोत्री है। यात्रीलोग लौटती समय श्रीनगर वा त्रियुगीनारायण होकर केदारनाथ और बदरीनाथ जाते हैं। (हृषीकेश का वृतान्त देखो)

केदार नाथ और बदरीनाथ के यात्रियों को देवप्रयाग से गंगा छूट जाती हैं; उनको वहां से अलकनंदा के बाएं किनारे चलना होता है। वे लोग लक्ष्मण-

झूला से देवप्रयाग तक ३० मील गंगा के किनारे किनारे आते हैं; किन्तु लक्ष्मण-झूला, फुलवाड़ीचट्टी, वन्दरचट्टी, महादेवचट्टी, व्यासचट्टी और देवप्रयाग केवल इन्हीं ६ स्थानों में स्नान और जलपान के लिये गंगाजल मिलता है। शेष स्थानों में ऊपर से गंगा देख पड़ती है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—स्कंदपुराण—(केदारखंड तीसरा भाग पहला अध्याय) गंगाद्वार के पूर्व भाग में गंगा और अलकनंदा के संगम के निकट देवप्रयाग उत्तम तीर्थ है, जिसके दर्शन और स्मरण मात्र से ब्रह्महत्या के समान पाप नष्ट हो जाता है; उस तीर्थ में किए हुए कर्मों का फल अक्षय होता है। जो मनुष्य देवप्रयाग मे पिण्डदान करता है, उस को फिर पितरकार्य करने की आवश्यकता नहीं रहती है। जिस स्थान पर गंगा और अलकनन्दा का संगम है और साक्षात् श्रीरामचन्द्र सीता और लक्ष्मण जी के सहित निवास करते हैं उस तीर्थ का महात्म्य कौन वर्णन कर सकता है।

देवप्रयाग में जिस स्थान पर ब्रह्माजी ने तप किया, वह ब्रह्मकुंड प्रसिद्ध हो गया। गंगा के उत्तर तट में शिव तीर्थ है, जिसमें स्नान करने से कीट भी शिव रूप हो जाता है। गंगा के निकट वैताल की शिला के पास वैतालकुंड है, जिसमें ५ दिन स्नान करने से मनुष्य शुद्ध हो जाता है; उससे थोड़ी दूर पर सूर्यकुंड है, जिसमें स्नान करने से मनुष्य सब पापों से छूट जाता है। ये सब तीर्थ गंगा के उत्तर तट पर हैं। गंगा के दक्षिण भाग में ब्रह्मकुण्ड से ऊपर ४ हाथ प्रमाण का वशिष्ठ कुण्ड है, जिस के सेवन करने से मोक्ष मिलता है। वशिष्ठ तीर्थ से ऊपर ८० हाथ के प्रमाण पर वाराह तीर्थ है। गंगा के मध्य में वाराही शिला है, जिसके स्पर्श करने से मुक्तिलाभ होती है और दर्शनकरने से पितर लोग अक्षय लोक प्राप्त करते हैं। उससे ४ दंड दूर सूर्यकुण्ड है, जिसमें स्नान करने से महापातकी मनुष्य भी मुक्ति पाता है। उससे एक वाण के अंतर पर पौष्पमाल तीर्थ है। उससे ६ दंड आगे इन्द्रद्युम्न का तप स्थान इन्द्रद्युम्न तीर्थ है। उसके आधे कोस की दूरी पर विल्वतीर्थ स्थित है, जहां महादेव जी सर्वदा निवास करते हैं। उस स्थान पर गंगा में स्नान करके १० दिन निवास करने से सिद्धि प्राप्त होती है। ये तीर्थ गंगा के ऊपरि भाग में है।

(दूसरा अध्याय) सतयुग में देवशर्मा नामक प्रसिद्ध मुनि हुआ; वह देवप्रयाग में जा कर विष्णुभगवान का तीव्रतप करने लगा। जब मुनि ने १० सहस्र वर्ष तक पत्ता खाकर और एक हजार वर्ष एक पाद से खड़ा रह कर उग्र तप किया, तब लक्ष्मीजी सहित विष्णु भगवान प्रकट हुए और बोले कि हे तपोधन; मैं प्रसन्न हूं तुम इच्छित वर मांगो। देवशर्मा बोला कि हे प्रभो! हमारी निश्चल प्रीति तुम्हारे चरणों में रहे; यह पवित्र क्षेत्र कलियुग में संपूर्ण पापों का नाश करनेवाला होय; तुम सर्वदा इस क्षेत्र में निवास करो और जो पुरुष इस क्षेत्र में तुम्हारा पूजन और संगम में स्नान करें उनको परम गति मिले। भगवान ने कहाकि हे मुनि! ऐसाही होगा। मैं त्रेता युगमें राजा दशरथ के पुत्र राम नाम से विख्यात होकर रावणादिक दैत्यों को मारूंगा और कुछ दिनों तक अयोध्या का राज्य भोग कर के इस स्थान पर आऊंगा; तब तक तुम इसी स्थान पर निवास करो; फिर हमारा दर्शन पा कर तुम परम गति पाओगे, तब से इस तीर्थ का नाम तुम्हारे नाम के अनुसार देवप्रयाग होगा। विष्णु भगवान के चलेजाने पर देवशर्मा उस स्थान में रहने लगा। विष्णु त्रेता युग में राजा दशरथ के गृह जन्म ले कर राम नाम से विख्यात हुए। उन्हो ने रावण वध करने के पश्चात् आकर देवशर्मा को दर्शन दिया और कहा कि हे मुनीश्वर! अब से यह तीर्थ लोक में प्रसिद्ध होगा। तुम को सायुज्य मुक्ति मिलेगी। ऐसा कह रामचंद्रजी ने सीता और लक्ष्मण के सहित उस स्थान पर रह गये।

(तीसरा अध्याय) ब्रह्माजी ने सृष्टि के आरंभ में दस सहस्र और दस सौ वर्ष समाधि निष्ट हो कर कठिन तप किया। तब विष्णु भगवान उस स्थान में प्रकट हुए और बोले कि हे ब्रह्मन्! वर मांगो। ब्रह्माजी ने कहा कि हे प्रभो! मुझ को जगत की सृष्टि करने की सामर्थ्य होय और यह स्थान पवित्र तीर्थ हो जाय। भगवान बोले कि तुम सृष्टि करने में समर्थ होगे; यद्यपि यह तीर्थ पवित्र है तिस परभी २८ वें मन्वंतर में जब राजा भगीरथ इस मार्ग से गंगाजी को ले जायगा तब से यह तीर्थ अति पवित्र हो जावेगा और इस स्थान का नाम ब्रह्मतीर्थ होगा।

(चौथा अध्याय) ब्रह्मतीर्थ के निकट महामति वशिष्ठजी ने निवास किया। जो मनुष्य वहां एक बार भी स्नान करता है वह किसी स्थान में मरे अवश्य ब्रह्म में लीन होगा।

(५ वां अध्याय) गंगा और शांता नदी के संगम के पास, जिसकी उत्पत्ति दशरथाचल से हुई है, शिव तीर्थ है, जहां श्रीरामचंद्रजी ने अनेक शिव लिंग स्थापन किये हैं। (६ वां अध्याय) शिव तीर्थ के ऊपर के मार्ग में वैतालकुंड के समीप वैताल की शिला है। वैतालकुंड में स्नान और शिला का स्पर्श कर के नारायण का ध्यान करने से सर्व यज्ञ, तीर्थ और दान करने का फल प्राप्त होता है। उस कुंड के प्रभाव से वड़े वड़े वैताल परमगति को पाए हैं। उस कुंड और शिलापर स्नान, दान और पितरों के पिंड दान करने से कोटि गुणा फल लाभ होता है।

(७ वां अध्याय) वैतालतीर्थ से ऊपर एक वाण की दूरी पर सूर्यतीर्थ है, जहां स्नान करने से मनुष्य कुष्ट रोग से विमुक्त हो जाता है। पूर्व काल में मेधातिथि नामक ब्राह्मण ने देवप्रयाग में जा कर सूर्य भगवान का तप किया था। सूर्य भगवान प्रगट हो कर उससे कहा कि वर मांगो। मेधातिथि बोले कि हे भगवान! तुम्हारे चरण में सदा मेरी भक्ति होय; तुम हमारे साथ यहां निवास करो; यह पवित्र कुंड हो और यह तीर्थ तीनोलोक में विख्यात हो जाय। सूर्य भगवान ने कहा कि ऐसाही होगा। तब से यह तीर्थ पवित्र और प्रसिद्ध हुआ। माघसुदी सप्तमी के दीन सूर्यकुंड में स्नान करनेवाला मनुष्य वहुत काल तक सूर्यलोक में निवास करके ब्राह्मण के गृह जन्म ले कर वेद वेदांग पारग होता है।

(८ वां अध्याय) वशिष्ठतीर्थ से ८० हाथ ऊपर वाराहतीर्थ है। सतयुग में सर्ववंधु नामक ब्राह्मण वाराह भगवान का वड़ा भक्त था। उसने देवप्रयाग में जा कर वाराह रूप विष्णु का वहुत काल तक तप किया। वाराहजी प्रकट हुए। सर्ववंधु ने यह वर मांगा कि हे भगवान! तुम नित्य हमारे साथ यहां निवास करो। भगवान बोले कि मैं सर्वदा इसतीर्थ में वास करता हूं। इस तीर्थ का नाम अवसे वाराहतीर्थ होगा। मैं गंगा में

शिला रूप से निवास करूंगा। जो मनुष्य इस कुंड में स्नान करेगा उसको सायुज्य मुक्ति मिलेगी। जो तृप्ति पितरोंको सहस्र वर्ष श्राद्ध करनेसे होती है वह तृप्ति केवल इस तीर्थ में तर्पण करने से होगी। ऐसा कह भगवान शिला रूप से गंगामें स्थित हुए। उन्हों ने अपने दोनों वगलों में शिवजी को स्थापित किया।

(१० वां अध्याय) महर्षि विश्वामित्र हिमवान पर्वत पर मानसरोवर के समीप उग्र तप करने लगे। इंद्रादिक देवताओं ने-उनके तप से व्याकुल हो कर ब्रह्माजी के आदेशानुसार तप में विघ्न डालने के लिये पुष्पमाला नामक किन्नरी को भेजा। वह अप्सराओं के साथ विश्वामित्र के निकट जा वीणा वजा कर गान करनें लगी। कामदेव अपने कुसुम वाण को विश्वामित्र पर छोड़ा। विश्वामित्र का ध्यान छूट गया। उसने अपने आगे खड़ी पुष्पमाला को देखा। ऋषि के पूछने पर उसने अपने आनेका सब वृतान्त कह सुनाया। मुनि ने शाप दिया कि तुम मकरी अर्थात् घड़ियाल की स्त्री हो जाओ। जव पुष्पमाला प्रार्थना करने लगी तव विश्वामित्रने कहा कि तुम देवप्रयाग में जाकर वहां कुछ काल निवास कर। जव त्रेतायुग में लक्ष्मण के सहित रामचंद्र वहां आवेंगे तव उनके दर्शन करने से तुम्हारे शाप का अंत होगा। पुष्पमाला देवप्रयाग में आकर गंगाजी में मकरी रूप से रहने लगी। त्रेतायुग में लक्ष्मण के सहित श्रीरामचंद्र आए। जव स्नान के लिये गंगा में प्रवेश करने पर मकरी उनको निगलने लगी तव उन्होंने उसका सिर काट डाला। उसी समय मकरी अपना शरीर छोड़ कर सुंदर स्त्री हो रामचंद्रजी की स्तुति करने लगी। भगवान वोले कि हे किन्नरी! तुम हमारे धाम में जाओ; आज से यह तीर्थ पौष्पमाल नाम से प्रसिद्ध होगा। यहां स्नान, दान, जप होम करने वालों पर मैं प्रसन्न हूंगा। इस स्थान पर पितरों के तर्पण करने से पितर लोग असंख्य वर्ष पर्यन्त स्वर्ग में निवास करेंगे। उसी समय वह किन्नरी शाप से विमुक्त हो कर विष्णुधाम को चली गई।

(११ वां अध्याय) जिस समय वामनजीनें अपने चरण से भूमंडल को नापा था उसी समय उनके चरण की अंगुली के नख से जल की धारा निकली। वह ध्रुव के मंडल तथा सप्तर्षि मंडल में होती हुई मेरु के शृङ्ग पर

ब्रह्मलोक में गिरी। वहां से वह धारा ४ भागों में विभक्त होकर पृथ्वी में आई और क्षार समुद्र में मिली। उनमें सीता नामक धारा गंधमादन के शिखर पर गिरी; भद्रा पूर्व दिशा में भद्राश्ववर्ष में गई; चक्षुनाम धारा माल्यवान के शिखर से पश्चिम दिशा में केतु माल पर्वत पर गई और अलक नंदा नामक धारा दक्षिण को बहतीं हुई हिमालय पर आई। यहां शिवजी ने उसको अपनी जटा में रखलिया। कुछ दिनों के उपरान्त राजा भगीरथ ने शिवजी को प्रसन्न करके अपने पितरों के उद्धार के लिये उनसे उस गंगा को मांगा। शिवजी ने गंगा को देदिया। गंगा हिमालय से नीचे के शृंग पर गिरी। उन के प्रबल वेग से शृंग दो भाग हो गया। इस कारण गंगा दो धारा हो कर भारतवर्ष में आई। उनमें से एक धारा अलकापुरी हो कर आई इसलिये उसका नाम अलकनंदा पड़ा। देवप्रयाग में आकर दोनों धारा फिर एक में मिल गईं। संगम से वाणजा नदी तक देव प्रयाग क्षेत्र है।

संगम के पूर्व भाग में गंगा के दक्षिण तट पर तुण्डीश्वर महादेव हैं। अलकनन्दा के किनारे एक पवित्र कुण्ड है, जिसके निकट तुण्डीभील ने बहुत काल तक शिव का तप किया था, जिससे शिवजी वहां तुण्डीश्वर नाम से स्थित होगए।

श्रीरामचन्द्र ने देवप्रयाग में जाकर विश्वेश्वर शिव की स्थापना की। उस से ऊपर क्षेत्रराज भैरव हैं। जो मनुष्य विश्वेश्वर के विना दर्शन किए हुए तीर्थ यात्रा करते हैं उसका संपूर्ण फल निष्फल होजाता है। क्षेत्रपाल भैरव का यथा विधि पूजन करके तब रामचन्द्र का दर्शन करना चाहिए।

रानीबागचट्टी

देवप्रयाग से आगे ½ मील झरने का पुल और एक बहुत छोटा सा मन्दिर; १½ मील बड़ा झरना का पुल; २½ मील गोविन्दकोठी; ३½ मील अलकनन्दा के दहिने पर्वत के ऊपर दो वस्ती; ४½ मील बड़े झरने का पुल; ५¼ मील पिहड़ी का झूला; ५½ मील एक छोटा झरना और एक साधु की झोपड़ी और ७¼ मील पर रानीबाग चट्टी है।

गोविन्दकोटी स्थान पर एक छोटे मन्दिर में गोविन्द जी की मूर्ति; मन्दिर के आगे पीतल की गरुड़ की प्रतिमा; मन्दिर के पास २ कोठरियां और एक झरना है।

गोविन्दकोठी से २१/४ मील आगे उस पार की ओर पांच सात छप्परों का एक छोटा गांव है। गांव वालों ने पार जानें के लिये रस्सों में पिहड़ी का झूला बनाया है। एक किनारे से दूसरे किनारे तक चार पांच रस्से लगे रहते हैं; उसमें मचिये के समान एक पिहड़ी लटकी रहती है। उस पर एक आदमी बैठजाता है। वह एक रस्से को खींचता हुआ और दूसरे को छोड़ता हुआ पार हो जाता है। और कोई चीज पिहड़ी पर रख कर रस्सो से एक किनारे से दूसरे किनारे तक लोग उसे खींच लेते हैं। इस झूले को उधर के लोग डीलू या डीढ़ा कहते हैं। उससे एक मील आगे तक अलकनन्दा के बाएं नीचा ऊंचा मैदान और दहिने खेती की जमीन और एक बस्ती हैं।

रानीबागचट्टी पर अच्छी अच्छी दुकानें, एक धर्मशाला और एक बाग था, जो सन् ९४ की बाढ़ मे बह गये। अब लकड़ी की बल्ली और फूस से दुकानें बनी हैं। वहां अलकनन्दा और झरना का पानी मिलता है और ठंढी और मनोहर झाडियां हैं, जिनमें मुछाली नामक एक छोटी बस्ती देखने में आती है।

रानीबागचट्टी से आगे ११/२ मील पर एक झरना, अलकनन्दा के किनारे थोड़ा खेती का मैदान, पानी के पास जाने की राह और पर्वत पर बहुतेरे लंगूर बन्दर दिखलाई देते हैं उससे आगे एक झरना, उससे आगे छोटे झरने का पुल, २ मील पर पिहड़ी का झूला और २१/४ मील पर रामपुर चट्टी है।

रामपुर चट्टी पर लकड़ी और फूस की बहुतसी दुकानें, थोड़ा जंगल का मैदान और एक खुला हुआ झरना और चट्टी के पास रामपुर बस्ती है।

रामपुर चट्टी से आगे ३ मील भगवानचट्टी और ४१/२मील भिल्लेश्वर महादेव का मन्दिर है।

भगवानचट्टी पर अनेक दुकान्दारों के मकान और झरने हैं। रामपुरचट्टी से भिल्लेश्वर तक अलकनन्दा के किनारों पर जगह जगह खेती का मैदान है। और नदी के किनारों पर तथा पर्वत के बगलों में बहुत पहाड़ी बस्तियां देखने में आती हैं।

भीलेश्वर ।

भीलेश्वर के मन्दिर मिलने से पहले ५२ फीट लम्बा काठ का पुल, जो खांड्व नदी पर बना है, लांघना होता है। यहां खांड्व नदी अलकनन्दा से मिलगई है। अलकनन्दा के बाएं किनारे पर गुम्मजदार छोटेमन्दिर में अनगढ़ भीलेश्वर शिव लिंग हैं। उन का ताम्बे का अर्घा और चांदी का छत्र बना है। पहला मन्दिर सन १८९४ की बाढ़ से वह गया अब नया मन्दिर बना है; शिवलिंग वही है। मन्दिर के निकट २ छोटी कोठरियां हैं। इसी स्थान पर भीलरूप धारी सदाशिव और अर्जुन का परस्पर युद्ध हुआ था।

ढुंढम् नामक एक छोटी नदी उस पार अर्थात अलकनन्दा के दहिने आकर उसी में मिली है, जिस पर एकही मेहराबी का पुल है। पुराणों में उस संगम का नाम ढुंढमयाग और उसके पास के पर्वत का नाम इन्द्रकील पर्वत लिखा है। उस स्थान पर एक नया शिव मन्दिर बना है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा— महाभारत— (वनपर्व— ३७ वां अध्याय) अर्जुन तपस्वियों से सेवित अनेक पर्वतों को देखते हुए हिमाचल पर्वत के इन्द्रकील नाम स्थान पर पहुंचे। उस स्थान पर तपस्वी के रूप में इन्द्र ने अर्जुन को दर्शन दिया और कहा कि हे तात। जब तुम शूलधारी, भूतों के स्वामी शिव का दर्शन करोगे तब हम तुमको सब शस्त्र देंगे। अब तुम परमेश्वर शिव के दर्शन का यत्न करो। उनके दर्शन होने से सिद्ध होकर स्वर्ग में जाओगे। इन्द्र के जाने पर अर्जुन वहीं बैठ कर योग करने लगे (३८वां अध्याय) अर्जुन का उग्र तप देख कर मुनीश्वरों ने महादेव के पास जाकर अर्जुन के तप की प्रशंसा की। (३९वां अध्याय) तपस्वियों के जाने पर सदा शिव किरात का भेष धारण करके महा मेघ की शिखा के समान शरीर बना कर धनुष बाण लिये हुये अपने समान भेष वाली पार्वती और अनेक भूतों के सहित किरात वेष धारिणी अनेक स्त्रियों को संग ले उस वन में जा पहुंचे।

उसी समय दनुका पुत्र मूक नामक राक्षस सूकर का भेष बना कर मारने की इच्छा से अर्जुन को देख रहा था। तब अर्जुन ने गांडीव धनुष लेकर उस

राक्षस से कहा कि मैं अभी तुम को यम के घर पहुचाता हूं। उस समय किरात रूपी महादेव ने अर्जुन से कहा कि पहले मैंने इसको मारने की इच्छा की है, तुम इस को मत मारो, परन्तु अर्जुन ने उनका निरादर कर सूअर पर वाण चलाया। उसी समय किरात भी सूअर को लक्ष कर के उसपर वाण चलाया। जब वह मर गया तवतो यह कह कर कि मेरे ही वाण से यह सूअर मरा है अर्जुन और किरात दोनों परस्पर वाद विवाद करने लगे। अनन्तर अर्जुन को महा क्रोध हुआ; वे वाणों से किरात को मारने लगे। किरात अर्जुन के वाणों को सहने लगा। उस के पश्चात वे दोनो परस्पर एक दूसरे को वाणों से विद्ध करने लगे। तब अर्जुन ने किरात पर वाणों की वर्षा की। किरात रूप धारी शिव प्रसन्न चित्त से वाणों की वर्षा को सहते हुए पर्वत के समान अचल हो खड़े रहे। उन के शरीर में कुछ भी घाव न लगा। यह देख अर्जुन को सन्देह हुआ कि यह शिव या कोई यक्ष, राक्षस अथवा देवता तो नही है। फिर कहा कि यदि यह शिव को छोड़ कर देवता या कोई यक्ष होगा तो अब मै इस को कठिन वाणों से मार कर यम के घर पहुचाऊंगा। ऐसा कह कर अर्जुन वाणों की वर्षा करने लगा। शिव उन वाणों को सहने लगे। जब क्षण भर में अर्जुन के वाण चुक गए तब उन्हों ने धनुष से किरात का गला फांस कर वज्र के समान मुक्कों से किरात को बहुत मारा। जब पर्वत के समान किरात ने इन के धनुष को भी ग्रास कर लिया, तवतो अर्जुन खड्ग से किरात के सिर में मारा, परन्तु उस के सिर में लगने से वह उत्तम खड्ग भी टूट गया। तब अर्जुन शिला और वृक्षों से मारने लगा; परन्तु किरात उनको भी सहने लगे। तब दोनों का परस्पर मुक्के का युद्ध होने लगा। अनन्तर महादेव जी ने अर्जुन के शरीर को पीड़ा दी और अपने तेज से उनका तेज खींच कर उनके चितको मोहित कर दिया। तब अर्जुन निश्चेष्ट होकर पृथ्वी में गिर पड़ा; स्वांस भी वन्द होगया, परन्तु क्षण मात्र के पीछे वह चैतन्य होकर उठा और शरण देने वाले भगवान शिव की शरण में गया। उस समय अर्जुन ने शिव की मट्टी की मूर्ति वना कर उस पर माला चढ़ाई। जब अर्जुन ने वही माला किरात के सिर पर देखा, तब वह किरात के चरणों पर गिर पड़ा। शिव अर्जुन के असाधारण

वीरता से प्रसन्न होकर पार्वती के सहित प्रकट हुए। अर्जुन ने शिव की बड़ी स्तुति की।

(४० वां अध्याय) शिव बोले हे अर्जुन! पूर्व जन्म में तुम नर नामक ऋषि थे। नारायण तुम्हारे साथी थे। बदरिकाश्रम में हजारों वर्ष तुम ने तपस्या की थी। तुम्ही दोनों से जगत स्थित है। पीछे शिव अर्जुन को पाशुपत अस्त्र और स्वर्ग जाने की आज्ञा देकर अन्तर्ध्यान हो गए। (यह कथा शिव पुराण में ज्ञानसंहिता के ६४ वें अध्याय से ६७ वें अध्याय तक है)।

स्कन्दपुराण—(केदार खंड उत्तर भाग ८ वां अध्याय) खांडव और गंगा अर्थात अलकनन्दा के संगम के समीप शिव प्रयाग है। उसी स्थान पर महर्षिखांडव ने सदा शिव का तप किया था। उस स्थान पर भक्ति पूर्वक स्नान करने वालों को ब्रह्म सायुज्य मिलता है। संगम में स्नान करके महादेव जी की आराधना करने से मनुष्य तीनों लोक में श्रेष्ठ होजाता है। उसी स्थान पर महादेव जी ने इन्द्र पुत्र अर्जुन को दर्शन दिया था।

युधिष्ठिर आदि पांडवगण दुर्योधन से द्यूत में हार कर १२ वर्ष के लिये वन में गए। सब लोग शोचने लगे कि हम लोग दुर्योधन को किस प्रकार से जीतेंगे। अर्जुन ने कहा कि यदि पाशुपत अस्त्र मिले तब हम लोग कौरवों पर विजय लाभ कर सकते हैं। इस के उपरांत वह वहां से अकेले चलकर हिमालय के एक देश में जाकर शिव का तप करने लगा। कुछ काल के पश्चात् शिवजी प्रसन्न होकर भीलरूप धारण कर हाथ में धनुष लिए हुए अनेक भीलों के साथ अर्जुन के निकट आए। उन्हों ने एक माया का मृग बना कर उसकी पीठ में बाण मारा। बाणो से बेधा हुआ मृग दूसरे वन में भाग चला। तब अर्जुन ने हंस कर अपने गांडीव धनुष पर बाण चढ़ा कर उससे मृग को मार डाला। भीलराज और अर्जुन दोनों मृग के निकट जाकर परस्पर विवाद करने लगे। भीलराज कहते थे कि मेरे बाण से मृग मरा है; इसको मैं लूंगा और अर्जुन कहते थे कि मेरे बाण से मरा है यह हमारा है। अर्जुन ने भीलराज पर बाण छोड़ा। वह उन के शरीर में लग कर चूर हो भूमि पर गिर पड़ा। तब वह शिव के

साथ के दूसरे किरातों को अपने वाणों से मारने लगे। उस समय पर्वत से असंख्य किरात आकर पाषाण, लाठी और अनेक प्रकार के शस्त्रों से अर्जुन को मारने लगे। अर्जुन ने अपने वाणों से सैकड़ों भीलों को पृथ्वी पर गिरा दिया। वहुतेरे भील पर्वत पर भाग गए। तव वह भीलराज पर वाण वृष्टि करने लगे; किंतु उनके संपूर्ण वाण भीलराज के शरीर में लग कर चूर चूर हो पृथ्वी में गिर पड़े। उस के पश्चात् अर्जुन ने धनुष से भीलराज के मस्तक में मारा। उससे भी भीलराज को चोट नहीं लगी। वह अर्जुन को देख कर वार वार हंसने लगे। तव अर्जुन लज्जित हो युद्ध परित्याग करके मुनियों के तपस्थल में जाकर भीलराज को परास्त करने के लिये सदाशिव की आराधना करनें लगे। उस समय इन्द्रकील पर्वत के कटि भाग में किरातों का वड़ा किलकिला शब्द सुन पड़ा। तभी से उस स्थान पर किलकिलेश्वर महादेव प्रसिद्ध हो गए। भीलराज भीलों को साथ लिये हुए अर्जुन के तपस्थल में पहुंचे। भीलराज और अर्जुन का रोम हर्षणयुद्ध होने लगा। भीलराज ने अर्जुन को पछाड़ दिया। तव अर्जुन दुखित हो शिव शिव कहने लगे। जव उन्हों ने अपनी चढ़ाई हुई पूजा की सव सामग्री भीलराज के मस्तक पर देखी; तव उनको शिव जान कर स्तुति करने लगें। सदाशिव वोले कि हे वत्स! मैं तुझ पर प्रसन्न हूँ तुम इच्छित वर मांगो। अर्जुन ने कहा कि तुम अपना अस्त्र दो जिससे मैं अपने शत्रुओं को जीतूँ। महादेव जी ने अर्जुन को मंत्र के सहित पाशुपत अस्त्र दिया और कहा कि हे धनंजय! तुम इस से शत्रुओं को जीतो गे; यह स्थान तुम्हारे तप से पवित्र होगया। जो प्राणी सात रात्रि इस स्थान में मेरा पूजन करेगा उसको परम सिद्धि प्राप्त होगी। ऐसा कह महादेव जी अंतर्ध्यान होगए। उसी समय से वहां भीलेश्वर महादेव प्रख्यात हुए, जिन का दर्शन, ध्यान तथा नामोच्चारण करने से महापातकी जीव भी सद्यः शुद्ध हो जाताहै। अर्जुन शिव जी से पाशुपत अस्त्र पाकर वहां से चलेगए।

(६ वां अध्याय) गंगा और खांडव नदी के संगम से आधे कोस पर कालिका नदी का संगम है, जिस में स्नान करने से १०० यज्ञ करने का फल मिलता है। उससे १ कोस दूर करि पर्वतपर करि नामक भैरव हैं। उससे

आधे कोस पर वत्सजानामक नदी खांडव में मिली है। संगम से ऊपर सिर स्फूट स्थान पर नारायणी नदी का संगम और नारायणी के संगम से २ कोस दूर राजिका नदी का संगम है।

गंगा के उत्तर तीर पर ढुंढ प्रयाग तीर्थ है। पूर्व काल में ढुंढी ने ५ हजार ५ सौ वर्ष तक पत्ता भोजन करके तप किया था ; तभी से वह स्थान ढुंढप्रयाग करके प्रसिद्ध हो गया। जो मनुष्य सोमवती अमावस को उस तीर्थ में स्नान करता है, उस को सब पुण्य और संपूर्ण यज्ञ करने का फल लाभ होता है। वहां सूर्य और चंद्रग्रहण में स्नान करने से मनुष्य लोक में धन्य हो जाता है। शिवप्रयाग से पूर्व गंगाके दक्षिण तट पर एक वाण के अंतर में शिव कुंड तीर्थ है, जहां शिव जी जल में निवास करते हैं।

(१४ वां अध्याय) राजराजेश्वरी पीठ से कोस के अष्टांश भाग पर मनोहरी नामक पवित्र नदी है। उस से ४ वाण ऊपर वेत्रवती नदी, वेत्रवती से ५ वाण ऊपर मधुमती नदी, मधुमती से ४ वाण ऊपर मनोन्मती नदी, मनोन्मती से २ वाण ऊपर किलकिलेश्वर महादेव और किलकिलेश्वर से ऊपर जीवंती नामक नदी है। जीवंती नदी के ऊपर उत्तर दिशा में सब कामना को देने वाला इन्द्र कील पर्वत है। पूर्व काल में उस स्थान पर दुष्ट दैत्योंके द्वारा इन्द्रकीले गएथे, (अर्थात दैत्यों के भय से वहां छिप कर रहे) इस लिये उस पर्वत का नाम इन्द्रकील होगया। (श्रीनगर की प्राचीन कथा देखो) पर्वत के शृंग पर कपिल नामक शिव लिंग है।

श्रीनगर।

भीलेश्वर से १ मील आगे अलकनन्दा पर लोहे का लटकाऊं पुल है। अलकनन्दा के दहिने किनारे पर पुल के निकट टिहरी के वर्तमान नरेश महाराज कीर्तिशाह की वसाई हुई नई बाजार और नई वस्ती है। उस पुल के पास से एक रास्ता पश्चिमोत्तर टिहरी को, दूसरा रास्ता पूर्व-दक्षिण पौड़ी को और तीसरा मार्ग पश्चिम-दक्षिण टिहरी के राज्य में अलकनन्दा के दहिने किनारे होकर देवप्रयाग को गया है।

भीलेश्वर के मन्दिर के ½ मील आगे से अलकनन्दा और पर्वत के बीच में १ मील लंबा वालू का मैदान होगया है। अलकनन्दा के किनारे पक्का घाट कई धर्मशाले, टिहरी के राजा का पुराना मकान, काठ और पत्थर से बना हुआ श्रीनगर का बाजार और बहुतेरे देवमन्दिर थे, जिन में से बहुतेरे सन १८९४ की बाढ़ मे बह गए और बहुतेरे वालू मे दब गए। टूटे हुए अथवा वालू मे गड़े हुए कई मन्दिर देख पड़ते हैं। उस समय श्रीनगर में ४२ फीट ऊंचा पानी बढ़ा था। अलकनन्दा में अर्जुनशिला नामक एक चट्टान और उस के किनारों पर अनेक पवित्र स्थान और वालू के मैदान के दोनों तरफ पर्वत पर अनेक वस्तियां हैं।

वालू के मैदान के वाद कमलेश्वर महादेव का मन्दिर मिलता है। १२ खंभो की गुम्मजदार वारहदरी के भीतर ६ पहल वाला गुम्मजदार एक छोटा मन्दिर है। प्रत्येक पहल में एक जालीदार किवाड़ लगी है, जिस के भीतर कमलेश्वर महादेव का खण्डित लिंग है। मन्दिर के आगे पीतल से जड़ा हुआ वड़ा नन्दी, चारो ओर मकान और एक कोने पर ऊंचा घंटा घर है। यह मन्दिर ऊंची जमीन पर है इस लिये बाढ़ के समय बहने से बच गया। कार्तिक शुक्ल १४ को यहां मेला होता है। बहुतेरे लोग रात भर दीपक जलाते हैं। कमलेश्वर के अलावे श्रीनगर में किलकेश्वर, नागेश्वर और अष्टावक्र महादेव तथा राजराजेश्वरी भगवती के मन्दिर हैं।

कमलेश्वर के मन्दिर से ½ मील से अधिक पूर्वोत्तर देवप्रयाग से १८ मील, हृषीकेश से ६०¼ मील और हरिद्वार से ७२¼ मील दूर अलकनन्दा के किनारे ऊंची जमीन पर नया श्रीनगर बसा है। वहां अलकनन्दा और पर्वत के बीच में चौरस मैदान है, जिस के बीच में चौड़ी सड़क के बगलों पर दो मंजिले पक्के मकान बने हुए हैं और अब भी बन रहे हैं। वहां कपड़े, वर्तन, कम्बल, जूते, मेवे, विसाती की चीजें, मोमबत्ती, छाता, कस्तूरी आदि पर्वती चीजें, मसाले आदि सब वस्तु मिलती हैं। नोट बाजार में बिक सक्ता है नाई और धोवी भी वहां रहते हैं। वहां एक बड़ा अस्पताल, जिसमें गरीब रोगियों को सरकार से खाना और उसमें रहने की जगह मिलती हैं; पुलिस

की चौकी; एक धर्मशाला और डाकखाना है। वहां तक तार भी बन गया है। यहां आम के बहुत वृक्ष देखने में आते हैं और बैल गाड़ी भी चलती हैं। श्रीनगर की नई बस्ती के पास अलकनन्दा के करारे के नीचे एक झरना है। पानी अलकनन्दा और झरना का मिलता है। श्रीनगर गढ़वाल जिले में अलकनन्दा के बाएं किनारे पर उस जिले में सब से बड़ा कसबा है। सन १८८१ की जन-संख्या के समय उस में २१०० मनुष्य थे। वह एक समय गढ़वाल के राजाओं की राजधानी था। नजीबाबाद से श्रीनगर में माल और जिन्स भेड़, बकरे और खच्चरों पर लाद कर जाती है।

बहुत लोग श्रीनगर से टिहरी होकर, जो वहां से २८ मील है, गंगोत्तरी जाते हैं। टिहरी से ९६ मील गंगोत्तरी है (हृषीकेश के वृतांत में देखो)।

श्रीनगर से एक मार्ग पौड़ी होकर नजीबाबाद को और दूसरा टिहरी राजधानी होकर सहारनपुर को गया है। उन दोनों का वृतांत नीचे है।

श्रीनगर से पौड़ी होकर नजीबाबाद का मार्ग। श्रीनगर से फासिला;— मील, टिकने का स्थान।

७ पौड़ी।
१७ अधवानी।
२९ बागघाट।
४१ डाडा मण्डी।
५३ कोटद्वार।
६८ नजीबाबाद (रेलवे ष्टेशन)।

इन सब जगहों में धर्मशालाएं बनी हैं और दुकानों पर सब चीजें मिल सकती हैं। पौड़ी और कोटद्वार में तार घर है। कोटद्वार में पुलिस का थाना और अस्पताल है। कोटद्वार से नजीबाबाद तक बैल गाड़ी की सड़क है। कुछ यात्री नजीबाबाद से श्रीनगर आकर के केदारनाथ और बदरीनाथ जाते हैं।

श्रीनगर से टिहरी होकर सहारनपुर का मार्ग। श्रीनगर से फासिला;— मील, टिकने का स्थान।

५ मलेथा।
७ डांगचौरा।
११ तिलोकी।
१४ डालंगी।
१८ पौ।
२८ टिहरी।
३७ कौड़िया।
४१ कानाताल।

४४ कदूखाल।
४९ धनौल्टी।
६१ लधौरा।
६७ राजपुर।
७३ मंसूरी।
७९ देहरादून।
८६ असरोरी।
९३ मोहन।
१०६ फतेहपुर।
१२१ सहारनपुर (रेलवे स्टेशन)।

इन सब जगहों में बनियें की दुकानें और पानी मिलता है। डांगचौरा, पौ, टिहरी, कौड़िया, धनौल्टी, लन्धौरा, राजपुर, मंसूरी और देहरादून में डाक बंगले हैं। देहरादून से सहारनपुर तक शिकरम जाती है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—स्कंद पुराण—(केदारखंड, उत्तर भाग, पहला अध्याय) श्रीक्षेत्र (अर्थात् श्रीनगर) का स्थूल रूप कोलोत्तमांग से कोल कलेवर तक चार योजन लंबा और तीन योजन चौड़ा; सूक्ष्म रूप जीवनेंद्रपुर से बरसवता नदी तक और अति सूक्ष्म रूप खांडव नदी से शितिपुर तक है। श्रीक्षेत्र में देवता लोग सर्वदा निवास करते हैं। वहां मृत्यु होने से जन्म मरण का बंधन छूट जाता है। वहां भगवान शंकर शिवा के सहित सर्वदा विद्यमान रहते हैं। पूर्वकाल में तारकासुर ने इन्द्रादिक देवताओं को स्वर्ग से निकाल दियाथा, तब वे लोग संपूर्ण पृथ्वी में भ्रमण करके केदारेश्वर क्षेत्र में, जहां तारकासुर का भय नहीं था, आए। इन्द्र ने इन्द्रकील पर्वत पर निवास किया। उसके दक्षिण भाग में कीनाश पर्वत पर यमराज ने अपना गृह बनाया। इसी प्रकार से संपूर्ण देवता उसके आस पास अपना अपना निवासस्थान बना कर रहने लगे। कितने युगों के उपरांत वे लोग शिव की आराधना करके स्वामकार्तिक को पाकर फिर स्वर्ग में आए और स्वामकार्तिक को सेनापति बनाकर असुरों को परास्त करके अपने अपने स्थानों को फिर पागए।

(दूसरा अध्याय) राजा धर्मनेत्र ने उत्फालक मुनि से पूछा कि श्रीक्षेत्र की उत्पत्ति किस भांति हुई। मुनि कहने लगे कि सतयुग में सत्यकेतु नामक प्रतापी राजा हुआ। वह बहुत काल राज्य करने के उपरांत अपने पुत्र सत्यसंध को राज्य देकर इन्द्रकील पर्वत पर गया और गुहा में समाधि लगा कर

होकर तप करने लगा। उसके पश्चात् राजा का शत्रु कोलासुर आया। राजा सत्यसंध घोड़े पर सवार हो नगर से बाहर निकला। गंगा के उत्तर तीर एक योजन की दूरी पर कुबेर पर्वत के दक्षिण भाग में राजा सत्यसंध और कोलासुर का रोमहर्षण युद्ध होने लगा। बहुत काल तक युद्ध होने के उपरांत आकाश वाणी हुई कि हे सत्यसंध! तुम उत्फालक क्षेत्र के ऊपर के भाग में २ बाण के दूर पर गंगा के दक्षिण तीर में भगवती की आराधना करो; उनके प्रसाद से तुम कोलासुर को मार सकोगे। ऐसा सुन राजा सत्यसंध उस स्थान पर गया और एक शिला पर भगवती का यंत्र लिख कर पूजा करने लगा। एकसौ वर्ष राजा के तप करने के उपरांत भगवती ने राजा को दर्शन दिया। राजा ने दंडवत करके जगदम्बा की स्तुति की। भगवती बोली कि हे राजन्! मैं प्रसन्न हूं तुम मुझ से इच्छित वर मांगो। सत्यसंध ने कहा कि हे जगदम्ब! कोलासुर हमारे हाथ से माराजाय; इस पवित्र क्षेत्र को तुम कभी न त्याग करो और इस क्षेत्र में जो कुछ कर्म किया जाय उसका फल कोटिन गुणा होवे। भगवती बोली कि हे सत्यसंध! तुम्हारे हाथ से कोलासुर का वध होगा; यह क्षेत्र श्रीक्षेत्र के नाम से प्रसिद्ध होगा; यह क्षेत्र संपूर्ण पापों का नाश करने वाला और यहां मृत्यु होने वालों को मुक्ति देने वाला होगा। जो मनुष्य इस क्षेत्र में हमारा पूजन करेगा वह थोड़ेही दिनों में हमारे समान समर्थ होजायगा। मैं शिवजी के इस क्षेत्र में सर्वदा निवास करती हूं। इस स्थान से आधे कोस की दूर पर गंगा के उत्तर तीर में मैं राजराजेश्वरी के नाम से प्रसिद्ध हूं। पूर्व समय में राजराज (कुबेर) ने वहां मेरी आराधना की थी तब से मैं वहां निवास करती हूं। जब कुबेर मेरी आराधना करके संपूर्ण संपत्ति का स्वामी होगया. तब उसने ३० करोड़ सुवर्ण की वेदी बनाकर उसपर मुझे स्थापित किया; तभी से मेरा नाम राजराजेश्वरी करके प्रख्यात हुआ। ऐसा कहकर देवी अंतर्ध्यान होगई। राजा सत्यसंध रण-भूमि में जाकर फिर कोलासुर से युद्ध करने लगा। उसने बड़ा युद्ध होने के उपरांत कोलासुर का सिर काटडाला और उसके सिर और रुण्ड को अलगअलग फेंक दिया। नैऋत्य दिशा में १ योजन पर कोलासुर का सिर और पूर्व भाग में

३ योजन पर उसका रुण्ड जागिरा। यही ४ योजन लम्बा और ३ योजन चौड़ा श्रीक्षेत्र (अर्थात् श्रीनगर) का प्रमाण हुआ। अवतक भी उसके सिर का स्थान कोलसिर करके प्रसिद्ध है और उसके रुण्ड के देश में कोल नामक पर्वत है। इनके मध्य में जो प्राणी शरीर त्याग करता है, उसको शिव लोक प्राप्त होता है।

(तीसरा अध्याय) कोलासुर के सिर के भाग में मेनका नदी के समीप मेनकेश्वर महादेव हैं। नदी में स्नान करके शिव की पूजा करने से संपूर्ण मनोरथ सुफल होता है। उससे १ कोस दूर देवतीर्थ में भुक्कुटेश्वर महादेव स्थित हैं। उस स्थान पर सूर्य, चंद्र और अग्नि नामक ३ धारा देखने में आती हैं। गंगा के उत्तर तीर पर श्यामलानदी वहती है। संगम के निकट शिव-तीर्थ में शिवप्रयाग प्रसिद्ध है, जिसमें स्नान करने से वहुत फल लाभ होता है। उससे १ कोस दूर गजवतीधारा; गजवती से आधे कोस पर गंगा के दक्षिण तट पर पुष्पदंतिका नदी और पुष्पदंतिका से एक वाण दूर गंगा के निकट भानुमती शिला है, जिसके स्पर्श करने से सौन्दर्य्य प्राप्त होता है। अलकनंदा के समीप इन्द्रप्रयाग है। उसी स्थान पर राज्य भ्रष्ट इन्द्र ने तप करके फिर अपना राज्य पाया। उस स्थान से २ वाण पर दृपद्वती नदी, दृपद्वती से आधे कोस पर अहिकंडिका नदी, उससे २ कोस दूर पर्वत के ऊपर कंडिकादेवी हैं। गंगा के उत्तर किनारे पर शक्तिजा नदी के तट में गणेश्वर महादेव; गणेश्वर से आधे कोस पर श्मशान वासिनीदेवी; उससे १ कोस दूर शंखवती और शक्तिजा का संगम और उस स्थान से उत्तर शक्तिजा के पश्चिम के तीर से आधे कोस पर महादेव का मंदिर है। उसी स्थान में सोमवंशीय राजा नहुष ने कठोर तप करके इन्द्र का राज्य पाया था। उससे ऊपर दो कोस प्रमाण का देवीपीठ है। शक्तिजा के संगम के ऊपर गंगा के दक्षिण तट पर उपेंद्रा नदी का संगम है। उसके ऊपर ४ वाण पर इन्द्र का स्थापित किया हुआ कंदुकेश्वर भैरव हैं।

(८ वां अध्याय) खाण्डव नदी और गंगा के संगम के निकट शिवप्रयाग है, (भीलेश्वर की कथा में देखो) (९ वां अध्याय) धनुष तीर्थ से २ वाण की दूर पर भैरवी तीर्थ में अनेक नाम की भैरवी रहती हैं। उसके दक्षिण

भाग में २८ धनुष पर भैरवी पीठ है। पूर्व काल में सत्यसंध नामक राजा ने उस स्थान पर देवी का पूजन किया था, तब से वहां देवीजी स्थित होगई। गंगा के उत्तर तीर पर कौबेर कुण्ड है; उसी स्थान पर कुबेर ने देवी की अराधना की थी।

(१० वां अध्याय) श्रीक्षेत्र में चामुण्डा पीठ, भैरवी पीठ, कांसमर्दिनी पीठ, गौरीपीठ, महिष मर्दिनीपीठ और राजराजेश्वरी पीठ सद्यः प्रभाव को देखलाने वाले हैं। राजराजेश्वरी पीठ और भैरवीपीठ तो मैं कह चुका अब चामुण्डा पीठ की उत्पत्ति की कथा सुनो।

पूर्व काल में शुम्भ और निशुम्भ दैत्यों ने संपूर्ण देवताओं के अधिकार को छीन लिया था। तब देवताओं ने हिमवान पर्वत पर जाकर पार्वती जी की प्रार्थना की। भगवती पार्वती ने कहा कि तुम सब निर्भय होकर रहो मैं शुम्भ और निशुम्भ को मारूंगी। सब देवता जाकर अपने अपने स्थान में रहने लगे। उसके अनन्तर किसी काल में शुम्भ और निशुम्भ के कर्मचारी चंड और मुण्ड ने देवी को गंगा में स्नान करते हुए देख कर उनके रूप से मोहित हो शुम्भ और निशुम्भ के निकट जाकर उनके रूप का वर्णन किया। शुंभ निशुंभ ने सुग्रीव नामक दूत को देवी के पास भेजा। उसने हिमालय में जाकर भगवती से कहा कि शुम्भ और निशुम्भ दैत्यों का राजा है; यदि तू अपना कल्याण चाहती हो तो उसकी पत्नी बनो। ऐसा नहीं करोगी तो वह तुझ को बलात्कार से लेजायगा। भगवती बोली कि हे दूत ? तुम उससे कहो कि जो मुझ को संग्राम में जीतेगा वही हमारा पाणिग्रहण करेगा। सुग्रीव ने शुंभ और निशुंभ के निकट आकर देवी का वचन कह सुनाया। (११ वां अध्याय) दैत्यराज की आज्ञा से धूम्रलोचन दैत्य चतुरंगिनी सेना लेकर हिमालय पर आ भगवती से बोला कि अब मैं तुझ को बांध कर ले जाऊंगा। देवी जी ने क्रोध कर के अपने हुंकारही से उसको भस्म कर दिया। शुम्भ ने धूम्रलोचन की मृत्यु सुन कर बड़ी भारी सेना के साथ चंड और मुण्ड दैत्यों को भेजा। दैत्य की भयंकर सेना देवी के पास आकर नाना प्रकार के अस्त्र शस्त्र चलाने लगी। उस समय इन्द्रादिक देवताओं की किरोड़ो सेना भगवती की सहायता के लिये वहां आकर उपस्थित हुई। देवता और राक्षसों का रोमहर्षण संग्राम

होने लगा। जब चंड और मुण्ड देवीजी के सन्मुख गए, तब क्रोध के मारे अंबिका का मुख श्याम वर्ण हो गया। उस समय उनके ललाट से अपने हाथों में तुरन्त का कटा हुआ सिर, खड्ग, चर्म, भाला, शक्ति, पास, धनुष, बाण, इत्यादि अस्त्र शस्त्र लिए हुए शिवा प्रकट होगई। वह दैत्यों का मर्दन करने लगी। कितने दैत्य उनके महानाद से नष्ट होगए; कितने उनकी दृष्टि से मूर्छित हुए; कितनों को उन्हों ने मार डाला। उसके पश्चात उन्होंने अपने खड्ग से चंड का सिर काट डाला और उसके उपरांत मुंड के कंठ को अपने चरण से दबा कर खड्ग से काट लिया। वह दोनों दैत्यों के सिर लेकर भगवती के समीप आई। भगवती अति प्रसन्न हो बोली कि हे काली! तुमने चंड और मुंड को मारा इस कारण से तुम अब से लोक में चामुंडा करके प्रसिद्ध होगी। उसके पश्चात चामुण्डा ने दोनों दैत्यों के सिरों को फेंक दिया। श्रीक्षेत्र में ४ वाण की दूर पर गंगा के उत्तर तीर पर ब्रह्मकुण्ड के निकट मुण्ड का सिर और ४ वाण की दूरी पर गंगा के दक्षिण किनारे पर चंड का सिर जा गिरा। चामुण्डा उसी क्षेत्र में निवास करने लगी।

(१२ वां अध्याय) श्री क्षेत्र में माहेश्वरपीठ, कमलेश्वर-पीठ, नागेश्वरपीठ, कटकेश्वरपीठ, और कोटीश्वरपीठ संपूर्ण सिद्धि को देने वाले हैं। भैरवी तीर्थ से उर्द्ध भाग में २ वाण पर गंगा जी के दक्षिण तट में ब्रह्मा, विष्णु, और महेश्वर ये तीनों देवता शिलारूप से स्थित हैं। प्रत्येक शिलाओं के नीचे उन्हीं नामों से प्रसिद्ध एक एक कुंड है।

कमलेश्वर की उत्पत्ति इस भांति हुई कि एक समय काशी के रहने वाले ब्रह्मदेव ब्राह्मण ने इस तीर्थ में आकर ५ सहस्र ५ सौ वर्ष पर्यन्त शिवजी का तप किया। तब भगवान शंकर प्रसन्न हुए। उस समय वहां की पृथ्वी फट गई; उस के छिद्र से मणियों का समूह निकला। वह अर्द्धरात्रि का समय था; किंतु उनके प्रकाश से मध्यान्ह सा हो गया। उन मणियों में मरकतमणि का शिव लिंग देख पड़ा। उसी समय शिलह नामक मुनि वहां आ गए। वह बोले कि हे विप्र! तुम धन्य हो कि तुम्हारे तप के प्रभाव से यह लिंग प्रकट हुआ। उस समय ब्रह्मदेव और शिलह मुनि ने बहुतेरे मुनियों को बुला कर उस

लिंग का अभिषेक करवाया। महादेव शिल्हेश्वर नाम से प्रसिद्ध हुए। शिल्ह मुनि शिवलोक में गये। उस के पीछे किसी समय श्रीरामचन्द्रजी नित्य १०० कमलों से शिव की पूजा करते थे। तभी से वह लिंग कमलेश्वर नाम से प्रख्यात हो गया। वन्हिपर्वत के नीचे के भाग में ४ वाण पर कमलेश्वर महादेव हैं। उन से ऊपर एक वाण पर विष्णु तीर्थ और विष्णु तीर्थ से १ कोस की दूरी पर गंगा के दक्षिण तट में नागेश्वर महादेव हैं, जहां पूर्व काल में नागों ने शिव का तप किया था। कटकवती के संगम से आधे कोस पर कटकेश्वर महादेव हैं। शिवजी के साथ क्रीडा करते हुए पार्वतीजी का कटक अर्थात कर्णभूषण गिर गया इस लिये शिव का नाम कटकेश्वर पड़ा।

(१३ वां अध्याय) कमलेश्वरपीठ से ऊपर दक्षिण दिशा में वन्हि पर्वत है, जहां अग्नि ने शिव जी का तप करके संपूर्ण इच्छित फल पाया था। तभी से वह सब देवताओं का मुख हो गया। वन्हि पर्वत के नीचे वन्हि धारा और वन्हिधारा के ऊपर वन्हि पर्वत के मध्य में अष्टावक्रमुनि का पवित्र तपस्थल है।

(१८ वां अध्याय) कंस को मारने वाली देवी श्रीक्षेत्र में कंसमर्दिनी नाम से निवास करती है। गंगा के दक्षिण तीर पर श्रीशिला है। गंगा के ॥ कोस पर चैत्रवती नदी के पश्चिम भाग में चारो ओर एक एक कोस के प्रमाण से पुण्यक्षेत्र गौरीपीठ है, जहां ब्रह्मादिक देवताओं ने परम सिद्धि पाई है। रत्नद्वीप के रहने वाले शशविन्दु के पुत्र राजा देवल ने इस स्थान में गौरी का स्थापन किया था; तभी से यह महापीठ हो गया। गौरी के निकट महिष-मर्दिनी देवी है, उसी स्थान में कालिका देवी का परम पावनपीठ है। प्रथम कालिका का पूजन करना चाहिए।

पौड़ी

श्रीनगर से ७ मील पूर्व-दक्षिण गढ़वाल जिले का सदर स्थान पौड़ी एक पहाड़ी वस्ती है। वह समुद्र के जल से लगभग ५००० फीट ऊपर स्थित है। यहां का जल वायु स्वास्थ्य कर है। वहां गढ़वाल जिले का प्रधान हाकिम डिपुटी कमिश्नर रहते हैं।

टिहरी

श्रीनगर से ३२ मील पश्चिमोत्तर गंगा के बाएं किनारे पर पश्चिमोत्तर देश के गढ़वाल जिले में एक देशी राज्य की राजधानी टिहरी है। टिहरी से उत्तर एक रास्ता उत्तरकाशी और भटवारी होकर गंगोत्तरी को और दक्षिण दूसरा रास्ता राजपुर, मंसूरी, देहरादून और हृषीकेश होकर हरिद्वार को गई है। टिहरी राजधानी की आबादी सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय लगभग १८००० थी। वर्तमान राजा की माता ने सन १८४९ में भागीरथी की धारा के समीप बदरीनाथजी का सुन्दर मन्दिर बनवाया, जहां बड़ा उत्सव होता है।

टिहरी राज्य का क्षेत्र फल ४१८० वर्ग मील और इसकी आबादी सन् १८९१ के अनुसार २४०८८९ और मालगुजारी १४२००० रुपये हैं। यह राज्य अंगरेजी गढ़वाल जिले के पश्चिम हिमालय के दक्षिण ढालू भूमि पर है। इसमें ऊंचे पहाड़ों का एक बड़ा सिलसिला, जिसमें कई खाड़ियां हैं, देख पड़ती हैं। अंगरेजी राज्य और टिहरी राज्य की सीमा पर गंगा अलकनन्दा और मंदाकिनी नदियां बहती हैं। राज्य का बड़ा हिस्सा कीमती जंगल से भरा हुआ है।

टिहरी के राजवंश क्षत्री है। चांदपुर के राजा अजयपाल ने छोटे छोटे राजाओं को अपने अधिकार में करके गढ़वाल राज्य को नियत किया और श्रीनगर को अपनी राजधानी बनाया। उसके वंश वाले, जो चांद घराने के नाम से प्रसिद्ध हैं, सन ई० की उन्नीसवीं शदी के आरंभ तक मुगल बादशाहों को थोड़ा खिराज देकर संपूर्ण गढ़वाल में राज्य करते थे। गोरखे लोग सन् १८०३ ई० में चांद घराने के राजा मानशाह को जीत कर गढ़वाल पर राज्य करने लगे। सन् १८१५ ई० में अंगरेजी सरकार ने गोरखों को परास्त करके गढ़वाल के अलकनन्दा की घाटी का देश, जो अब अंगरेजी राज्य का गढ़वाल जिला बना है, अपने राज्य में मिला लिया और शेष राज्य राजा मानशाह के पुत्र राजा सुदर्शनशाह को दे दिया। सुदर्शनशाह के पुत्र राजा भगवानशाह, और भगवानशाह के पुत्र राजा प्रतापशाह हुए। राजा प्रतापशाह

के पुत्र टिहरी के वर्तमान नरेश १८—२० वर्ष की अवस्था के महाराज कीर्ति-शाह हैं। टिहरी राजवंश के साथ नेपाल राजवंश का विवाह होता है। बदरीनाथ के मंदिर का प्रबंध पहले टिहरी के राजा लोग करते थे और वे लोग श्रीनगर में रहते थे; उस समय यात्रीलोग उनका दर्शन करते थे। अब तो कई वर्षों से बदरीनाथ के मंदिर का प्रबंध अंगरेजी सरकार के अधीन है।

रुद्रप्रयाग

भट्टीसेरा चट्टी—श्रीनगर से आगे २ मील पर श्रीकोट बस्ती; ३ मील पर झरना का पुल, और डाक ढोने वालों की कोठरी; अलकनन्दा के उस पार ४ मील पर एक बस्ती; ४½ मील पर एक ढोके में गुफा; ५ मील पर सुकृतीचट्टी में एक कोठरी, दूध की दुकान, एक झरना और एक गुफा; ६½ मील पर बड़े झरने का पुल; ७½ मील पर १ बस्ती और ८½ मील पर भट्टीसेराचट्टी है।

भट्टीसेराचट्टी पर—खुला हुआ एक बड़ा झरना और आठ दस छप्पर के, मोदियों के नए मकानात हैं।

श्रीनगर से यहां तक मार्ग सुगम है और जगह जगह खेत के मैदान देख पड़ते हैं। सुकृतीचट्टी के कुछ आगे से पुरानी सड़क, जिस पर कल्याणचट्टी थी, बाढ़ से बह गई है। उस के सामने नदी के पार द्रौपदी शिला है।

भट्टीसेरा से आगे १½ मील पर छान्तीखाल नामक एक छोटी चट्टी और एक बहुत छोटा झरना, २½ मील पर एक गफा और ३ मील पर खांकरा चट्टी है।

खांकराचट्टी—यहां झरने के ऊपर बल्लों से पाटा हुआ १ पुल और झरने के दोनों ओर छप्पर के मकानात हैं। भट्टीसेरा से १½ मील की कठिन चढ़ाई पड़ती है।

खांकराचट्टी से आगे ३ मील पर नरकोटा नामक एक छोटी चट्टी और एक बड़ा झरना और ५½ मील गुलाबराय चट्टी है।

गुलाबरायचट्टी—यहां पांच छः पक्की दुकानें, एक झरना, थोड़ा सा मैदान और केलों की झाड़ हैं।

खांकरा चट्टी से एक मील कड़ी चढ़ाई के पीछे एक शिखर से बहुत नीचे अलकनन्दा देख पड़ती हैं। नरकोटा चट्टी तक २ मील उतराई है। नरकोटा से आगे १ मील की चढ़ाई पर भेड़ बकरी का टिकान है। वहां से ¾ मील बराबर कठिन उतराई है।

गुलाबराय चट्टी से ¾ मील आगे २ धर्मशाले, आम्र वृक्षों के नीचे टिकने की जगह और थोड़ासा मैदान है। वहां से रुद्रप्रयाग का शिव मन्दिर देख पड़ता है। उससे आगे एक छोटी नदी पर काठ का छोटा पुल और नदी में पनचक्की के ३ मकान हैं।

रुद्रप्रयाग—गुलाबरायचट्टी से १¾ मील, श्रीनगर से १९मील, देवप्रयाग से ३७ मील और हरिद्वार से ९१¾ मील पर अलकनन्दा के बाएं किनारे पर अलकनन्दा और एक छोटी नदी के संगम के पास रुद्रप्रयाग का बाजार है। मैं हरिद्वार से चलने पर दसवें दिन रुद्रप्रयाग पहुंचा।

यहां सन १८९४ की बाढ़ के समय अलकनन्दा का पानी १४० फीट ऊंचा चढ़ आया था। उस समय यहां की सम्पूर्ण बाजार बह गया और धर्मशालाएं लुप्त हो गईं। अब बाजार के स्थान से ऊपर पन्द्रह बीस बड़े बड़े मकान बने हैं। यहां जिन्स की दुकानों के सिवाय कपड़ा, बरतन और पूरी की भी एक एक दुकान हैं। खड़ी उतराई से उतर कर अलकनन्दा में स्नान होता है। पीने के लिये छोटी नदी से पानी आता है।

रुद्रप्रयाग के बाजार के पास २०० फीट लम्बा और ६ फीट चौड़ा अलकनन्दा पर लोहे का एकलटकाऊ पुल (झूला) है। केदारनाथ को छोड़ कर बदरीनाथ जाने वाले यात्री विशेष कर आचारी लोग यहां से सीधा आगे अलकनन्दा के बाएं किनारे कर्णप्रयाग, नन्दप्रयाग, चमोली होकर अलकनन्दा के किनारे किनारे बदरीनाथ जाते हैं और केदारनाथ के यात्री यहां से पुल पार होकर रुद्रनाथ के मन्दिर से आगे मन्दाकिनी नदी के किनारे किनारे

केदारनाथ पहुंचते हैं और केदारनाथ से नालागांव चट्टी पर लौट कर उखीमठ, गोपेश्वर और चमोली होकर बदरीनाथ को जाते हैं। रुद्रप्रयाग से २१ मील कर्णप्रयाग ३३॥ मील नन्दप्रयाग, ४०½ मील चमोली, जोशीमठ छोड़ कर के ६८¼ मील विष्णु प्रयाग और ८४¾ मील बदरीनाथ हैं और रुद्रप्रयाग से दूसरी ओर मंदाकिनी के किनारे पर २४ मील गुप्तकाशी, ४०¼ मील पर त्रियुगीनारायण, ४३ मील सोनप्रयाग, ४६ मील गौरीकुंड और ५५ मील पर केदारनाथ हैं।

मैं लोहे का पुल पार होकर केदारनाथ को चला। पुल से ¼ मील आगे अलकनन्दा और मन्दाकिनी नदी के संगम पर एक छोटे गुम्मजदार मन्दिर में रुद्रनाथ शिव लिंग हैं। मन्दिर के आगे जगमोहन की जगह पर एक कोठरी है। एक कोठरी में नारदेश्वर शिव और दूसरी कोठरी में कामेश्वर शिव लिंग हैं। खड़ी सीढ़ियों से उतर कर संगम पर स्नान होता है। यहां जल का वेग तेज है। रुद्रनाथ के मन्दिर के पास एक डाक खाना और मन्दिर से थोड़ी दूर मन्दाकिनी नदी पर रस्सों का झूला है। लोहे के लटकाऊ पुल के समान इस ओर रस्सों का झूला होता है। यह चढ़ने से डोलता है, इस लिये इसको लोग झूला कहते हैं। इस में लोहे के बरहों की जगह पर रस्से के बरहे रहते हैं। झूले के दोनों बगलों पर लोहे की छड़ों की जगह ओरचन के समान रस्सियां लगाई जाती हैं और पाटन के तख्तों के स्थान पर जंगल की लकड़ी के टुकड़े बिछाए जाते हैं। ऐसे झूलों पर यात्री लोग बोझ लेकर नहीं चल सक्ते। पहाड़ी लोग इनकी वस्तुओं को दूसरे किनारे पहुंचा देते हैं।

रुद्रप्रयाग, जो पंचप्रयागों में से एक है, देवप्रयाग के बाद मिलता है। रुद्रप्रयाग ही में श्रीमहादेवजी ने महर्षि नारदजी को संगीत विद्या की शिक्षा दी थी।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—स्कंदपुराण—(केदारखण्ड, प्रथम भाग, ६३ वां अध्याय) पूर्व काल में महामुनि नारदजी ने रुद्रप्रयाग में मंदाकिनी गंगा के तट पर, जहां शेषादिक नागों ने तप करके सदाशिवजी के भूषण बन गए थे, एक चरण से खड़े हो कर १०० वर्ष पर्यंत महादेवजी का कठिन तप कि-

या। तब भगवान शिव श्रीपार्वतीजी के साथ नंदी पर चढ़े हुए प्रकट हुए और बोले कि हे नारद! अब तुम्हारा तप पूर्ण होगया। उसी समय श्रीमहादेवजी ने ६ रागों को उत्पन्न किया। एक एक राग की पांच पांच रागिनियां (स्त्रियां) और आठ आठ पुत्र तथा आठ आठ पुत्र वधू हुईं। (६४ वां अध्याय) नारद ने सदाशिवजी के सहस्र नाम से स्तुति की। (६५ वां अध्याय) महादेवजी ने कहा कि हे नारद! मैं प्रसन्न हूं तुम इच्छित वर मांगो। नारदजी बोले हे वृषध्वज! यदि आप प्रसन्न हैं तो मुझको संगीत विद्या प्रदान कीजिए; आप नाद रूप हो और नाद आप को परम प्रिय है इस लिये मैं उसको जानना चाहता हूं; संगीत शास्त्र का सर्वस्व मुझको आप सिखलाइए; इसका जाननेवाला आप के अतिरिक्त दूसरा कोई नहीं है। ऐसा नारद के वचन सुन कर शिवजी प्रसन्न होकर नाद के शास्त्र का संपूर्ण भेद उनसे कह दिया। (यहां नाद शास्त्र की कथा ६५ वें अध्याय से ७७ वें अध्याय तक है)। (७७ वां अध्याय) महर्षि नारद नादों का संपूर्ण भेद और आवरणों को और महादेवजी की दी हुई पवित्र वीणा को ग्रहण कर ब्रह्मलोक में गए। शिवजी वहांही अन्तर्द्धान होगए। नारदजी ने अलकनन्दा और मंदाकिनी के संगम के निकट रुद्रतीर्थ में स्नान करके परम सिद्धि को प्राप्त किया था इस लिये यह तीर्थ पृथ्वी में श्रेष्ठ है। उस प्रदेश में ३ लाख १० सहस्र तीर्थ विद्यमान हैं और नाग पर्वत स्वर्ग के समान है।

(उत्तर भाग, १८ वां अध्याय) गंगा और मंदाकिनी के संगम के समीप रुद्रक्षेत्र और मंदाकिनी और लशनदी के संगम के निकट सूर्यप्रयाग है।

बड़ा शिवपुराण, उर्दू अनुवाद—(८ वां खण्ड, १९ वां अध्याय)। देवप्रयाग के उत्तर रुद्रप्रयाग में रुद्रेश्वर शिवलिंग है, जिस की पूजा करने से संपूर्ण पाप दूर होजाता है।

तीसरा अध्याय।

(गढ़वाल के जिले में) शोणितपुर, गुप्तकाशी, नारायणकोटी, धामाकोटी, शाकंभरी दुर्गा, त्रियुगीनारायण, मुण्डकटागणेश, गौरीकुण्ड, चीरवासा भैरव और केदारनाथ।

शोणितपुर

छितौलीचट्टी—अलकनन्दा और मन्दाकिनी के संगम से आगे मन्दाकिनी के वाएं किनारे से चलना पड़ता है। मन्दाकिनी के दहिनी ओर टिहरी का राज्य और वाएं ओर अंगरेजी राज्य है। रुद्रप्रयाग के मन्दिर से आगे १ मील पर पीपल के पेड़ के चारो ओर मैदान और एक छोटा झरना; १¼ मील पर एक दूसरा छोटा झरना; २¼ मील पर एक गुफा, एक छोटा झरना और मन्दाकिनी के दहिनी ओर एक वस्ती; वाद कई झरने और ४ मील पर तिलवाड़ा चट्टी है।

वहां पत्थर से छाया हुआ बंगले के समान एक सरकारी धर्मशाला, फूसकी टट्टी की कई दुकानें और एक झरना है।

तिलवाड़ा चट्टी से आगे ½ मील पर तिलवाड़ा वस्ती, केलों का झाड़, खेत की भूमि और मन्दाकिनी पर रस्सों का झूला; १ मील पर एक छोटा झरना, उस पार खेत और कई मकान; १½ मील के सामने उसपार मन्दाकिनी और एक छोटी नदी का संगम; १¾ मील पर दो दुकानें और २¼ मील पर रामपुरचट्टी है।

रामपुरचट्टी—रुद्रप्रयाग से वहां तक रास्ता सुगम और जगह जगह ढोंकों की नीची ऊंची सीढ़ियां हैं। वहां कई एक पक्की और फूस की दुकानें हैं। मन्दाकिनी और झरनों का पानी मिलता है और किनारे पर वड़े वड़े पत्थर के ढोंके पड़े हैं।

रामपुरचट्टी से आगे ३/४ मील पर बड़े झरने का पुल; १ १/४ मील पर खड़ी पहाड़ी से गिरता हुआ पानी का झरना; १ १/२ मील पर एक छोटे मन्दिर में शिव लिंग और एक कोठरी, जहां से अनेक तरह के विचित्र लते और वृक्षों के सघन वन का दृश्य आरंभ होता है; २ मील पर एक झरना; २ १/२ मील पर मन्दाकिनी नदी का घाट और मैदान; ३ मील एक नदी पर काठ का पुल और एक पन चक्की; और ३ ३/४ मील पर अगस्तचट्टी है।

अगस्तचट्टी–यहां दुकानदारों के करीब १५ पक्के मकान, एक पक्की धर्मशाला, मन्दाकिनी का पानी और चट्टी के दोनों तरफ सुन्दर मैदान है।

चारो तरफ के मकानों के बीच में अगस्त जी का मन्दिर है। अगस्त जी की ताम्रमयी बड़ी मूर्ति के बगल में कटार और उन के दोनों ओर दो शिष्यों की ताम्र की मूर्तियां और पासही नवग्रह हैं। मन्दिर के आगे जगमोहन की जगह पर लम्बी कोठरी में गणेशजी की पुरानी मूर्ति और घंटा और मन्दिर के दहिनी ओर एक कोठरी में शिव लिंग है।

मन्दिर के पास द्वादश वार्षिकी यज्ञ हो रहा था (जो १२ वर्ष पर होता है)। मन्दिर के आगे यज्ञशाले में अगस्तजी की पीतल की चल मूर्ति, जो उत्सव के समय में बाहर निकाली जाती है, रक्खी हुई थी। यज्ञ कुण्ड और मट्टी की यज्ञ मूर्ति बनी थी। ऐसे यज्ञ पहले बहुत होते थे। महाभारत आदि पर्व्व के ४ थे अध्याय में है कि लोमहर्षण के पुत्र उग्रश्रवाजी नैमिषारण्य में शौनकजी के द्वादश वार्षिकी यज्ञ में गए थे।

मन्दाकिनी के उस पार वहां से २ मील पर शिलेश्वर महादेव हैं। लोग कहते हैं कि अगस्त जी ने उसी स्थान पर तप किया था।

अगस्तचट्टी से पूर्व की ओर चमोली तक एक पहाड़ी मार्ग गया है। बकरी भेड़ लादने वाले व्यौपारी जिन्स लेकर उस मार्ग से आते जाते हैं। चट्टी से केदारनाथ की ओर हिम मण्डित पर्वत शिखर दृष्टिगोचर होता है।

अगस्तचट्टी से आगे १/२ मील पर दो मंजिला धर्मशाला और मन्दाकिनी पर बरहे का झूला; १ १/२ मील पर एक झरना,- जिस के आगे छोटे छोटे ३ और झरने हैं और २ १/२ मील पर महादेवचट्टी है।

महादेवचट्टी—वहां २ कोठरियों में २ शिव लिंग, १ धर्मशाला, आठ दस पक्की दुकानें, दो झरनें, मन्दाकिनी का पानी और आस पास तमाकू के खेत हैं। चट्टी से थोड़ाही आगे एक छोटी नदी मिलती है।

महादेव चट्टी से आगे १/२ मील पर एक बड़े झरने के ऊपर काठ का पुल और मन्दाकिनी के उसपार एक बस्ती में एक छोटा मन्दिर; १ मील पर चार मकान की चन्द्रापुरी की छोटी चट्टी; आगे खड़े पहाड़ से गिरता हुआ झरना; और १३/४ मील चन्द्रापुरी है।

चन्द्रापुरी—चन्द्रापुरी में मोदियों की बड़ीबड़ी और पक्की ८ दुकानें हैं, जिन में बहुत से यात्री टिक सक्ते हैं। कोठरी के समान छोटे मन्दिर में चन्द्रेश्वर नामक अनगढ़ शिवलिंग है। मन्दिर के जगमोहन की जगह पर एक कोठरी है। एक नदी आकर मन्दाकिनी से मिली है। ४ पनचक्की हैं। चट्टी के पास थोड़ा सा मैदान है। लोहे और ताम्बे के कड़ा और अंगूठी बेचने वाला एक लोहार की दुकान है।

चन्द्रापुरी से १/४ मील आगे मन्दाकिनी पर रस्सों का झूला, उस पार की बस्ती में एक छोटा मन्दिर और केलों का झाड़; १/२ मील पर एक छोटा झरना १ १/४ मील पर एक दूसरा झरना; २ मील पर अर्जुन का तीर अर्थात जोते हुए खेत में टेढ़ा गड़ा हुआ पत्थर का कोरदार पतला खंभा; २ १/४ मील पर एक झरना और उस पार मन्दाकिनी और डमार नदी का संगम; २ ३/४ मील पर कड़ा और अंगूठी बनाने वाले लोहार की एक दुकान और केलों के झाड़; और ३ मील पर भीरीचट्टी है।

भीरीचट्टी—वहां मन्दाकिनी के दोनों किनारों पर मोदियों के पांच सात मकान और पानी के झरने; बाएं किनारे पर बंगला के समान सरकारी एक पक्की धर्मशाला, खेत का चौरस मैदान और कई पन चक्कियां हैं। धर्मशाले के दहिनी ओर एक कोठरी में २ १/२ हाथ ऊंची भीम की मूर्ति हाथ में गदा लिए हुये है। पासही दूसरी कोठरी में सत्य नारायण की सुन्दर चतुर्भुजी मूर्ति है, जिसके दोनों ओर और ऊपर ३ पत्थर में खुदी हुई लगभग छोटी२ ३६ मूर्तियां हैं।

मन्दाकिनी के ऊपर ७० फीट लम्बा और ५ फीट चौड़ा लोहे और काठ का लटकाऊं पुल है। पुल पर सन् १८८९ ई० लिखा है। वहां से मन्दाकिनी के बाऐं किनारे की सड़क उखी मठ को और दहिने की गुप्त काशी हो कर केदारनाथ को गई है। केदारनाथ के यात्री यहां से पुल पार होकर मन्दाकिनी के दहिने किनारे से चलते हैं। रामपुर चट्टी से यहां तक सुगम रास्ता है। जगह जगह थोड़ी चढ़ाई उतराई मिलती है। वहां से मन्दाकिनी के दहिनी ओर भी अंगरेजी राज्य है।

भीरीचट्टी से आगे ½ मील पर बड़ा झरना; आगे एक कोठरी में एक देवता की मूर्ति, विचित्र चट्टान, खड़ा पर्वत और हरित जंगल; १¼ मील आगे एक बड़ा झरना और भिक्षुक की कोठरी में सत्यनारायण की मूर्ति; १½ मील कौनियादाना की उजाड़चट्टी और कड़ा और अंगूठी बेचनेवाले की दुकान; २½ मील पर एक झरना; ३½ मील पर कुण्ड चट्टी में फूस टट्टी की कई दुकानें और मन्दाकिनी का जल; ४ मील पर एक छोटी नदी; और ४½ मील पर और एक भिक्षुक की कोठरी में गरुड़ की मूर्ति है।

कौनियादानाचट्टी के १ मील आगे से रिंगाल (नरकठ) का जंगल जगह जगह देख पड़ता है, जिस से तराय, डोलची, और टोकरी इत्यादि बनती हैं और वह मकान के छप्पर के काम में आता है और उसका कलम भी बनता है। कुण्ड चट्टी के ½ मील आगे से चढ़ाई आरंभ होती है।

शोणितपुर—कुण्डचट्टी के एक मील आगे जहां भिक्षुक की कोठरी है, पहाड़ के ऊपर शोणितपुर को ३ मील की एक पगदण्डी गई है। वहां वाणासुर के गढ़ की निशानी और वाणासुर, अनिरुद्ध और पंचमुखी महादेव की मूर्तियां हैं केदार नाथ के पण्डे शोणितपुर ही में रहते हैं।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—वामन पुराण—(९२ अध्याय) राजाबलि के रसातल जाने के उपरान्त उसका पुत्र वाणासुर पृथ्वी में शोणिताख्यपुर रचकर दानवों के साथ रहने लगा।

श्रीमद्भागवत—(दशमस्कन्ध—६२ वां अध्याय) राजाबलि के १०० पुत्र उत्पन्न हुए, जिनमें से उसका ज्येष्ठ पुत्र वाणासुर शोणिताख्यपुर में राज्य

करता था। शिवजी उसके तांडव गति के नृत्य से प्रसन्न हो, उसकी इच्छानुसार अपने कुल समेत उसके घर में स्थित हुए। एक समय वाणासुरने शिवजी से कहा कि आप के अतिरिक्त मुझसे युद्ध करनेवाला दूसरा कोई नहीं देख पड़ता। विना युद्ध किये मेरी भुजायें खुजलाती हैं इस लिये कृपाकरके आप मुझसे युद्ध कीजिए। तवतो शिवजी क्रुद्ध होकर वोले कि मेरे समान वलवान से जव तेरा युद्ध होगा तव तेरा गर्व टूट जायगा।

वाणासुर की ऊखा नामक एक कन्या थी। स्वप्नमें अनिरुद्ध के साथ उसका समागम हुआ। जागनेपर वह हे कान्त तुम कहां गए इस प्रकार पुकारती पुकारती सखियों के वीचमें गिर पड़ी। तव वाणासुर के मंत्री कुभाण्डक की पुत्री चित्ररेखा देवता मनुष्य सव के चित्र लिखर कर उसको देखलाने लगी। अन्तमें अनिरुद्ध का चित्र देखकर ऊखाने कहा कि मेरा चित्त चोर तो यही है। तव योग वलसे चित्ररेखा आकाश मार्ग से होकर द्वारिकापुरी में जा पहुंची। उस समय अनिरुद्ध पलंग पर सो रहेथे उसे वह योग वलसे उठा कर शोणितपुर में ले आई। वे दोनों गुप्त भावसे घरमें रहने लगे। कुछ दिनों के पश्चात् वाणासुर ने पहरेदारों के मुख से यह वृतान्त सुन कन्या के घरमें जाकर अनिरुद्ध को देखा और कुछ युद्ध होने के वाद अनिरुद्ध को नागफांस से वान्ध लिया।

(६३ अध्याय) वर्षाऋतु के ४ महीने वीत जाने पर नारदजी ने द्वारिका में आकर श्रीकृष्णचंद्र से अनिरुद्ध के कारागार का समाचार सुनाया। तव श्रीकृष्णचन्द्रने वड़ी भारी सेना के साथ जाकर वाणासुर के नगर को घेर-लिया। अपनी सेना लेकर वाणासुरभी पुर से वाहर निकला और उसकी सहायता के लिये महादेवजी भी अपने गणों के संग रणभूमि में सुशोभित हुए। भयानक युद्ध होने के वाद श्रीकृष्णचंद्रने जृंभण अस्त्र चलाया, जिस से शिवजी जँभाई लेने लगे। तव श्रीकृष्णजी ने असुर की सव सेना का विनाश करके वाणासुर की ४ भुजाओं को छोड़ शेष भुजाओं को काट डाला। उसके पश्चात् वाणासुर ने कृष्णचंद्र को प्रणाम करके ऊखा के सहित अनिरुद्ध को रथ में वैठा कर विदा कर दिया। श्रीकृष्णचन्द्र अपनी सेना के संग द्वारिका में आए। और वाणासुर शिवजीका मुख्य पार्षद हुआ।

(यह कथा शिवपुराण-धर्मसंहिता के ७ वें अध्याय में और आदि ब्रह्म पुराण के ९४ वें अध्याय में भी है।)

स्कंदपुराण—(केदारखंड, उत्तर भाग, २४ आं अध्याय) गुप्त काशी के पश्चिम दिशा में वाणासुर दैत्य ने अजेय वरदान पाने के लिये शिवजी का कठिन तप किया। वहां वाणेश्वर महादेव स्थित हो गए। वाणासुर ने उनके प्रसाद से संपूर्ण जगत को जीत लिया।

गुप्त काशी।

भिक्षुक की कोठरी से आगे १¼ मील पर एक झरना और १½ मील पर गुप्त-काशी है। यहां दो चौगान हैं। उनमें से दक्षिण के चौगान में चारो ओर पक्के दो मंजिले दोहरे मकान, जिनमें यात्री टिकते हैं और उत्तर के चौगान में ३ और पक्के दो मंजिले दोहरे मकान और धर्मशाले और पश्चिम ओर पहाड़ के नीचे विश्वनाथ शिवका पूर्वमुख का मंदिर है। मन्दिर साधारण डौल का है। उस के शिखर पर छोटी बारादरी और सोने का कलश है। विश्वनाथ शिवलिंग, अनगढ़ हैं। शिवका अरघा, जलधरी का घड़ा और ऊपर का पर्दा (छत्र) चान्दी का है। शिवजी के पास चान्दी से बनी हुई उनकी शृंगार मूर्ति और ताख में चान्दीही से बनी हुई १½ हाथ ऊंची अन्नपूर्णा की चतुर्भुजी मूर्ति है। मन्दिर के आगे पत्थर के टुकड़ों से छाया हुआ एक द्वारवाला जगमोहन है जिसमें नन्दी की पीतल की छोटी मूर्ति और गणेशजी की एक मूर्ति बनी है। जगमोहन के द्वार के दोनों ओर ताख में दो द्वारपाल खड़े हैं। पुजारी यात्री से द्वारपर एक पैसा लेकर भीतर जाने देता है। और शिवजी के पास एक थारी में रुपया, अठन्नी चवन्नी इस इच्छा से रक्खी रहती है कि यात्री लोग जाने कि यहां पैसा नहीं चढ़ता है।

शिवमन्दिर के आगे लगभग १५ हाथ लम्बा औ इतनाही चौड़ा मणिकर्णिका कुण्ड है। कुण्ड के पश्चिम की दीवार में १ पत्थरही का हाथी का मुख और दूसरा पीतल का गोमुख बना है। इन दोनों से झरने का जल कुंड में गिरता है और कुण्ड का जल बाहर निकला करता है। हाथी के मुख पर

शाका १६६४, सम्वत् १७९९ और गोमुख पर सम्वत् १९३२ और टेहरी के राजा रणवीरसिंह का नाम खुदा हुआ है। कुण्ड के पूर्व पुराना नन्दी रक्खा हुआ है और उसके चारो ओर पत्थर का फर्श है।

विश्वनाथजी के मन्दिर के पासही एक छोटा गुम्मजदार मन्दिर है। उसमें मार्बल पत्थर के बैल पर चढ़ी हुई गौरी शंकर की मूर्ति है। मूर्ति के दहिने भाग में पुरुष अर्थात शिव के और वाम भाग में स्त्री याने पार्वती के चिन्ह देखने में आते हैं। उसके नीचे पत्थर पर सम्वत् १९३३ खुदा हुआ है। मन्दिर के सामने नन्दी की मूर्ति है।

चौगान के उत्तर के एक मकान में पाण्डवों की प्राचीन मूर्तियां हैं। दोनो चौगानों के बाहर चौरस भूमि नहीं है। दुकान्दार लोग भी धर्मशालाही में रहते हैं। गुप्तकाशी का अधिकारी उखीमठ के रहने वाले केदारनाथ के रावल (पुजारी) हैं।

गुप्तकाशी से बर्फ की सर्दी आरंभ होजाती है। वहां से ३½ मील दूर पहाड़ के ऊपर शोणितपुर और सामने मन्दाकिनी के उस पार ऊखीमठ है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—स्कंदपुराण—(केदारखंड, उत्तर भाग, २४ वां अध्याय) केदारेश्वर से ६ योजन दक्षिण काशी के तुल्य भुक्ति मुक्ति को देने वाला गुह्य वाराणसी क्षेत्र है। उस क्षेत्र का विस्तार २ योजन है। वह गुप्त स्थान है। उसको गुप्तकाशी कहते हैं। उसके स्मरण मात्र से सब आपत्तियां विनाश होजाती हैं। वहां महाराज शंकर सर्वदा वास करते हैं और गंगा और यमुना गुप्त रूप से रहती हैं। वहां स्नान करने वाला दुर्लभ मुक्ति पाता है। माघ मास में मकर राशि के सूर्य होने पर वहां स्नान करने से असंख्य फल लाभ होता है।

नालागांव—गुप्तकाशी से आगेजाने पर दुर्गा का छोटा मंदिर मिलता है। उस से आगे सेवती पुष्प के वृक्षों का जंगल देख पड़ता है। गुप्तकाशी से ¼ मील नालागांव के पास फूस टट्टी की चार पांच दुकानें, झरना, गरुड़ का एक बहुत छोटा मन्दिर और ललिता देवी का छोटा पुराना मन्दिर

है, जिसके सिर पर मुलम्मेदार दो हाथ ऊंचा ध्वज-दण्ड खड़ा है । ललिता की मूर्ति के दहिनी ओर शिवजी की मूर्ति है। मन्दिर के पास बहुत छोटेछोटे चार पांच मन्दिर और लोगों के झूलने के लिये एक झूला है।

यात्री लोग केदारनाथ से यहां लौट कर यहां से उखीमठ और चमोली होकर बदरीनाथ जाते हैं। कोई कोई अपना असबाब यहां किसी मोदी के पास रख देते हैं और केदारनाथ से लौट कर लेलेते हैं।

नारायण कोटी।

नाला गांव से आगे $\frac{1}{4}$ मील दहिने तरफ पगदण्डी के पास एक मंदिर; १ मील पर एक झरना जिस से कुछ आगे दूसरा झरना और नाला गांव से १$\frac{1}{4}$ मील पर भेत गांव है। वहां मोदियों के १० मकान; दो झर ने साधारण कद के एक मन्दिर में नारायण की मूर्ति, जिसके पास छोटीछोटी बहुत देव मूर्तियां हैं; और पासही बांऐ ओर ऐसेही मन्दिर में शिवलिंग हैं। इन मन्दिरों के पीछे छोटेछोटे दो मन्दिर हैं। उस स्थान से थोड़ी दूर पश्चिम साधारण डौल के एक मन्दिर में गरुड़ के कन्धे पर श्रीलक्ष्मीनारायण की सुन्दर मूर्ति है, जिनके पास पांचों पाण्डवों और नवग्रहों की छोटी छोटी मूर्तियां हैं। मन्दिर के बाहर चारो कोनों के पास अत्यन्त छोटे छोटे ४ मन्दिर और दक्षिण और पश्चिम ऐसेही १४ मन्दिर हैं। छोटेरे मन्दिरों में बहुतेरे ऐसे हैं, जिनमें आदमी नहीं बैठ सक्ते और बहुतेरे खाली पड़े हैं। वहां एक छोटे कुण्ड में झरने का पानी गिरकर बाहर निकल रहा है । उसी स्थान पर वृकासुर, जिसको भस्मासुर भी कहते हैं, शिव की तप करके उनसे यह वर मांगा था कि जिसके मस्तक पर मैं हाथ धरूं वह भस्म होजाय।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—ब्रह्मवैवर्त पुराण-(कृष्ण जन्मखण्ड—६३ वां अध्याय) वृक नामक दैत्य ने शिवजी की तप करके उनसे यह वर मांगा कि हम जिसके मस्तक पर हाथधरूं वह भस्म होजावे । वर पाने पर दैत्य शिवजीहो के माथ पर हाथ देने को उनके पीछे लगा। शिवजी

भागे। अन्त में विष्णु ने दैत्य के हाथ को उसी के सिर पर रखवा कर उस को भस्म करदिया।

श्री मद्भागवत—(१० वां स्कन्ध—८८ वां अध्याय) शकुनी दैत्य का पुत्र वृकासुर केदार तीर्थ में जाकर अपने शरीर को छूरी से काट काट अग्नि में हवन करने लगा। जब सातवें दिन उसने अपने सिर को काट ने चाहा, तब शिव अग्नि कुण्ड से निकल कर उसका हाथ पकड़ लिया और प्रसन्न होकर उसे वर मांग ने को कहा। दैत्य बोला कि जिस के सिर पर मैं अपना हाथ रखदूं वह उसी समय भस्म होजावे। शिवजी हँस कर उसको यह वरदान देही दिया। जब वृकासुर शिवजी के मस्तक पर हाथ रखने के लिये चला तब शिवजी वहां से भागे। दैत्य उनके पीछे दौड़ा। महादेवजी संपूर्ण देशों में भ्रमण करके जब वैकुण्ठ में विष्णु के सामने होकर भागे तब विष्णु ने ऋषि वेष होकर वृकासुर से पूछा कि तू इतना घवड़ा कर कहां जाता है। जब उसने उनसे सब वृतान्त कहा तब विष्णु ने कहा कि तू अज्ञान है कि वौरहे महादेव के वचन का विश्वास करता है। तू अपने सिर पर हाथ रख कर पहले उस वरदान की परीक्षा करलें। यह सुनतेही वृकासुर परमेश्वर की माया से उस वचन को सत्य मान कर जैसेही अपने सिर पर हाथ रक्खा वैसेही वह भस्म होगया।

धामाकोटी

नारायणकोटी से आगे १ मील पर छोटे छोटे २ झरने; १¼ मील पर दो झरने; १½ मीलपर व्युंगगढ़ चट्टी; १¾ मीलपर बड़ा झरना; २ मीलपर ५ मकान को व्युंगगढ़ नामक छोटी बस्ती, एक छोटा झरना और साधु की कोठरी; और ३¾ मील पर धामाकोटी बस्ती है।

व्युंगगढ़चट्टी एक नदी के पास है। नदी पर काठ का पुल बना है। वहां मोदियों के टट्टी छप्पर से बने हुए बहुत मकान; एक पनचक्की; कड़ा और अंगुठी बनाने वाले लोहार; और झरने की कलसे काठ के प्याले, कठौते, कठारी, लोटे बनानेवाले बढ़ई हैं। गुप्तकाशी से वहां तक बहुत जगह उतराई है। व्युंगगढ़ बस्ती से ½ मील तक कठिन चढ़ाई है।

महिषमर्दिनी देवी—धामाकोटी वस्ती के पास एक छोटे मन्दिर में एक फीट ऊंची श्रेष्ठ धातु से वनी हुई महिषमर्दिनी देवी की अष्टभुजी मूर्ति है। उस के पास ताम्वा आदि धातुओं के पत्तरों पर वनी हुई देवियों की वहुतेरी मूर्तियां हैं। मन्दिर के वाहर, जिस पर चैत्र और आश्विन की अष्टमी को देवी की चल मूर्ति झूलेपर झुलाई जाती है, वीस वीस हाथ के दो खंभे गड़े हैं; दोनों के सिरों पर एक लकड़ी है। मोटे मोटे दो जंजीर अलग अलग लकड़ी से नीचे लटके हैं। सीकड़ों में नीचे एक पीढ़ीं लगी है। कोई कोई यात्री उस झूले में वैठकर झूलते हैं। धामाकोटी वस्ती में कड़े और अंगुठी वनाने वाला लोहार और प्याले कठारी इत्यादि काठ के वर्तन वनाने वाला वढ़ई हैं। ऐसा प्रसिद्ध है कि इसी स्थान पर महिषासुर को मारने वाली देवी जी निवास करती हैं।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—वाराहपुराण—(८८ वां अध्याय) ब्रह्मा जी कैलास में जाकर शिवजी से कहने लगे कि महिषासुर से पीड़ित होकर सम्पूर्ण देवता मेरे शरण आए हैं, इस की शान्ति का कोई उपाय आप विचारें। शिवजी ने विष्णु भगवान का ध्यान किया। उसी समय विष्णु भगवान प्रकट हुए, तव तीनों अन्तरध्यान होकर एक मूर्ति हो गए। उसी मूर्ति की दृष्टि से एक कुमारी दिव्य रूप से प्रकट हुई। तीनों देवों ने प्रसन्न होकर कुमारी को वर दिया कि तुह्मारा नाम त्रिकला है। तुम सव काल में विश्व की रक्षा करो। तुह्मारे देह के तीन वर्ण (रंग) हैं इस लिये तुम अपने शरीर को तीन भागों में विभक्त करो। यह सुन कुमारी तीन रूप से प्रकट भई। एक का शुक्ल वर्ण दूसरे का रक्त वर्ण और तीसरे का कृष्ण वर्ण हुआ। जो ब्राह्मी नामक देवी शुक्ल वर्णा थी वह प्रजा की उत्पत्ति करने में प्रवृत्त हुई; जो रक्त वर्णा कुमारी थी वह शंख, चक्र, गदा, पद्म निज कर कमलों में धर कर विष्णु के रूप से संसार की रक्षा करने लगी और जो नील वर्णा त्रिशूल धारण किए रौद्री शक्ति थी वह जगत के संहार करने में प्रवृत्त हुई।

(९०वा अध्याय) त्रिशक्तियों में से वैष्णवी शक्ति कुमार व्रत धारण कर वदरिकाश्रम में अकेली तप करने लगी। तप करते करते वहुत काल व्यतीत

से उस शक्ति के मन में क्षोभ उत्पन्न हुआ, जिसके होतेंही अनेक कुमारियां उत्तम उत्तम रूप धारण कर उत्पन्न हुईं, जो एक से एक मनोहर और उत्तम उत्तम वस्त्र भूषणों से भूषित थीं। इस प्रकार कुमारियों की उत्पत्ति देख कर प्रधान देवी ने निज माया से अति रमणीय एक नगर निर्माण किया। तब देवियों की गण उसमें निवास करने लगीं। प्रधान देवी देवीगणों से सेवित होकर राज सिंहासन में विराज मान हुईं।

एक समय नारद मुनि महिषासुर दैत्य की पुरी में जाकर उस से बोले कि मैंने मन्दराचल में पहुंच कर वहां देखा था कि एक नगर अनेक पदार्थों से परिपूर्ण और उत्तमोत्तम कुमारियों से भूषित है। उन्हीं कुमारियों में से एक निज प्रभा से विश्व को प्रकाश करती हुई वहां निर्भय विराजमान है, इस लिये हम आप के पास आए हैं; सब रत्नो के स्वामी आप हैं, और वह स्त्री रत्न भी आप ही के योग्य है।

(९२ वां अध्याय) महिषासुर का भेजा हुआ विद्युतप्रभ नामक दूत मायापुर में देवीजी के पास पहुंचा। वह प्रणाम कर के कहने लगा कि हे देवि! रेवा नदी के तट पर माहिष्मती नामक पुरी के समीप महिषासुर का जन्म हुआ। वह तप करके ब्रह्मा से वरदान पाकर देवों से अजेय असुरों का राजा हुआ है। वह नारदजी से तुह्मारा रूप और गुण सुन कर तुम पर मोहित है, इस लिये उन का मनोरथ सिद्ध करना तुम को उचित है। देवी ने इस का कुछ उत्तर नहीं दिया। दूत देवी की जया नाम की सखी की रूखी वचन सुन कर चूप चाप चल दिया। अनन्तर देवी की आज्ञा से सब कुमारियों ने सौम्य स्वभाव और मनोहर रूप छोड़ कर नाना अस्त्रशस्त्र धारण कर संग्राम करने को तय्यार हुईं। उसी समय अगणित सेना संग लिये महिषासुर आ पहुँचा। पहुंचतेही देवी के गणों के साथ महिषासुर की सेना का संग्राम होने लगा। देवीजी के गणों ने महिषासुर के असंख्य सेना को क्षण मात्रही में विध्वंस कर दिया। जो कुछ थोड़े से दैत्य बचे थे, उन्होंने महिषासुर के पास पहुंच सब वृत्तांत कह सुनाया। तब महिषासुर अति क्रोधित हो हाथ में गदा ले देवी के पास पहुंचा। श्री देवीजी ने अठारह भुजा धारण कर नाना भांति के अस्त्रशस्त्रों को ले शिवजी का

स्मरण किया। शिवजी के प्रकट होने पर देवी ने उनसे आज्ञा ले क्षण मात्र ही में सम्पूर्ण दैत्यों का संहार कर दिया। तब महिषासुर भाग कर अन्तरध्यान होगया। थोड़ी देर में फिर वह आकर युद्ध करने लगा। इसी प्रकार वह कभी भाग जाता था और कभी आकर युद्ध करता था। इसी भांति देवीजी को युद्ध में १००० वर्ष व्यतीत हुए। सारे ब्रह्माण्ड में घूम घूम कर महिषासुर युद्ध किया करता था। एक समय देवीजी नें शत शृंग नामक पर्वत पर सिंह से कूद कर महिष पर सवार हो त्रिशूल से महिषासुर का कण्ठ छेद खड्ग से उसके सिर को दो खण्ड कर दिया। महिष निज प्राण को त्याग स्वर्ग को गया।

(मार्कण्डेयपुराण के ८२ और ८३ अध्याय में और देवी भागवत के ५ वें स्कंध के दूसरे अध्याय से २० वें अध्याय तक देवी की उत्पति और महिषासुर के वध की कथा है।)

स्कन्धपुराण—(केदारखंड, उत्तर भाग, २५ वां अध्याय) केदार के दक्षिण भाग में महिषखंड स्थान है। पूर्व काल में श्रीदेवीजी ने महिषासुर को काट कर उस के देह का खंड उसी पर्वत पर फेंक दिया। उसी स्थान में महिषमर्दिनी देवी प्रकट हुई, जिसका दर्शन करने वाला मनुष्य शिव लोक में निवास करता है। वहां भगवतीश्वर नामक महादेव और पटुमती नदी है। उस के दक्षिण भाग में कुंभिका धारा है।

फटाचट्टी—धामाकोटी से आगे दो छोटे झरने और ½ मील पर महिखण्डा वस्ती है। इसमें पक्के मकान बने हैं वस्ती से थोड़ा आगे दो झरने और एक जगह ईशानेश्वर शिवलिंग है, जिसके पास दो तीन पत्थरों पर छोटी छोटी बहुतसी मूर्तियां बनी हैं धामाकोटी से १ मील आगे एक झरना और १¼ मील पर फटाचट्टी है। वहां मोदियों के टट्टी फूस से बने हुए बहुत मकान, एक पक्की सर्कारी धर्मशाला, लोहार और चमार की दुकानें, एक छोटी नदी, दो झरने, कई पनचक्कियां और देवदारु के बड़े बड़े दो वृक्ष हैं। १¼ मील पहले से धामाकोटी तक मार्ग सुगम है। फटाचट्टी के आस पास कई मीलों तक रामदाना उत्पन्न होता है।

फटाचट्टी से ¼ मील पर एक छोटा झरना और एक छोटी गुफा; ½ मील

पर एक झरनो; १ मील आगे छोटी नदी पर शहतीरों का पुल; १¼मील आगे छोटो नदी पर शहतोरों का पुल; २¼ मील पर एक वस्ती; २¼ मोल पर छप्पर को गोसांई-चट्टी; ३ मील पर शेरसी चट्टी में ३ मकान, कडावाले लोहार की दुकान और एक झरना; ३¼ मील पर एक छोटो कोठरी में गणेशजो; की मूर्ति;४ मील कालढोंगी नदी पर शहतीरों का पुल; और ४½ मील पर रामपुरचट्टो है।

रामपुर—वहां थोड़ा मैदान, टट्टो और फूस से वनी हुई वड़े वड़े ६ दुकानें और २ झरने हैं।

रामपुरचट्टी से १½ मील पाटीगाड़ नदी पर काठ का पुल, पनचक्को और काठ के प्याले, कठारी की दुकान हैं। नदी से थोड़ी दूर आगे शाकम्भरी और त्रियुगीनारायण की राह सोनप्रयाग और केदारनाथ को सड़क से अ-लग होजाती हं। वहां से सोनप्रयाग सूधी राह से १¼ मील और त्रियुगीना-रायण होकर ६ मील है। वहां से मन्दाकिनी दहिने छूट जातो है और त्रि-युगीनारायण की कठिन चढ़ाई आरम्भ होती है। रामपुर से २ मील पर कड़ा, अंगूठोवाले लोहार की दुकान और एक झरना; २½ मोल पर एक झरना; ३ मील पर केमारा वस्ती और ३½ मील पर शाकम्भरी देवी हैं।

शाकम्भरी दुर्गा।

कोठरी के सामने एक छोटे मन्दिर में ताम्बे के पत्र में शाकम्भरी देवी की मूर्ति है, जिसके पास इसीतरह से पत्तरों पर वनी हुई देवियों की वहुतसी मूर्तियां हैं।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—महाभारत (वनपर्व ८४वां आध्याय) तीनों लोक में विख्यात शाकम्भरी देवी का स्थान है। वहां हजार वर्ष तक भगवती ने प्रति वर्ष में १ महीना शाक खाकर तप कियाथा। देवी की भक्ती से पूरित मुनीश्वर वहां आए। भगवती ने उसी शाक से उनका भी सत्कार किया। उसी दिन से उस देवी का नाम शाकम्भरी हुआ। शाकम्भरीदेवी के स्थान में जाकर पवित्र और ब्रह्मचारी हो कर तीन दिन शाक खा कर रहना

चाहिये । १२ वर्ष तक शाक खाकर रहने से जो फल प्राप्त होता हैं, उस स्थान पर केवल ३ दिन शाकाहार करके निवास करने से वही फल मिलता है।

देवीभागवतं—(७ वां स्कन्ध २८ वां अध्याय) हिरण्याक्ष के वंश में अति बलवान दुर्ग नामक दैत्य हुआ । वह हिमालय पर जाकर ब्रह्मा का तप करने लगा। ब्रह्माके प्रकट होने पर उसने यह वरदान मांगा कि में देवताओं को जीतूँ । जब ब्रह्माजी एवमस्तु कह कर चले गए तब दैत्यने अमरावती पुरी को जीतलिया। जगत में बड़ा अनर्थ होने लगा। यज्ञ नहोने से १०० वर्ष तक अनावृष्टि रही । तब ब्रह्मा ने हिमालय पर्वत के निकट जाकर समाधि ध्यान और पूजा से देवी को संतुष्ट किया । उस समय भगवती ने प्रकट होकर अपने हाथ से अति स्वादयुक्त शाक, फल मूल आदि और नाना प्रकार के अन्न और पशुओं के भोजन करने को चारा दिया और शाक से सब जीवात्माओं का पोषण किया। उसी समय से देवीजीका एक नाम शाकम्भरी हुआ।

दुर्गासुर दूतों के मुख से यह वृतान्त सुन कर अपनी सेना ले देवी से युद्ध करने को पहुंचा। अनन्तर देवीजीने अपने शरीर से ३२ शक्तियां उत्पन्न की। इनके अतिरिक्त ६४ और प्रकट हुई। १० दिनों में असुर की अशेष सेना मारी गई। ग्यारह वें दिन वह बहुत पूजनादि कर युद्ध करने लगा और सब शक्तियों को जीतकर महादेवी, शताक्षी के आगे लड़ने को आया। अन्तमें भगवती ने दुर्गदैत्य को मारडाला। इसके पश्चात् देवीजी ने कहाकि हम ने दुर्गदैत्य को मारा है, इससे मेरा नाम दुर्गा और असंख्य नेत्र हैं इस लिये शताक्षी नाम होगा। जो मनुष्य हमारे इन दोनों नामों का स्मरण करेगा वह माया से विमुक्त हो कर परमपद पावेगा।

स्कंदपुराण—(केदारखंड, प्रथम भाग, ४६ वां अध्याय) परम पीठ शाकंभरीक्षेत्र सब पापों के नाश करनेवाला है, जहां मुनियों की रक्षा के लिये शाकंभरी देवी प्रकट हुई। वहां जा कर शाकंभरी को नमस्कार करने से १० अश्वमेध यज्ञ का फल मिलता है। वहां शाक का एक बड़ा वृक्ष है । देवी के दक्षिण भाग में मरकतमणि का एक शिवलिंग है । उसके वाम भाग में

नंदिनी नदी बहती है। उसी प्रदेश में रुरु नामक भैरव की मूर्ति है। शाकंभरी पीठ का प्रमाण ३ योजन लंबा और २ योजन चौड़ा है। जो मनुष्य नियम पूर्वक वहां ९ रात्रि निवास करता है उसको विपुल सिद्धि प्राप्त होती है।

त्रियुगीनारायण।

शाकंभरी से ½ मील पर ३ झरने; १ मील पर बड़े झरने का पुल, १ पनचक्की और १ झरना और १¼ मील पर त्रियुगीनारायण का स्थान है।

त्रियुगीनारायण में ब्रह्मकुंड नामक एक चतुष्कोण कुंड; उसके पास उससे छोटा रुद्रकुंड और रुद्रकुंड के निकट कूप के समान गोलाकार विष्णुकुंड है। ब्रह्मकुण्ड और रुद्रकुण्ड में लोग स्नान करते हैं और विष्णुकुण्ड का जल सब लोग पीते हैं। उसके पास एक स्थान में झरना का थोड़ा जल है, जिसको लोग सरस्वतीकुण्ड कहते हैं। उसमें पंडे लोग यात्रियों को तर्पण कराते हैं। झरने का जल भीतर से चारों कुण्डों में आता है और ब्रह्मकुण्ड से बाहर निकलता है। इन कुण्डों के पास नारायण का एक साधारण शिखरदार मन्दिर है, जिसमें नारायण की धातुकी मूर्ति स्थापित है। उसके पास धातु के पत्तरों में बनी हुई लक्ष्मी, अन्नपूर्णा, सरस्वती आदि कि पांच सात मूर्तियां हैं। मन्दिर के आगे जगमोहन के स्थान पर एक चतुष्कोण गृह है, जिसमें एक चबूतरे पर कुण्ड बना है। कुण्ड में सर्वदा अग्नि रहता है। लोग कहते हैं कि शिवजी और पार्वतीके विवाह के समय का यह कुण्ड है। इसी स्थान पर शिवजी का विवाह पार्वती से हुआ। कई यात्री लकड़ी मोल लेकर कुण्ड में डालते हैं और कुण्ड की विभूति ले जाते हैं। नारायण के मन्दिर में अन्धकार रहता है इस लिये दिन में भी दीपक जलता है। नारायण के मन्दिर के पश्चिम पूर्वोक्त चारो कुण्ड और पूर्व शिव, गरुड़ आदि देवताओं के अत्यन्त छोटे छोटे ९ मंदिर हैं।

वहां कई पक्की धर्मशाले, एक सर्कारी पक्की धर्मशाला, एक पुरी की दुकान और तीन चार मोदी हैं। त्रियुगीनारायण की चढ़ाई कड़ी है, इस लिये बहुतेरे यात्री पाटीगाड़ नदी से त्रियुगीनारायण का मार्ग छोड़ कर सीधी रास्ते से केदारनाथ जाते हैं। झंपान वाले चढ़ाई का इनाम यात्रो से लेते हैं।

गंगोत्तरी के बहुतेरे यात्री, जो हृषीकेश, देवप्रयाग, और श्रीनगर से गंगोत्तरी जाते हैं, पगदंडी से यहां आकर केदारनाथ की राह लेते हैं।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—महाभारत—(अनुशासनपर्व ८४वां अध्याय) हिमालय पर्वत पर भगवान रुद्र के सहित रुद्राणी देवी का विवाह हुआ था।

स्कंदपुराण—(केदारखंड, प्रथमभाग, ४३ वां अध्याय) केदारमंडल में त्रिविक्रमा नदी के तट के ऊपर डेढ़ कोस पर यज्ञपर्वत में नारायण क्षेत्र है। वहाहीं ब्रह्मादिक देवताओं ने हरि का यज्ञ किया था। वहां सर्वदा अग्नि विद्यमान रहते हैं। उसी स्थान पर गौरी से महादेवजी का विवाह हुआ था। कोटिन पाप से युक्त मनुष्य क्यों न हो वहां १० रात्रि उपवास करके प्राण त्यागने से वैकुण्ठ में वसता है। विष्णु की नाभी से परम पवित्र सरस्वती की धारा वहां पर आई है। जो प्राणी मंत्र से युक्त होकर उस का जल पीता है, सो करोड़ कल्प तक उसकी पुनरावृत्ति नहीं होती और उस के २१ पुरुषों का उद्धार होजाता है। जो मनुष्य वहां नारायण के मंत्र से हवन करता है वह सब पापों से छूट जाता है। वहां के भस्म धारण करने वाला सर्वदेव मय हो जाता है। वहां ब्रह्मकुण्ड नामक पवित्र तीर्थ है, जिसमें स्नान करने से ब्रह्मलोक मिलता है। उसके दक्षिण भाग में विष्णु तीर्थ है, जिस में स्नान करने वाला वैकुण्ठ में निवास करता है। वहां के सरस्वती कुंड में स्नान करने से सब पाप क्षय होता है। नारायण देव के दर्शन करने से शिवलोक मिलता है।

वाराहपुराण—(२२ वां अध्याय) शिव पार्वती का विवाह तृतीया को हुआ इसलिये तृतीया उनका प्रिय दिन है।

सोनप्रयाग—त्रियुगीनारायण से लौटते १¾ मील पर कमारा वस्ती और १ झरना और २¼ मील पर सोनप्रयाग है। शाकम्भरीदेवी से सोनप्रयाग तक कठिन उतराई है।

सोनप्रयाग में ऊपर से नीचे मन्दाकिनी का जल जोरशोर से गिरता है। बासुकी गंगा पश्चिमोत्तर से आकर वहां मन्दाकिनी में मिलगई है। सोनप्रयाग से १२ मील दूर कई मील लंबा चौड़ा वासुकी तालाव है। उसी से वासुकी

गंगा निकली है। यात्री लोग आषाढ़ और सावन में बर्फ गल जाने पर वहां जाते हैं। सोनप्रयाग में मन्दाकिनी का जल शुक्ल और वासुकी गंगा का जल हरित देख पड़ता है।

वासुकीगंगा पर अंगरेजी सर्कार का बनवाया हुआ १७० फीट लंबा लोहे का हलका लटकाऊं पुल है। पुल के निकट एक कोठरी में गरुड़ की मूर्ति और एक मोदीका मकान है। उस स्थान को झिलमिलीचट्टी भी लोग कहते हैं

संक्षिप्त प्राचीनकथा—स्कंदपुराण—(केदारखंड, प्रथमभाग, ४२ वां अध्याय) कालिका नदी, जिस को वासुकी आदि नाग नित्य सेवन करते हैं, गंगाजी के अंग से उत्पन्न है। वहां सरोवर में शेषेश्वर महादेव स्थित हैं। नदी के निकास के स्थान पर कालिकादेवी है, इसी से नदी का कालिका नाम पड़ा है। मन्दाकिनी और त्रिविक्रमा नदी के संगम के पास कालेश नामक शिव विराजते हैं।

सोनप्रयाग से आगे केदारनाथ की ओर सर्दी अधिक पड़ती है; जाड़े के दिनों में रहने वाली वस्ती नहीं है और पानी में दाल नहीं गलती। सोन-प्रयाग से आगे मन्दाकिनी के दहिने किनारे से चलना होता है और १ मील पर मुण्डकटा गणेशजी मिलते हैं।

मुण्डकटा गणेश

एक कोठरी में बिनासिर की श्रीगणेशजी की मूर्ति है। उनके दहिने ओर पार्वती जी और बाएं ओर एक शिवलिंग स्थित है। वहां एक पुजारी रहता है और छप्पर के २ मकान हैं। जिस भांति श्री महादेवजी ने गणेशजी का सिर काटा था वह कथा नीचे लिखी जाती है।

संक्षिप्तप्राचीनकथा—स्कंदपुराण—(केदारखंड, प्रथमभाग, ४२ वां अध्याय)। गौरीतीर्थ से १ कोस दूर विनायकद्वार पर गणेशजी स्थित हैं, जिनको पार्वतीजी ने स्नान के समय अपने अंगराग से बना कर अपने द्वार पर बैठा दिया था और शिवजी ने उनका सिर काट डाला। पीछे महादेवजी

ने हाथी का सिर जोड़ कर गणेशजी को जिला दिया। तब से वह गजानन हो गए। जो मनुष्य नाना प्रकार के नैवेद्य से गणेशजी की पूजा करता है, उसको मरने के पश्चात् शिव लोक मिलता है।

शिवपुराण—(ज्ञानसंहिता, ३२ वां अध्याय) एक समय श्री पार्वतीजी गृह में स्नान करती थीं। नंदी द्वार पर स्थित था। उस के निषेध करने पर शिवजी उस को घुड़क कर भीतर चले आए। पार्वतीजी लज्जित होकर स्नान से निवृत्त हो उठ बैठीं। उस समय उन्हों ने विचार किया कि एक ऐसा श्रेष्ठगण होना चाहिये जो मेरी आज्ञा में दृढ़ रहे। ऐसा विचार उन्हों ने हाथ के जल से अपनी देह का मैल उतार कर उससे एक सुन्दर पुत्र निर्माण किया और द्वार पर बैठा कर उससे कह दिया कि तुम किसी को भीतर मत आने दो। बालक द्वार पर स्थित हुआ। पार्वती जी सखियों सहित स्नान करने लगीं। उसी समय श्री महादेवजी अपने गणों सहित वहां आकर भीतर प्रवेश करने लगे। बालक ने उनको रोका और नहीं मानने पर दंड से उनको ताड़ना किया। शिवजी अपने गणों से बोले कि इस को निवारण करो और आप कैलास से एक कोस दूर जा बैठे। बालक ने शिव के गणों पर दंड से प्रहार किया। तब उन्हों ने शिव जी के निकट जाकर यह वृतांत कह सुनाया। महादेवजी की आज्ञा से वे गण बालक के पास फिर आए और उनको समझाने लगे। पार्वतीजी ने कलवल शब्द सुन कर अपनी सखी को बालक के पास द्वार पर भेजा। सखी ने देख कर सब वृतांत पार्वती से कह सुनाया और यह भी कहा कि यदि द्वार पर हमारे गण नहीं होता तो शिवजी के सब गण भीतर आजाते। पार्वतीजी की आज्ञा से सखी ने द्वार पर जाकर बालक से कहा कि हे भद्र! तुम ने अच्छा काम किया कि इन को बल से प्रवेश करने नहीं दिया। तुम ऐसा करो कि या तो तुम को परास्त करके या विनय करके वे लोग भीतर आवें। बालक शिव के गणों से बोले कि हे श्रेष्ठों! मैं पार्वतीजी का पुत्र और तुम लोग शिव जी के गण हो; जो कर्तव्य हो सो करो। अब तुम या तो मुझे जीत कर या विनय करके मन्दिर में जाओ। ऐसा सुन गणों ने शिवजी के पास जाकर सब वृतांत कह सुनाया। (३३ वां

अध्याय) शिवजी ने उनको युद्ध करने की आज्ञा दी। वे आकर लड़ने लगे। बालक ने सब को परास्त किया। शिव के सब गण भाग गए। उसी समय ब्रह्माजी विष्णुजी और इंद्र वहां आए। ब्रह्माजी बालक को समझाने के लिये उसके निकट गए। बालक ने उनको शिवका अनुचर जानकर उनकी डाढ़ी मुंछ उखाड़ ली और उन पर परिघ का प्रहार किया। तब श्रीमहादेवी की आज्ञा से इंद्रादिक देवता और षण्मुख आदिक गण जाकर चारो ओर से बालक पर शस्त्र चलाने लगे। उस समय पार्वतीजी ने दो शक्ति निर्माण की। उन्होंने शत्रुओं के सब आयुधों को ग्रहण कर अपने मुख में डाल लिया। बालक ने हाथ में परिघ लेकर सब को परास्त किया। यह सुनकर शिवजी देवताओं की सेना के सहित संग्राम में आए। विष्णु भगवान भी वहां उपस्थित हुए। विष्णु को माया करते हुए देख कर दोनों शक्तियां लीन हो गईं। विष्णु गणेश से युद्ध करने लगे। दोनों परस्पर लड़ते थे; इसी अन्तर में शिवजी ने त्रिशूल से उस बालक का सिर काट डाला। नारद ने पार्वती के पास जाकर सब समाचार कह सुनाया। (३४ वां अध्याय) पार्वती ने क्रोध करके सहस्रों शक्तियों को उत्पन्न किया। वे प्रलय करने की इच्छासे देवताओं को पकड़ कर अपने मुख में डालने लगीं। भय के मारे ब्रह्मादिक देवता पार्वती के पास जाने में कोई-समर्थ न हुए! तब नारद आदि ऋषिगण गिरीजा के पास जा कर विनय करके क्षमा मांगने लगे। पार्वतीजीने कहा कि यदि मेरा पुत्र जीवित होजाय और तुम लोगों के बीच में यह पूजनीय होयं और सब का अध्यक्ष बने तो जगत् का विनाश नहीं होवेगा। ऋषियोंने विष्णु आदिक देवताओं के निकट जाकर यह वृत्तान्त कह सुनाया। सब की सम्मति होने पर देवता लोग विधि पूर्वक बालक के कलेवर को धो कर उसका पूजन करके उत्तर दिशा में गए। प्रथमहीं उनको एक दांत का हाथी मिला। तब वे लोग उसका सिर काटकर लाये। उन्होंने उसको बालक के धड़ में लगा दिया। ब्रह्मा, विष्णु और शिवजीने जब वेद के मन्त्र से अभिमंत्रित किया, तब सुन्दर अङ्ग युक्त श्रेष्ठबालक उठ बैठा। पार्वतीजी प्रसन्न होकर अपनी शक्तियों को प्रलय करने से निवारण किया। सब शक्तियां उनकी देहमें लीन

होगईं। ब्रह्मा, विष्णु और शिवजी बालक से बोले कि बेटे अब से तुम हम तीनों के समान पूजित होगे और मनुष्य पहले तुम्हारा पूजन करके पीछे हम लोगों की पूजा करेंगे। इसके उपरान्त सब देवताओं ने मिल कर पार्वतीपुत्र को गणो का स्वामी अर्थात् गणेश बनाया।

मुण्डकटा गणेश से १¼ मील पर एक झरना और २¼ मील पर गौरी कुण्ड है। गौरी कुण्ड के पहले खड़े पहाड़ से गिरता हुआ एक झरना मिलता है। सोन प्रयाग से आगे ¼ मील तक कठिन चढ़ाई है। सोन प्रयाग से गौरीकुण्ड तक मन्दाकिनी के निकट के पहाड़ और उसकी घाटी बड़े बड़े वृक्षों के हरे जङ्गल से ऐसे भरी है कि दूर से पर्वत के पत्थर नहीं देख पड़ते और करारे के ऊपर से बहुतेरी जगह मन्दाकिनी का जल नहीं देख पड़ता।

गौरीकुण्ड।

गौरीकूण्ड चट्टी पर पत्थर से बने हुए और फूस के छप्पर से छाए हुए मोदियों के लगभग २० मकाने हैं। तीन दुकानों पर पूरी मिठाई विकती है।

वहां गरम जल का एक झरना है, जिसका कुछ पानी मन्दाकिनी में और कुछ जल पीतल के गोमुखी होकर तप्तकुण्ड में गिरता है और कुण्ड से निकल कर मन्दाकिनी में चला जाता है। तप्तकुण्ड लगभग १७ फीट लम्बा और इतनाही चौड़ा चौखुंटा कुण्ड है। कुण्डका जल इतना गरम है कि बहुतेरे यात्री जल स्पर्शकर लेते हैं। जो साहस करके कुण्ड के जल में कूदता है। वह बहुत समय तक उसमें नहीं ठहर सकता; किन्तु उस जलसे जलने का कुछ भय नहीं है। तप्तकुण्ड से दक्षिण गौरीकुण्ड नामक खारा जल का एक कुण्ड है, जिसमें यात्रिगण प्रथम स्नान करते हैं।

कुण्ड से दक्षिण एक छोटे ओसारे में पांच छ हाथ लंबा उमामहेश्वर नामक शिला है। उसके निकट गौरी के छोटे मन्दिर में गौरी, महादेव, राधाकृष्ण और ज्वालाभवानी की मूर्तियां स्थित हैं। उस मन्दिर के समीप दो तीन अत्यन्त छोटी कोठरियों में शिवजी, गरुड़जी आदि देवताओं की प्रतिमाएं और मन्दिर के पीछे अमृतकुण्ड नामक मीठे जल का अत्यन्त छोटा १ कुण्ड है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—स्कन्दपुराण-(केदारखण्ड, प्रथमभाग ४२ वां अध्याय)। केदारेश्वर से ६ कोस दक्षिण मन्दाकिनी नदी के तीर पर सब सिद्धियों को देनेवाला गौरी तीर्थ है। जिस स्थान पर पूर्वकाल में श्रीगौरीजी ने ऋतु स्नान किया, वह स्थान गौरी तीर्थ करके प्रसिद्ध हो गया। स्कन्द के उत्पत्ति के स्थान पर थोड़ा सा गर्म जल है और सिन्दूर के समान मृतिका है। उसी स्थान पर गौरीश्वर महादेव विराजित हैं। जो मनुष्य वहां स्नान करके उस स्थान की मृतिका अपने सिरपर लगाता है, वह महादेवजी का बड़ा प्रिय होता है। उसके दक्षिण गोरक्षाश्रम तीर्थ में सिद्ध गोरखनाथ नित्य निवास करते हैं। वहां का जल सर्वदा तप्त रहता है।

स्वामकार्तिकजी के जन्म की कथा महाभारत वनपर्व २२५ वें अध्याय, शल्यपर्व ४४ वें अध्याय, और अनुशासनपर्व ८५ वें अध्याय; वाल्मिकि रामायण-बालकाण्ड ३६ वें सर्ग; मत्स्यपुराण १५७ वें अध्याय; पद्मपुराण-स्वर्गखण्ड १४ वें अध्याय और लिङ्गपुराणके ७१ वें अध्याय में है। (भारतभ्रमण-चौथेखण्ड के कुमारस्वामी की प्राचीन कथा देखो)

चीरवासा भैरव।

गौरीकुण्ड से आगे एक झरना और मन्दाकिनी के उस पार एक बहुत बड़ा झरना; १½ मील पर छोटे छोटे ४ झरने और २ मील पर एक कोठरी में चीरवासा भैरव की मूर्ति है। कोठरी के पास कपड़े के टुकड़े लगे हुए बहुतेरे रिंगाल, जो बांस की कइन के समान होते हैं, खड़े किए हुए हैं। गौरीकुण्ड से आगे बाएं के पर्वत पर छप्पर छाने योग्य खर कतरे और दहिने मन्दाकिनी के उस पार के पर्वत पर हरे वृक्षों का सघन वन देख पड़ता है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—स्कन्दपुराण-(केदारखण्ड, प्रथमभाग, ४२ वां अध्याय) गौरीतीर्थ के पूर्व भागमें चीरवासा नामक भैरव क्षेत्र की रक्षा करते हैं। जो मनुष्य उनको चीर चढ़ता है, उसको सम्पूर्ण पुण्य करने का फल मिलता है। वस्त्र नहीं चढ़ाने से उसका संपूर्ण फल भैरव हरलेते हैं; इसलिये

प्रयत्न से भैरवजी का पूजन करके केदार क्षेत्र में जाना चाहिए। उसी पर्वत पर कालीजी की मूर्ति है; उनको नमस्कार करके क्षेत्रमें जाना उचित है।

चिरवासा भैरव से आगे साधु की एक गुफा और १ छोटा झरना; ¼ मील पर पर्वतके शिखरसे गिरता हुआ १ वड़ा झरना, उससे आगे १ गुफा; १¼ मील पर १ छोटा झरना और साधु की झोंपड़ी; १½ मील पर छोटा झरना; १¾ मील पर पर्वत के शिखर से गिरते हुए २ वड़े झरने और २ मील पर भीम गोड़ा नामक स्थान पर एक पत्थर पर खोदी हुई भीमकी वड़ी मूर्ति है। उससे आगे १ वड़ा झरना और चट्टान के नीचे वड़ी वड़ी ४ गुफा हैं। भीमगोड़ा से ¼ मील आगे शिखर से गिरता हुआ वड़ा झरना; उससे आगे तीन चार छोटे वड़े झरने और ½ मील पर रामवाड़ा चट्टी है। चट्टी पर पहुंचने से पहले एक वहुत वड़ा झरना मिलता है। चीरपटभैरव से रामवाड़ा तक मन्दाकिनी के उसपार आठ जगह पर्वत के ऊपर से खुले हुए वड़े वड़े झरनों का पानी गिरता है।

रामवाड़ा चट्टी—वहां पत्थर की दिवार और फूस के छप्पर वाले मोदियों के पन्द्रह वीस मकान और एकवड़ा झरना है। मन्दाकिनी की धारा ऊंचे से नीचे जोर शोर से गिरती है। पानी चट्टी के पास है। पूरी मिठाई की कई दूकानें हैं। वहां जाड़े के दिनों में कोई नहीं रहता।

गौरीकुण्ड से रामवाड़ा तक प्रायः सर्वत्र कठिन चढ़ाई और पत्थरीली और ठोकर वाली राह है। उस ओर मन्दाकिनी की घाटी में विचित्र लतावृक्ष और पुष्प देखने में आते हैं। वुरांस (विलायती गुलाव के समान), सेवती, मालती, पीतचम्पक, कर्णिकार, गुलचीनी, आदि पुष्प जंगल की छवि को वढ़ाते हैं।

रामवाड़ा से थोड़े आगे कई झरने; १¼ मील पर एक झरना; २ मील पर खुला हुआ वड़ा झरना, और इस से आगे ऐसाही एक वड़ा झरना; २½ मील पर एक वड़ा झरना और मन्दाकिनी के उस पार पर्वत के ऊपर कुवेर भण्डार; ३¼ मील पर खुला हुआ एक वड़ा झरना; ३½ मील पर एक वड़ा झरना; ४¼ मील पर मन्दाकिनी और सरस्वती का संगम; और ४½मील पर केदारनाथ हैं।

रामवाड़ा से २ मील तक पत्थरोली, टोकरवाली और चढ़ाई की सड़क है; उससे आगे की सड़क सुगम है और दो तीन जगह पर्वत के शिखर से गिरते हुए बड़े बड़े झरनों के पानी पर दो तीन हाथ ऊंचा वर्फ जम गया है। चौड़ी वर्फ के नीचे पानी बहता है और ऊपर से सम्पूर्ण यात्री जाते हैं। उस के आगे से मन्दाकिनी की घाटी में भोजपत्र के वृक्ष देख पड़ते हैं। जहां से वर्फिस्तान आरंभ होता है उसी जगह भोजपत्र के वृक्ष होते हैं; कम ऊंचे पहाड़ों पर इसके वृक्ष कदापि नहीं होते। केदारनाथ पहुंचने से एक मील पहले केदारनाथ का मन्दिर देख पड़ता है और उस से आगे नीचा ऊंचा मैदान मिलता है, जिस पर जगह जगह पानी बहता है। रामवाड़ा से चलने पर जितने आगे जाते हैं उतने पर्वत के शिखरों पर अधिक वर्फ देख पड़ता है। वर्फ के पास लता वृक्ष कुछ नहीं है। रामवाड़ा से केदारनाथ तक मन्दाकिनी के उस पार के पर्वत से वहुतेरे झरनों का पानी नदी में गिरता है।

सोनप्रयाग से केदारनाथ तक कोई वस्ती नहीं है; जाड़े के समय में गौरी-कुण्ड पर एक पुजारी रहता है। यात्रा के दिनों में चट्टियों पर मोदी आजाते हैं। गुप्तकाशी से केदारनाथ की तरफ क्रम क्रम सर्दी अधिक होती है। गौरीकुण्ड से आगे पानी में दाल नहीं गलती और जल से प्यास नहीं बूझता। जाड़े के दिनों में सोनप्रयाग से ऊपर के सब लोग उखीमठ, शोणितपुर आदि वस्तियों में चले आते हैं।

कुवेरभण्डार—रामवाड़ा और केदारनाथ के मध्य में मन्दाकिनी नदी के वाएं पर्वत के ऊपर, जिसको कुवेरपर्वत कहते हैं, कुवेरभण्डार नामक एक गुफा है, जिसमें पत्थर के कई तख्तों पर पुराने समय के अक्षर लिखे हुए हैं; जो पढ़े नहीं जाते। उससे उत्तर थोड़ी दूर पर पत्थर का हाथी है। लोग उस स्थान को इन्द्रपर्वत और हाथी को अर्जुन का लाया हुआ ऐरावत हाथी कहते हैं। दोनों स्थानों की निशानी मन्दाकिनी के दहिने से देख पड़ती है। वहां आषाढ़ श्रावण में वर्फ गल जाने पर कमल का फूल और जटामांसी होती है। उस समय पण्डे लोग और कोई कोई यात्री वहां जाते हैं। निर्मल आकाश रहने पर वहां से गुप्तकाशी ऊखीमठ और शोणितपुर देख पड़ता है।

केदारनाथ

पांच नदियों का सङ्गम—केदारनाथ पहुंचने से १/४ मील पहले सङ्गम मिलता है, जिस में सम्पूर्ण यात्री स्नान करते हैं। वहां सरस्वती, मन्दाकिनो, दूधगङ्गा, स्वर्गद्वारी, और महोदधि इन पांच धाराओं का सङ्गम है। स्नान के स्थान के पास दूधगङ्गा, उससे उत्तर सरस्वती और आधा मील दक्षिण महोदधि और स्वर्गद्वारी मन्दाकिनी में मिलगई हैं। वहां मन्दाकिनी पर छोटा पुल है। मन्दाकिनी और सरस्वती के संगम के पास संगमेश्वर शिव लिंग हैं। मन्दाकिनी नदी केदारनाथ के पीछे वाले कैलास नामक पहाड़ से निकल कर ५० मील दक्षिण वहने के उपरान्त रुद्रप्रयाग में अलकनन्दा नदी में मिलगई है। केदारनाथ के यात्री रुद्रप्रयाग से १८ मील भीरीचट्टी तक मन्दाकिनी के बाएं किनारे और वहां से केदारनाथ तक ३२ मील दहिने किनारे आते हैं। मन्दाकिनी के किनारे पर बहुतेरे छोटी छोटी गुफा और बड़े बड़े ढोंके और घने, हरित और मनोहर जङ्गल हैं। अगस्त्यचट्टी, भीरीचट्टी, कुण्डचट्टी, गौरीकुण्ड, रामवाड़ा, केदारनाथ और इनके सिवाय और दो चार जगह मन्दाकिनी का पानी मिलता है। दूसरी जगहों में पानी के पास जानेका रास्ता नहीं है।

मैं हरिद्वार से चलने पर १७ वे दिन हरिद्वार से १४६१/५ मील केदार पुरी में पहुंचा। गढ़वाल जिले में समुद्र के जल से ११००० फीट से अधिक ऊंचाई पर वर्फदार महापंथ नामक चोटी के नीचे मन्दाकिनी और सरस्वती दोनों नदियों के मध्य में अर्धाकार भूमि पर केदार पुरी है। दक्षिण से उत्तर तक करीव २०० गज लम्बी सड़क के दोनों ओर लगभग६०बड़े बड़ेपक्के मकान बने हैं। मकानों के ऊपर लकड़ी के तख्ते बिछाकर खर के छप्पर दिए गए हैं। इनमें १८ धर्मशाले हैं। बहुतेरे मकानों के भीतर सरदी से वचने के लिये तख्ते विछाए गए हैं। किसी किसी मकानों के पास भूमि पर वैशाख जेष्ठ तक वर्फ जमा रहती है। वहां एक इन्दौर के महाराज का और दूसरा झुंझुनुवाले सूर्य्यमल का सदावर्त और पांच छ पूरी और पेड़े की दूकानें हैं। इस वर्ष

यहां पूरी आठ आने सेर, आटा छ आने सेर, चावल सात आने सेर, पेड़ा एक रुपये सेर है। लकड़ी बड़ी महंगी बिकती है।

केदारपुरी के उत्तर छोर पर केदरनाथ का सुन्दर मन्दिर है। मन्दिर के सिरे पर छोटी बारहदरी की तरह २० द्वार की चकूटी है। चकूटी के ऊपर सोनहुला कलश और उसके भीतर मध्य में मन्दिर के शिखर का कलश है। मन्दिर के भीतर दिवारों के पास ४ पाये हैं और मध्य में तीन चार हाथ लम्बा और डेढ़ हाथ चौड़ा केदार नाथ का अनगढ़ स्वरूप है। उस के ऊपर एक जगह भैंसे के डील के समान ऊंचा है। ऊपर से बड़ी जलधरी और चान्दी का बड़ा छत्र लटका है। यात्रीगण केदारनाथ पर आगे की तरफ जल चढ़ा कर उनको स्पर्श करके चन्दन, मेवा, अक्षत, पेड़ा, बेलपत्र, रुपये, पैसे से उनकी पूजा करते हैं। पण्डे लोग श्रावण में कमल के फूल चढ़ाने का सङ्कल्प यात्रियों से कराते हैं। श्रावण में कुबेरपर्वत पर कमल का फूल होता है। केदारनाथ के स्वरूप के पीछे के भाग पर घी मलकर अंकमालिका की जाती है। यात्री लोग कड़ा, अंगूठी और कंगन जो खरीद कर के अपने साथ ले जाते हैं, उनको केदारनाथ का स्पर्श कराकर अपने घर ले आते हैं।

मन्दिर के आगे पत्थर का ऊंचा जगमोहन बना हुआ है। उसकी छत्त ढालुआं और पाखवाली है। उसके चारो ओर एक एक दरवाजे और मध्य में ४ पाये हैं। जगमोहन की दिवार में पश्चिमोत्तर युधिष्ठिर, पूर्वोत्तर नकुल और सहदेव, पूर्व-दक्षिण भीम और दक्षिण-पश्चिम द्रौपदी और अर्जुन की बड़ी बड़ी मूर्ति हैं। जगमोहन के मध्य में पीतल का छोटा नन्दी और दक्षिण के द्वार पर बड़े बड़े घंटे और बाहर पत्थर का पुराना बड़ा नन्दी और दोनों ओर २ द्वार पालक हैं। जगमोहन के आस पास दस पन्द्रह देव मूर्तियां हैं।

मन्दिर और जगमोहन के बीच में एक छोटा देवढ़ है, जिसमें पूर्व ओर पार्वती और गणेश और पश्चिम लक्ष्मी की मूर्ति है। मन्दिर में अन्धकार रहता है, इसलिये दिन में भी दीप जलाए जाते हैं। केदारनाथ की शृंगार मूर्ति पांच मुखवाली है। वह समय समय पर वस्त्र भूपणों से भूपित कर केदारनाथ के ऊपर रक्खी जाती है।

मन्दिर के पीछे दो तीन हाथ लम्बा अमृत कुण्ड है, जिसमें दो शिवलिंग स्थित हैं और पूर्वोत्तर बहुत छोटे छोटे एक हंसकुण्ड और दूसरा रेतसकुण्ड है। रेतसकुण्ड में तीन आचमन दहिने हाथ से, तीन बांए हाथ से और तीन अंजुली से और जंघा पृथ्वी पर रख कर किया जाता है। उस कुण्ड के समीप ईशानेश्वर महादेव हैं। उससे पश्चिम एक बहुत छोटा सुफलक कुण्ड है। केदारनाथ के मन्दिर के आगे थोड़ी दूर पर सोनहरे कलशवाले एक छोटे मन्दिर में दो अढ़ाई हाथ लम्बा उदक् कुण्ड है, जिसमें रेतसकुण्ड के समान आचमन किया जाता है। उस मन्दिर के पीछे घड़ा डुवाने के योग्य मीठे पानी का एक छोटा कुण्ड है, जिसका पानी सब लोग पीते हैं।

केदारपुरी जाड़े के दिनों में बर्फ से ढकी रहती है। मेष (वैशाख) की संक्रान्ति से पन्द्रह बीस दिन पीछे केदारनाथ के मन्दिर का पट खुलता है और वृश्चिक (अगहन) की संक्रान्ति के लगभग बन्द हो जाता है। वहां के रावल अर्थात् पुजारी उखीमठ में और पण्डेलोग शोणित पुर अपने घरों को चले जाते हैं। इस वर्ष में मेष की संक्रान्ति से १२ दिन पीछे वैशाख सुदी १२ को मन्दिर खुला है। मन्दिर बन्द होनेपर केदारनाथ की पूजा ऊखीमठ में होती है। मन्दिर का खर्च जागीर और पूजा की आमदनी से चलता है। केदार नाथ के रावल दक्षिणी जङ्गम हैं। इनके पुत्र मरवाल जाति कहे जाते हैं। केदारनाथ की आमदनी लेने का इन को स्वतन्त्र अधिकार है। यात्रा के दिनों में भी रावल उखीमठहीं में रहते हैं। उनके कर्मचारी केदारनाथके काम को करते हैं। रावल धनी हैं। रावल के बाद उसका चेला रावल होता है। केदारलिंग के मरने पर गणेशलिंग रावल हुआ है।

वहां नदियों के ऊंचे नीचे मैदान के चारो ओर बर्फ मय पहाड़ है। केदारनाथ पहाड़ की सब से ऊंची चोटी समुद्र से २२८५० फीट ऊंची है। वैशाख जेठ में भी भूमि पर जगह जगह वर्फ रहती है। जाड़े के कारण रात में मकान से बाहर आदमी नहीं रह सकते हैं; बहुतेरे यात्री दर्शन करके उसी दिन रामबाड़ाचट्टी को लौट आते हैं। कोई २ एक रात्रि वहां रह जाते हैं। वहां भैरवझांप करके प्रसिद्ध पर्वतके नीचे एक स्थान है, जहां पहले ऊपर से कूद

कर कोई२ यात्री आत्मघात करते थे। सन १८२९ ई० से अंगरेजी सरकार ने इस चाल को रोक दिया है। पूर्ववाले वर्फ मय पर्वत के उस पार से वासुकीगंगा निकल कर सोनप्रयाग में मन्दाकिनी से जा मिली है।

हिमालय पर गढ़वाल जिले में ५ केदार हैं—(१) केदारनाथ, (२) मध्यमेश्वर (३) तुंगनाथ, (४) रुद्रनाथ और (५) कल्पेश्वर। इन का वृतांत आगे लिखा जायगा।

संक्षिप्तप्राचीन कथा—व्याससमृति--(चौथा अध्याय) केदारतीर्थ करने से मनुष्य सब पापों से छूट जाता है।

महाभारत—(शल्यपर्व, ३८ वां अध्याय) जगत्में ७ सरस्वती हैं,—(१) पुष्कर में सुप्रभा, (२) नैमिषारण्य में कांचनाक्षी, (३) गया में विशाला (४) अयोध्या में मनोरमा, (५) कुरुक्षेत्र में ओघवती, (६) गंगाद्वार में सुरेणु और (७) हिमालय में विमलोदका। (शान्तिपर्व्व—३५ वां अध्याय) महाप्रस्थान यात्रा अर्थात केदाराचल पर गमन करके हिमलाय पर चढ़ के प्राण त्याग करने से मनुष्य सुरापान के पाप से विमुक्त हो जाता है। (वनपर्व ८३ वां अध्याय) कपिस्थल (केदार) कुण्ड में स्नान करनें से सब पाप भस्म हो जाता है। वहां से शरक तीर्थ पर जाना चाहिए। वहां कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी में शिव के दर्शन करने से स्वर्ग मिलता है। जलरहित स्थान में ऊंचे पहाड़ के ऊपर से गिरने या जलती हुई अग्नि में प्रवेश करने अथवा महाप्रस्थान यात्रा अर्थात केदाराचल पर गमन करके हिमालय में चढ़ कर प्राण त्याग करने से मनुष्य सुरापान के पाप से छूटजाता है।

लिंग पुराण—(९२ वां अध्याय)जो पुरुप सन्यास ग्रहण करके केदार में निवास करता है, वह दूसरे जन्म में पाशुपत योग को प्राप्त करता है।

वामनपुराण—(३६ वां अध्याय)जहां साक्षात् वृद्धकेदार संज्ञक देव स्थित हैं; उस कपिस्थल तीर्थ में स्नान करके पीछे डींडी नाम से विख्यात रुद्र के पूजन करनै से मनुष्य शिव लोक में अनायास जाता है। जो मनुष्य वहां तर्पण करके डींडी देव को नमस्कार करता है, वह केदार के फल को पाता है।

पद्मपुराण— (पातालखण्ड—९१ वां अध्याय) कुंभराशि के सूर्य्य और बृहस्पति होने पर अर्थात गुरुवादित्य योग के समय केदार का स्पर्श मोक्ष दायक होता है।

गरुड़पुराण—(पूर्वार्द्ध, ८१ वां अध्याय) केदारतीर्थ संपूर्ण पापों का नाश करने वाला है।

कूर्मपुराण—(उपरीभाग, ३६ वां अध्याय) महालयतीर्थ में स्नान करके महादेवजी के दर्शन करने से रुद्रलोक मिलता है। शंकरजी का दूसरा सिद्ध स्थान केदारतीर्थ है, जहां स्नान करके श्रीमहादेवजी का अर्चन करने से प्राणी को स्वामित्वपदवी प्राप्ति होती है और श्राद्ध, दान आदि कर्म करने से अक्षय फल मिलता है।

सौरपुराण—(६९ वां अध्याय) केदार नामक स्थान भगवान शंकरजी का महातीर्थ है। जो मनुष्य वहां स्नान कर के शिवजी का दर्शन करता है, वह गणों का राजा होता है।

ब्रह्मवैवर्त्तपुराण—(कृष्णजन्मखण्ड, १७ वां अध्याय) केदार नामक राजा सतयुग में सप्तद्वीप का राज्य करता था। वह बहुत काल राज्य करने के पश्चात् जैगीषव्य के उपदेश से अपने पुत्र को राज्य दे वन में जाकर श्रीहरि का तप करने लगा और बहुत काल तप करने के उपरांत गोलोक में चला गया; उसी के नाम के अनुसार वह तीर्थ केदार नाम से प्रसिद्ध होगया। राजा केदार की पुत्री वृंदा ने, जो कमला के अंश से थी, अपना व्याह नहीं किया; वह गृह छोड़ वन में जाकर तप करने लगी और सहस्र वर्ष तप करके श्री कृष्ण भगवान के सहित गोलोक में चली गई। जिस स्थान पर वृंदा ने तप किया, वही स्थान वृंदावन के नाम से प्रसिद्ध होगया।

शिवपुराण—(ज्ञान संहिता, ३८ वां अध्याय) शिवजी के १२ ज्योतिर्लिंग विराजमान हैं; उन में से केदारेश्वर लिंग हिमालय पर्वत पर स्थित है। (४७ वां अध्याय) भरतखण्ड के बदरिकाश्रम मंडल में भगवान नर नारायण रूप से सर्वदा निवास करते हैं और लोक के कल्याण के निमित्त नित्य तप करते हैं। एक समय उन्हों ने हिमालय के केदारनामक शृंग पर शिवलिंग

स्थापन करके बड़ा तप किया। शिवजी प्रकट होकर बोले कि हे आर्यों! तुम-लोगोंकी जो इच्छा हो वह वर मांगो। तब नर और नारायण बोले कि हे देव! यदि तुम प्रसन्न हो तो जगत् के मंगलके लिये इस स्थानपर विराजो। ऐसा सुन सदाशिवने ज्योतिरूप होकर केदार में निवास किया। उसी दिन से वह केदारेश्वर नाम से प्रसिद्ध हुए। वहां सम्पूर्ण ऋषीश्वर और देवता उनकी पूजा करते हैं। जो मनुष्य केदारेश्वर का दर्शन करता है उसे स्वप्न में भी दुःख नहीं होता। जो केदारेश्वर का खडुआ अर्थात् कंकण धारण करता है वह शिवजीका प्रिय होता है। उसके दर्शन से मनुष्य सब पापों से छूट जाते हैं। केदारेश्वर के दर्शन करने वाला मनुष्य जीवनमुक्त हो जाता है। जो केदारे-श्वर का दर्शन नहीं किया उसका जन्म निरर्थक है।

बड़ा शिवपुराण—(उर्दू अनुवाद, ८ वां खण्ड, २७ वां अध्याय) जब युधिष्ठिर आदिक पाण्डव अपने गोत्र वध के पाप छुटकाने के लिये केदारे-श्वर के दर्शन करने के अर्थ केदारतीर्थ में गए, तब शिवजी भैंसे का रूप धर वहां से भाग चले। पाण्डवों ने अति प्रेम से शिवजी से विनय किया कि हे नाथ! तुम कृपा करके हम लोगों का पाप दूर करो और इस स्थान में स्थित हो जाओ। तब महाराज शंकर अपने पिछले धड़से उसी स्थान पर स्थित हुए, जिनके दर्शन से पाण्डु के पुत्रों का सब दुःख निवृत्त हो गया और अगले धड़ से नैपाल में जा विराजे।

स्कन्दपुराण—(केदारखण्ड, प्रथम भाग, ४० वां अध्याय) युधिष्ठिर आदि पाण्डवगण गोत्र हत्या और द्रोणादिक गुरुजनों के मारने के अपराध से पीड़ित और सन्तप्त हृदय हो कर व्यासजी के शरण में गए और बोले कि हे भगवान! हम लोग गोत्र हत्या और गुरु वध के पाप से किस भांति विमुक्त होंगे। व्यासदेव बोले कि हे पाण्डव! शास्त्र में गोत्र हत्या करने वालों की प्रायश्चित नहीं है। विना केदार भवन में जाने से यह पाप नहीं छूटेगा; तुम लोग वहांही जाओ; वहां अनेक धाराओं से गङ्गा नदी बहती हैं और उमा और गणों के सहित साक्षात् महादेवजी निवास करते हैं; वहां मृत्यु होने से मनुष्य शिवरूप हो जाता है; वही महापथ ब्रह्महत्यादिक पापों

का निवारण करता है। पांडव लोग व्यासदेव के आदेशानुसार केदार में जा कर उस तीर्थ के सेवन से शुद्ध हो गए।

गंगाद्वार से लेकर श्वेत पर्यन्त तमसा नदी के तट से पूर्व बौद्धाचल तक ५० योजन लंबा और ३० योजन चौड़ा स्वर्ग का मार्ग केदारमण्डल है, जिसमें मृत्यु पाने से पशु भी शिवलोक में निवास करता है। केदार मंडल में अनेक तीर्थ, सैकड़ों शिवलिंग, सुन्दरवन, नाना प्रकार की नदियां, बहुतेरे नदियों के संगम, बहुतेरे पुण्यक्षेत्र तथा पुण्यपीठ विद्यमान हैं।

महाक्षेत्र में ये धारा प्रधान है :—(१) मधुस्त्रर्णधारा, जिसको लोग मधुगंगा कहते हैं, (२) क्षीर के समान वहने वाली क्षीरधारा, (३) श्वेतवर्ण की स्वर्गद्वारधारा, (४) मन्दाकिनी नदी और (५) केदारालय में केदारधारा; जो शेष धारा से निकली है।

(४१ वां अध्याय) मनुष्य केदारपुरी में मृत्यु पाने से निःसन्देह शिवरूप हो जाता है। केदारपुरी में जाने की इच्छा करनेवाले मनुष्य भी लोक में धन्य हैं; उनके पितर ३०० कुलों के सहित शिवलोक में चले जाते हैं। केदारक्षेत्र सब क्षेत्रों में उत्तम है।

(४२ वां अध्याय) शिवजी के दक्षिण दिशा में रेतसकुण्ड है, जिसका जल पीने से मनुष्य शिवरूप हो जाता है। महातीर्थ के नीचे के भाग में मन्दाकिनी के तट पर शिवकुण्ड है, जिसमें स्नान करने से शिवलोक मिलता है। कपिल नामक शिव के दर्शन करने से मोक्ष मिलता है। मनुष्य वहां ७ रात्रि उपवास करके प्राण त्यागने से शिव सायुज्य पाता है। जिस स्थान से धारा निकली है उस से ऊपर पापियों को मुक्ति देनेवाला भृगुतुङ्ग तीर्थ है। महापातकी मनुष्य भी भृगुतुङ्ग से श्रीशिला पर गिर कर प्राण छोड़ने से परब्रह्म को पाता है। उस तीर्थ के ऊपरी भाग में २ योजन पर हिरण्य गर्भ तीर्थ में वूले के समान रक्तवर्ण गुप्त जल निकलता है, जिसके स्पर्शमात्र से लोहादिक धातु स्वर्ण हो जाते हैं। उसके उत्तर स्फटिक लिङ्ग है, जिसके पूर्व ७ पद पर वह्नीतीर्थ में बर्फ के बीच अग्नि मय जल विद्यमान है। उसमें घृत की आहुति करना चाहिए। उस से उत्तर ओर आश्चर्य दृश्य है। वहां पर्वतके

अग्र शिखर से भूतल में जल गिरता है, जिसके कण शरीर पर परने से मनुष्य मुक्त हो जाता है। उसी स्थान पर भीमसेन ने मुक्ताओं से श्रीमहादेवजी की पूजा की थी। वहां पुण्यात्मा पुरुष जाते हैं। उससे आगे महापथ है, जहां जानेसे मनुष्य आवागमन से रहित हो जाता है। वहांही सात प्राकारों से वष्टित सदाशिवजी का धाम है; महाभैरव हाथ में दण्ड ले कर गणों का पालन करते हैं और महादेवजी सर्वदा निवास करते हैं। जो मनुष्य सर्वदा कहता है कि मैं महापथ में जाकर प्राण त्याग करूंगा वह महाराज शंकर का बड़ा प्रिय है।

मधुगंगा और मन्दाकिनी के संगम के पास क्रौंच तीर्थ और क्षीरगंगा और मन्दाकिनी के संगम पर ब्राह्मय तीर्थ है। उसके दक्षिण बुदबुदाकार जल देख पड़ता है। शिवजी के वाम भाग में इंद्र पर्वत है। उसी स्थान पर इंद्रने अपनी स्थिति के लिये महादेवजी का तप किया था। वहां एक शिवलिंग है। केदारनाथ के स्थान से १० दण्डपर हंसकुंड है, जहां ब्रह्माने हंस रूप से जाकर रेत पान किया था। तभी से वह हंसकुंड के नाम से प्रसिद्ध हुआ; उसमें पितरों के श्राद्धकरने से वे परम पद को जाते हैं। जो मनुष्य केदारनाथ का दर्शन करके रेतसकुण्ड का जल पीता है, उसके हृदय में शिवजी स्थित हो जाते हैं; वह पापी भी हो; किसी स्थान में किसी समय में मरे; किन्तु शिवलोक में निवास करेगा। केदारपुरी से भीमशिला तक महादेवजी का शय्या है।

चौथा अध्याय।

(गढ़वाल जिले में) उखीमठ, मध्यमेश्वर, तुंगनाथ, मंडलगांव, रुद्रनाथ, गोपेश्वर, चमोली, आदिबदरी, कल्पेश्वर, वृद्धबदरी, जोशीमठ, भविष्यबदरी, विष्णुप्रयाग, पांडुकेश्वर, योगबदरी और बदरीनाथ।

उखीमठ

मैं एक रात्रि केदारपुरी में निवासकर दूसरे दिन वहां से लौटा। केदारपुरी

से सोनप्रयाग १२ मील, पाटीगाड़ नदी (त्रियुगीनारायण का मार्ग छोड़कर) १३¼ मील, और नालाचट्टी २८½ मील है। यात्री-गण नालाचट्टी से जिस मार्ग होकर केदारपुरी जाते हैं उसी राहसे नालाचट्टी लौट आते हैं। नाला-चट्टी से गुप्तकाशी की सड़क दहिने छूटजाती है।

नालाचट्टी से ¼ मील छोटा झरना, १¼ मील एक बड़ा झरना और १½ मील पर १३० फीट लंबा और ३½ फीट चौड़ा मन्दाकिनी नदी पर लोहे का पुल है। छोटे झरने से पुल तक कड़ी उतराई है। वहां से मन्दाकिनी के बाएं किनारे चलने पड़ता है। पुल से १¼ मील और नालाचट्टी से २¾ मील पर उखीमठ है। पुल से उखीमठ तक कड़ी चढ़ाई है।

उखीमठ—पहले सफाखाना और डाकखाना मिलते हैं, जिनके पास तीन चार हाथ ऊंचे ११ शिव मंदिर हैं। सफाखाने से बहुत सीढ़ियां लांघ-कर बड़ा मन्दिर के पास पहुँचना होता है।

गुप्तकाशी के विश्वनाथ के मन्दिर के समान ऊखीमठ में एक शिखरदार मन्दिर है। उसका द्वार दक्षिण मुख वाले जगमोहन में पश्चिम मुख से है। मन्दिर में ओंकारनाथ शिव लिंग हैं। उनके पूर्व राजा मान्धाता की बड़ी मूर्ति और आस पास कई देव मूर्तियां हैं। जगमोहन पत्थर के सुन्दर टुकड़ों से छाया हुआ है, जिसमें उत्तर की ओर तीन सिंहासनों में बदरीनाथ, केदारनाथ, तुंगनाथ, पार्वती, आदि की सुन्दर शृङ्गार युक्त धातु मूर्तियों का दर्शन होता है। मन्दिर और जगमोहन में अन्धकार रहता है। दीपक द्वारा देवताओं का दर्शन होता है। जगमोहन के आगे चार खंभों के गुम्मजदार मंडप में नन्दी की पुरानी मूर्ति है।

मन्दिर से पूर्व उत्तर मुख की कोठरी में, जिसका द्वार पश्चिम मुख की कोठरी में है, ऊखा और अनिरुद्ध की मूर्तियां और धातू के पत्तर पर चीत्र-रेखा की मूर्ति है। आगे वाली कोठरी में पांच सात शिवलिंग और कई देव मूर्तियां और कोठरी से बाहर बहुत प्राचीन मूर्तियां हैं।

ओंकारनाथ के मन्दिर से पश्चिम केदारनाथ के रावल का दो मंजिला

मकान है। उसके नीचे के एक कमरे में केदारनाथ की गद्दी है। गद्दी के पास चित्रित सोनहले सिंहासन पर पंच मुखी महादेव हैं जिनका एक मुख मण्डल सोना का और एक चान्दी का और छत्र सुनहला है। शिव के पास में वस्त्र और भूषणों से सजी हुई पार्वतीजी की सुन्दर मूर्ति विराजमान है। जाड़े के दिनों में केदारनाथ के पट वन्द होजाने पर उनकी पूजा उसी जगह होती है। दूसरे कमरे में कुन्ती और द्रौपदी की मूर्तियां और धातु के पत्तरों पर युधिष्ठिर आदि पांडवों की मूर्तियां हैं और ऊपर एक कमरे में गरुड़ की मूर्ति है।

ओंकारनाथ के मन्दिर के पश्चिम रावल का मकान है और तीन ओर दो मंजिले दोहरे मकान और धर्मशाले वनी हैं। बीच में बड़ा आंगन है। मकानों में सोना, चांदी, वर्तन, कपड़ा और जिन्स की दुकानें रहती हैं।

उखीमठ में सफाखाना, डाकखाना, पुलिस की चौकी, छोटी वाजार, कड़े और कंगन वनाने वाले लोहार और कई झरने हैं। वस्ती के समीप मैदान नहीं है। वस्ती से थोड़ा दक्षिण दस पंद्रह घर की दूसरी वस्ती है। उखीमठ का रावल केदारनाथ, गुप्तकाशी, उखीमठ, तुंगनाथ, आदि मंदिरों का अधिकारी है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—स्कंदपुराण—(केदारखंड, उत्तर भाग, २४ वां अध्याय) गुप्तकाशी के पूर्व मंदाकिनी नदी के दूसरे पार (अर्थात् वाए) राजा नल ने राज सुख त्याग कर तप और राज राजेश्वरी देवी का पूजन किया था। वहां के नलकुण्ड में स्नान करने से जन्म भर का संचित पाप नष्ट होजाता है। सूर्यवंशी राजा युवनाश्व का पुत्र राजा मान्धाता ने उस स्थान पर तप करके परम सिद्धि प्राप्त किया था।

मध्यमेश्वर।

पंचकेदारों में से एक मध्यमेश्वर हैं। उखीमठ से लगभग १५ मील मध्यमेश्वर का मन्दिर है। राह में अहरियाकोट के पास कालीनदी; उस से आगे कालीमठ, कालशिला और राकीदेवी का मन्दिर मिलता है। मध्यमेश्वर

का पक्का मन्दिर बना हुआ है। मन्दिर के निकट धर्मशाला है। मार्ग में खाने का सामान नहीं मिलता। साथ में जिन्स लेजाना पड़ता है और फिर ऊखीमठ आकर के बदरीनाथ की ओर जाना होता है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—स्कंदपुराण— (केदारखण्ड, प्रथमभाग, ४७ वां अध्याय) शिवजी के ५ क्षेत्र हैं;—(१) केदारनाथ, (२) मध्यमेश्वर, (३) तुङ्गनाथ, (४) रुद्रालय और (५ वां) कल्पेश्वर। इनमें से केदारेश्वर का वर्णन हो चुका। केदारपुरी से ३ योजन दक्षिण मध्यमेश्वर क्षेत्र है, जिसके दर्शन मात्र से मनुष्य स्वर्ग में निवास करता है।

पूर्व समय में गौड़देश का एक ब्राह्मण मध्यमेश्वर के दर्शन की इच्छा करके गंगाद्वार में गया; वह वहां से गंगाजल लेकर मन्दाकिनी के तट में अगस्त्य आदि मुनियों को नमस्कार और अनेक तीर्थों का दर्शन करता हुआ शिव क्षेत्र में पहुंचा; उसने वहां से मध्यमेश्वर क्षेत्र में जा कर मध्यमेश्वरजी के समीप ३ रात्रि जागरण और सरस्वती में स्नान और पितरों का तर्पण किया। मार्ग में उस ब्राह्मण के दर्शन से एक राक्षस शिवरूप हो कर कैलास में चला गया। ब्राह्मणने अपने घर जाकर सब भोगों को भोगने के पश्चात् अंत कालमें ब्रह्म सायुज्य पाया।

(४८ वां अध्याय) मनुष्य मध्यमेश्वर क्षेत्र में सरस्वती के दर्शन मात्र से पापों से छूट जाता है और उसमें स्नान करने से आवागमन से रहित हो जाता है। उस स्थान में पितर लोगों को जल और पिण्डदान देने से सब पितर मुक्ति पाते हैं।

पोथीबासा चट्टी—ऊखीमठ से ½ मील एक झरना; १¼ मील एक बस्ती, जहांसे, मन्दाकिनी के दहिने पर्वत के ऊपर शोणितपुर देख पड़ता है; १½ मील पर मन्दाकिनी और गंगाका संगम, जहां से मन्दाकिनी छोड़ कर आकाश गंगा के दहिने किनारे चलना होता है; २½ मील पर बहुत छोटा एक मन्दिर; २¾ मील पर ४ छप्पर की गणेशचट्टी; ३ मील पर झरना; ३¾ मील पर बड़ा झरना; ४ मील पर एक झरना और कठारी प्यालावाले बढ़ई की दुकान;

४½ मील पर आठ दस छप्पर की दुर्गा चट्टी, जहां एक बड़ा झरना और आकाश गंगा नदी पर काठ का पुल है, जिससे नदी पार होते हैं; ५¾ मील तीन छप्पर की छोटी दुर्गाचट्टी, एक झरना और शिखर पर दो बस्ती; उससे आगे कटारी प्याले की दुकान; ६¾ मील बस्ती और खेत का मैदान और ऊखीमठ से ७¾ मील पर पोथी वासा चट्टी है।

ऊखीमठ से गणेशचट्टी तक सुगम चढ़ाई, गणेशचट्टी से दूर्गाचट्टी तक सुगम उतराई और दूर्गा चट्टी से छोटी दूर्गाचट्टी तक कड़ी चढ़ाई है। छोटी दूर्गाचट्टी से जंगल की विचित्र हरियाली, राह के दोनों ओर बड़े बड़े घने वृक्ष और सेवती और जंगली सेमल आदि कई तरह के वृक्षों का जंगल मिलता है। इस तरफ भालू का कुछ भय रहता है। छोटी दूर्गाचट्टी से पोथी वासा तक जगह जगह कड़ी चढ़ाई; ठोकर वाली राह और छोटी छोटी गुफा है।

पोथीवासा बड़ी चट्टी है। वहां मोदियों की बड़ी बड़ी पक्की दुकानें और एक झरना है। वहां से तुंगनाथ पर्वत की सर्दी आरंभ होती है और आकाशगंगा नदी बाएं छूट जाती है।

पोथीवासा से ¼ मील आगे छोटा झरना, १½ मील एक झरना और २ मील पर एक पहाड़ की चोटी पर कुन्दन चट्टी है। वहां ऊंचा नीचा मैदान और एक झरना है।

वहां वर्षा अधिक होती है, इसलिये वहां के बहुतेरे वृक्षों पर सेवार और वारना नामक बँयर लग गये हैं। बरसात में वहां के वृक्ष बादलों से ढंप जाते हैं। वहां पर्वत के नीचे बादल देख पड़ते हैं। कुन्दन चट्टी से आगे पोथी वासा से २½ मील पर वन के मैदान में दो झरने और ३ मील पर चौपत्ता चट्टी है।

चौपत्ताचट्टी—चौपत्ताचट्टी पर मैदान में एक पक्की धर्मशाला, मोदियों के बारह चौदह पक्के मकान और दो एक झरने हैं। पोथीवासा से चौपत्ताचट्टी तक जगह जगह कड़ी चढ़ाई है। उस से आगे दहिने चमोली को और बाएं तुंगनाथ को सड़क गई है।

तुंगनाथ

यह पंच केदार में से तीसरा है । तुंगनाथ की चढ़ाई कड़ी है। अधिकांश यात्री तुंगनाथ को छोड़ कर सीधीराह से चमोली जाते हैं। झम्पान वाले सवार से तुंगनाथ की चढ़ाई का इनाम लेते हैं।

चौपत्ताचट्टी से आगे एक मील पर बाएं ओर नीचे मैदान और भेड़वालों के दो छप्पर हैं। उस से आगे सर्दी से पेड़ नहीं जमे हैं। चट्टी से १½ मील आगे से पर्वत के शिखर के पास तुंगनाथ का मन्दिर और शिखर के सिर पर चन्द्रशेखर का मन्दिर देख पड़ता है। समीप में ऊपर और पहाड़ के नीचे धूआं के समान वादल देख पड़ते हैं। चट्टी से २¼ मील पर ढाई हाथ ऊंचे मन्दिर में गणेश की मूर्ति और २½ मील पर तुंगनाथ का मन्दिर है। सड़क चौड़ी है, पर चढ़ाई बहुत कड़ी है। रास्ते में पानी नहीं मिलता।

तुंगनाथ का प्राचीन मन्दिर पत्थर के मोटे मोटे ढोकों से पश्चिम मुख का बना हुआ है। मन्दिर के शिखर पर १६ द्वार की वारहदरी के भीतर मन्दिर का गुम्मज है। तुंगनाथ पतला अनगढ़ शिवलिंग हैं। लिंग के पूर्व डेढ़ दो हाथ ऊंची शंकराचार्य्य की मूर्ति स्थित है। मन्दिर के आगे पत्थर के बड़े बड़े ढोकों से बना हुआ और पत्थर के मोटे तख्तों से छाया हुआ जगमोहन, जिस का द्वार आगे के पाख में है, बना हुआ है। जगमोहन के आगे पुराना नन्दी और गणेश जी हैं। मन्दिर से पूर्व दो कोठरी, एक छोटा शिवमन्दिर; दक्षिण एक कोठरी, एक छोटा मन्दिर, ६ अत्यंत छोटे मन्दिर और १ धर्मशिला और पश्चिम एक कोठरी, दो बड़ा घर, और एक बहुत छोटा मन्दिर है। मन्दिर के पासही दक्षिण-पश्चिम एक छोटे मन्दिर में पार्वती की मूर्ति और ईशान कोण पर नीचे एक छोटा झरना है। लोग कहते हैं कि तुंगनाथ का मन्दिर शंकराचार्य्य का बनाया है।

वहां ३ ब्राह्मण पुजारी हैं। वह स्थान ऊखीमठ के रावल के अधीन है। जाड़े के दिनों में वहां के पुजारी मन्दिर का पट वन्द करके वहां से १२ मील पर मकूमठ को चले जाते हैं। पहाड़ के नीचे, ऊपर और मन्दिर के आस पास

धूँआ के समान बादल देख पड़ते हैं। वहां जाड़ा अधिक पड़ती है। मन्दिर के पास एक गुफा है, जिस में वर्षा के पानी से बहुत आदमी बंच सकते हैं। वहां कोई मोदी नहीं रहता। उस स्थान से उत्तर की ओर ऊंचे पहाड़ों पर बर्फ देख पड़ता है। उस पर्वत की चोटी पर तुंगनाथ से एक मील दूर चंद्रशेखर शिव का मन्दिर है।

पश्चिम से तुंगनाथ जाकर दक्षिण ओर उस पहाड़ से उतरना होता है। उतराई की राह खड़ी और संकरी है। झम्पान के सवार झम्पान से उतर कर चलते हैं। २½ मील उतरने के पीछे चार पांच छप्परवाली तुंगनाथ चट्टी मिलती है। वहां ही नीचे की चौपत्ताचट्टी वाली सड़क मिल जाती है। उस स्थान से १½ मील पीछे की ओर चौपत्ताचट्टी है।

संक्षिप्तप्राचीन कथा—स्कंदपुराण—(केदारखण्ड, प्रथमभाग, ४९ वां अध्याय) मान्धाताक्षेत्र (अर्थात उखीमठ) से दक्षिण ओर २ योजन लम्बा और २ योजन चौड़ा तुंगनाथ क्षेत्र है, जिस के दर्शन मात्र से मनुष्य का सब पाप छूट जाता है और उसको शिवलोक मिलता है। प्रथम भैरव को नमस्कार कर के क्षेत्र में प्रवेश करना उचित है। तुंगनाथ के पूजन करने वालों को तीनों लोक में कोई वस्तु दुर्लभ नहीं है। वहां ब्रह्मादिक देवता सर्वदा महेश्वर की स्तुति करते हैं। मनुष्य जल की जितने कणिका शिवलिंग पर चढ़ाते हैं वह उतने हजार वर्ष तक शिव-लोक में निवास करते हैं। बिल्वपत्र से तुंगनाथ की पूजा करने वाले एक कल्प तक शिव लोक में बसते हैं। अगम्यागमन करनेवाला मनुष्य भी तुंगनाथ क्षेत्र में जाने से विमुक्त हो जाता है।

(५० वां अध्याय) तुंगनाथ क्षेत्र के आकाशगंगा के तीर पर पितरों का तर्पण करने से २१ कुल शिवलोक में निवास करते हैं और वहां पिंडदान करने से पितरगण कृतकृत्य होजाते हैं। वहां दान करने से असंख्य फल लाभ होता है। जो मनुष्य तुंगेश्वर के ऊंचे शिखर पर ३ उपवास करके अपने प्राणों को त्यागता है वह अवश्य शिव रूप होजाता है। शिव जी के पास ही पश्चिम स्फटिक का लिंग है, उसके दक्षिण गरुड़ तीर्थ है, उससे चौथाई कोस पश्चिम मानसर नामक सरोवर है, जिसके उत्तर भाग में मर्कटेश्वर शिव स्थित हैं।

जिनके दर्शन मात्र से मनुष्य शिव लोक में निवास करता है। उस के दक्षिण भाग में मृकंडऋषि के आश्रम में महेश्वरी देवी विराजती हैं।

पांगरचट्टी—तुंगनाथचट्टी से ½ मील पर भीमचट्टी और एक झरना; १½ मील पर जंगलीचट्टी और २ झरने और २¼ मील पर पांगरचट्टी है। वह बड़ी चट्टी है। वहां एक पक्की धर्मशाला, मोदियों के बहुत मकान, कठारी प्याले बेचनेवालों की ३ दूकानें और २ झरने हैं। तुंगनाथचट्टी से पांगरचट्टी तक मार्ग के दोनों तरफ बड़े बड़े वृक्षों का जंगल है।

पांगरचट्टी से आगे एक मील पर २ झरने; २ मील पर जगह जगह छोटे छोटे ४ झरने और २¾ मील पर कई झरने और वालासोती नदी का किनारा है। उसके थोड़े आगे से दो रास्ते हैं। यात्री को ऊपर की राह छोड़ कर नीचे के रास्ते से जाना चाहिए। पांगरचट्टी से ३¼ मील पर वालासोती नदी के किनारे मण्डलचट्टी है। तुंगनाथ चट्टी से वहां तक उतराई का मार्ग है।

मण्डलचट्टी—मण्डलचट्टी पर मोदियों के वहुत मकान, मैदान, झरना और कड़े अंगूठी वेचने वाले लोहार हैं। दो पर्वतों के नीचे बड़े मैदान में वालासोती नदी वहती है। नदी के किनारे पर खेत का मैदान है। यात्री लोग काठ का पुल पार हो नदी के बाएं किनारे चलते हैं।

मंडलगांव

मंडलचट्टी से ½ मील आगे एक दूसरी नदी पर पुल है। वह नदी अनसूया और अमृतकुण्ड से आकर मंडल गांव के पास वालासोती नदी में मिल गई है। मंडलचट्टी से ¾ मील आगे दोनों नदी के संगम के निकट मंडल गांव, जिस को ब्रह्मकोटी भी कहते हैं, वसा हुआ है। वहां के संगम को लोग व्योमप्रयाग कहते हैं। ऐसा प्रसिद्ध है कि पूर्व काल में राजा सगर ने वहां अश्वमेध यज्ञ किया था। पहले वहां बहुत मन्दिर थे। अब भी एक देवी का मन्दिर, एक कुण्ड और पांच छ बड़े छोटे मन्दिर हैं। उस स्थान को मंडल

तीर्थ कहते हैं। उस स्थान से ¼ मील आगे मंडोली गांव के पास एक पक्की सरकारी धर्मशाला है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—वाल्मीकि रामायण—(बालकाण्ड-७० वां सर्ग) सूर्य्यवंश में राजा असित हुए, जिनको हैहय, तालजंघ और शशविन्दु ये तीनों राजाओं ने युद्ध में पराजित करके राज्य से निकाल दिया। तब राजा असित अपनी दो पत्नियों के सहित थोड़ी सी सेना संग ले हिमवान पर्वत पर जाकर रहने लगे और कुछ समय के पश्चात् काल धर्म को प्राप्त हुए। उसकाल में उनकी दोनों स्त्रियां गर्भिणी थीं। एक ने दूसरी का गर्भ नाश करने के लिये उसको गरल अर्थात् विप दिया। उस समय उस पर्वत पर भार्गव च्यवन नामक मुनि तप करते थे। उन स्त्रियों में से एक ने, जिस का नाम कालिन्दी था, जाकर मुनि को प्रणाम किया। मुनि के आशीर्वाद से गर के सहित कालिन्दी का पुत्र उत्पन्न हुआ, इसलिये उस पुत्र का सगर नाम पड़ा। (३८ वां सर्ग) अयोध्या के अधिपति राजा सगर सन्तति हीन थे। राजा को केशिनी और सुमती नामक २ स्त्री थीं। महाराज सगर दोनों पत्नियों के साथ हिमवान पर्वत के भृगुप्रश्रवण प्रदेश में जाकर तप करने लगे। १०० वर्ष तप करने के पश्चात् भृगुमुनि ने प्रसन्न हो सगर को वरदिया, जिससे अयोध्या में आने पर केशिनी को एक पुत्र और सुमती को ६० सहस्र पुत्र हुए।

शिवपुराण—(११ वां खण्ड – २१ वां अध्याय) जब अयोध्या के राजा बाहु पर हैहय, तालजंघ और शक ये तीनों राजा राक्षसों के सहाय सहित चढ़ धाए और राजा को परास्त कर आप राज करने लगे; तब राजा बाहु ऊर्जमुनि के शरण में जाकर रहने लगे और वहीं मर गए। राजा की बड़ी रानी गर्भवती थी। छोटी रानी डाह से उस को विप देदिया; लेकिन रानी न मरी; उस को ऊर्ज मुनि के आश्रम पर एक पुत्र जन्मा। मुनि ने बालक को विप सहित जन्मा हुआ देख कर उस का नाम सगर रक्खा। राजा सगर शिवजी की प्रसन्नता और ऊर्जमुनि की सहायता से शत्रुओं का विनाश कर उन पर प्रबल हुआ। फिर सगर ऊर्ज मुनि को गुरु बना कर अश्वमेध यज्ञ करने लगे, जिस में उन के ६० हजार पुत्र कपिलजी की दृष्टि से जल गए।

(यह कथा स्कंदपुराण, केदारखण्ड, प्रथमभाग के २७ वें और २८ वें अध्याय में और विष्णुपुराण, चौथे अंश, के चौथे अध्याय में भी है)

रुद्रनाथ

यह पंचकेदारों में से चौथा है। मंडलगांव के पासवाले पुल के पास से एक पहाड़ी राह गई है। उस राह से अनुसूयादेवी का मन्दिर दो मील पर और रुद्रनाथ का मन्दिर १२ मील पर है। वहां वर्फ वहुत है, इस से वदरीनाथ के विरले यात्री वहां जाते हैं। रुद्रगंगा रुद्रनाथ के पास से निकल कर उस स्थान से दक्षिण की ओर जाकर पीपलकोटी चट्टी से २½ मील आगे अलकनन्दा में मिलगई है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—स्कंदपुराण—(केदारखंड प्रथम भाग, ५१ वां अध्याय) सदाशिवजी रुद्रालय क्षेत्र का त्याग कभी नहीं करते हैं। क्षेत्र के दर्शन मात्र से मनुष्य का जन्म सफल होजाता है। मनुष्य वहां शिवजी के दर्शन करने से संसार में नाना प्रकार के सुख भोग कर अंतकाल में शिवलोक में निवास करता है।

पूर्व काल में देवताओं ने अन्धकासुर से पराजित हो हिमालय पर रुद्रालय में जाकर शिव से अपना दुःख कह सुनाया और उनसे यह वर मांगा कि तुम सर्वदा इस स्थान पर निवास करो। महादेवजी वोले कि हे देवताओं! मैं अंधकासुर को मार कर तुम लोगों को सुखी करूंगा और अपने गणों और पार्वतीजी के सहित सर्वदा यहां निवास करूंगा। उसके पश्चात् देवता सव अपने अपने स्थान को चलेगए।

(५२ वां अध्याय) महालय (अर्थात् रुद्रक्षेत्र) में पितरों को तारने वाली वैतरणी नदी वहती है; वहां पितरों के पिंडदान देने से कोटि गया के समान फल मिलता है। उसी क्षेत्र में संपूर्ण आभरणों से विभूषित शिवजी का सुन्दर मुखमंडल है, जिसके दर्शन मात्र से मनुष्य मुक्त होजाते हैं।

पूर्व काल में युधिष्ठिर आदि पांडवगण गोत्र हत्या के पाप से छुटकारा पाने के अर्थ शिवजी को ढूंढते हुए केदार पुरी में आए। शिवजी उनको

पाप युक्त देखकर पृथ्वी में प्रवेश करके दूर देश में चले गए; किंतु वे लोग उनके पवित्र पृष्ठ का स्पर्श करके सब पापों से विमुक्त होगए। वही पृष्ठ भाग अद्यापि केदारपुरी में स्थित है और उनका मुखमंडल महालय अर्थात् रुद्र क्षेत्र में विराजमान है, जिनके दर्शन करने से मनुष्य सब पापों से छूटकर शिव सायुज्य पाते हैं।

गोपेश्वर।

मण्डल गांव से आगे २ मील पर झरना, ३¼ मील पर झरना, ३½ मील पर वीरभद्र नामक छोटी चट्टी, ४ मील पर एक छोटा झरना, ४¼ मील पर बड़ा झरना, ४¾ मील पर वीरा नदी और वालासोती नदी का संगम और ५¼ मील गोपेश्वर है। मण्डलगांव के १¼ आगे से नदी की घाटी का मैदान छोड़ कर पहाड़ पर चढ़ना होता है। वीरभद्र चट्टी वीरागंगा नामक नदी के किनारे है वहां से वीरानदी के बाएं किनारे पर चलना होता है। घाटी से गोपेश्वर तक सुगम चढ़ाई उतराई है।

गोपेश्वर का शुद्ध नाम गोस्थल है। उस देश की बड़ी बस्तिओं में से गोपेश्वर एक बस्ती है। उसमें एक मंजिले दो मंजिले वीस पचीस पक्के मकान, मोदियों की २ दुकानें, १ दो मंजिला धर्मशाला, गोपेश्वर का बड़ा मंदिर और चण्डीका १ छोटा मंदिर है। बदरीनाथ और केदारनाथ के रास्ते में हृषीकेश और काठगोदाम के बीच में केवल उसी जगह ९ हाथ का गहरा एक कूप है। उसमें लोटा डुबाने लायक खारा पानी है। बस्ती से ¼ मील उत्तर (पीछे की तरफ) एक छोटे मंदिर के पास ३ झरने हैं। सब लोग उन्हीं का पानी पीते हैं। चमोलीचट्टी पास में होने के कारण वहां यात्री कम टिकते हैं। मन्दिर का पुजारी उसी बस्ती का रहने वाला है।

गोपेश्वर का मन्दिर एक बड़े चौगान के मध्य में खड़ा है। चौगान के चारो ओर मकान और धर्मशाले हैं और भीतर पत्थर का फर्श लगा है। वह पुराना मन्दिर लगभग ३० फीट लम्बा और उतनाही चौड़ा सादेवनावट का पूर्वमुख से स्थित है। मन्दिर के शिखर पर २४ द्वार की वारह दरी है।

गोपेश्वर शिव लिंग के पास में चांदी की शृंगार मूर्ति, पश्चिम पार्वती की मूर्ति और धातु के पत्तरों पर बहुतेरी देव मूर्तियां हैं और बाहर पीतल का बड़ा गरुड़ और कई देवता हैं। आगे के जगमोहन में, जो लम्बा पाखवाले घर के समान है, गणेश और पुराना बड़ा नन्दी है। मन्दिर के बाहर पश्चिमोत्तर चिन्तामणि गणेश के पास खरिक के मोटेवृक्ष पर और पद्म के पतले पेड़ पर लपटी हुई, कल्पलता नामक वंवर है। वंवर बहुत पुरानी है और सब ऋतुओं में फूल देती है, इस लिये उसको लोग कल्प लता कहते हैं। मन्दिर से बाहर चौगान के भीतर पूर्वोत्तर के कोने के पास लगभग ९ हाथ ऊंचा लोहे का या मिले हुए धातुओं का शिव का त्रिशूल खड़ा है। उसके खड़े डंडे में एक फरसा लगा है। त्रिशूल के डंडे पर एक पुराने अक्षरका और दूसरा देवनागरी अक्षर का लेख है। देवनागरी अक्षर पीछे का जान पड़ता है और साफ है। त्रिशूल के समीप गंगाजी की छोटी मूर्ति है।

एक चढ़ाव की नई राह गोपेश्वर से पूर्व ओर हाटचट्टी के निकट जाकर चमोलीवाली राह में मिल गई है। बदरीनाथ के यात्री गोपेश्वर से दक्षिण चमोली में जाकर चमोली से पूर्वोत्तर घुमाव की राह से हाटचट्टी पहुंचते हैं। पंचकेदारों में से रुद्रनाथ गोपेश्वर से केवल १२ मील दूर है; किन्तु वह पगडंडी का कठिन मार्ग है; इस कारण से केवल पहाड़ी लोग उस मार्ग से रुद्रनाथ जाते हैं।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—स्कन्दपुराण—(केदारखण्ड, प्रथम भाग ५५ वां अध्याय) अग्नितीर्थ के पश्चिम भाग में गोस्थल नामक स्थान है, जहां पार्वतीजी के सहित श्रीमहादेवजी सर्वदा निवास करते हैं। वहां महादेवजी पशुपीश्वर नाम से प्रसिद्ध हैं। उस स्थान में शिवजी का आश्चर्य जनक त्रिशूल है, जो बल पूर्वक हिलाने से नहीं डोलता और एक पुष्पवृक्ष है, जो अकाल में भी सदा पुष्पित रहता है। उस स्थान में सावधानता पूर्वक ५ रात्रि जप करने से देव दुर्लभ सिद्धि प्राप्त होती है और प्राणत्याग करने से शिवलोक में निवास होता है। उस स्थान के पूर्व दिशा में झसकेतु नामक महादेव हैं। पूर्वकाल में शिवजी ने इसी स्थान पर कामदेव

को भस्म किया था और काम की स्त्री रति ने शिवजी को प्रसन्न करके दूसरे जन्म में काम को रूपवान किया था; तभी से इस स्थान पर शिवजी रतीश्वर नाम से प्रसिद्ध होगए। वहां रतिकुण्ड है, जिसमें स्नान करने से शिवलोक मिलता है।

चमोली।

गोपेश्वर से आगे ½ मील पर बाएं ओर एक बहुत छोटा मन्दिर और दहिनी ओर बालासोती नदी के किनारे पर एक बस्ती; १ मील पर अलकनन्दा और कुछ दूर दहिनी ओर अलकनन्दा और बालासोतो का संगम; १½ मील पर अलकनन्दा के दहिने किनारे पर कोटाल गांव नामक छोटी बस्ती और २ मील पर चमोली है, जिसको लोग लालसांगा भी कहते हैं।

गोपेश्वर से चमोली तक मार्ग उतराई का है। केदारनाथ को छोड़ कर बदरीनाथ जानेवाले यात्री रुद्रप्रयाग से अलकनन्दा के किनारे किनारे चमोली जाते हैं। वहां से अलकनन्दा के दहिने किनारे से चलना पड़ता है। चमोली से पीछे की ओर नन्दप्रयाग ७ मील, कर्णप्रयाग १९½ मील और रुद्रप्रयाग ४१½ मील और आगे की ओर बदरीनाथ ५४¼ मील पर हैं।

चमोली में पक्का बाजार, अस्पताल, मन्दिर और अलकनन्दा पर लोहे का लटकाऊ पुल था, जो सन् १८९४ ई० में गोहना झील के टूटने पर बिरही नदी के पानी से सब बह गए, अब किसी का चिन्ह नहीं है। उस समय चमोली में अलकनन्दा का जल १६० फीट ऊंचा हुआ था। अब अलकनन्दा पर बरहे का झूला बना है। झूले का महसूल झंपान का चार आने और आदमी का एक पाई लगता है। झंपान के सवार पैदल झूले से नदी पार होते हैं और पहाड़ी आदमी असबाब की गठरी पार कर देते हैं। झूले से ½ मील आगे अलकनन्दा के किनारे पर मोदियों के मकान बन रहे हैं। वहां अलकनन्दा और एक झरना का पानी है। दुकानों पर साधारण वस्तुओं के अतिरिक्त कस्तूरी, शिलाजित आदि पहाड़ी चीजें भी मिलती हैं। कोई कोई यात्री जरूरत से अधिक अपना असबाब वहां मोदियों के पास रख देते हैं।

अलकनन्दा के उस पार डिपटीकलक्टर की कचहरी, पुलिस, डाकखाना, अस्पताल और एक मोदी है।

केदारनाथ से बदरीनाथ जाने वाले यात्रियों को चमोली के पास अलकनन्दा के पार उतरना नहीं पड़ता; किंतु बदरीनाथ से लौटने पर उतरना होता है। चमोली से २ मील आगे तक ३ झरने, उस पार खड़े पहाड़ से गिरता हुआ बड़ा झरना और २½ मील के आगे एक छोटी नदी के पास, जिस पर काठ का पुल है, मठचट्टी है। पुल के पार एक बस्ती, १ दुकान और १ झरना है। उससे आगे चमोली से ३¼ मील आगे पर दो छप्पर की १ छोटी चट्टी और १ झरना; ४ मील आगे बौलानी नामक ४ छप्पर की छोटी चट्टी, १ छोटी नदी और पनचक्की का घर; और ४¾ मील आगे बिरही और अलकनन्दा का संगम है। चमोली से २ मील आगे तक तंग रास्ता है। चमोली से मठचट्टी तक रास्ते के किनारे छोटे छोटे वृक्षों का जंगल है।

बिरही नदी और अलकनन्दा का संगम—बिरही नदी पूर्व से आकर अलकनन्दा से बाएं किनारे पर मिल गई है। संगम के पास बालू का मैदान होगया है। इसी नदी के पानी से यहां से हरिद्वार तक के अलकनन्दा और भागीरथी के किनारों के प्रायः सब बस्ती, बाजार, मन्दिर, सड़क और पुल बह गए।

संगम से ७ मील पूर्व बिरही नदी के किनारे पर गोहना गांव है। यह छोटी नदी गोहना से पांच सात मील उत्तर से आई है। सन् १८९३ ई० के ता० ६ सितम्बर के दिन गोहना गांव के पास पर्वत का ४०० गज ऊंचा शृंग बिरही नदी में गिरगया। उसी के गिरने से नदी का प्रवाह रुक गया। बिरही के एक किनारे से दूसरे किनारे तक प्रायः १½ मील चौड़ा और २ मील लम्बा पत्थर और मट्टी का ढेर होगया। पानी रुक जाने से एक बड़ा तालाव बन गया और दिन दिन उसका पानी बढ़ने लगा। उस ताल को कोई बिरही ताल और गोहनागांव के पास रहने से कोई कोई गोहना ताल कहने लगे। सरकार ने भयंकर ताल की भविष्य दशा विचार कर इंजीनियर साहबों को भेजकर लोगों के प्राण बचाने का पूरा प्रबन्ध किया। ताल के पास

इंजीनियर आदि के बंगले, जगह जगह तार घर बाढ़ की ऊंचाई जनाने के लिये आधे मील के फासिले पर पर्वत के किनारों पर ६ फोट ऊंचे चबूतरे और गोहना से हरिद्वार तक तार बने। खबर देनेवाले जगह जगह बैठाए गए। जुलाई के अन्त में नीचे के लोग उठा कर ऊंचे पहाड़ पर बसाए गए। गोहना ताल बढ़ते बढ़ते दो तीन मील चौड़ा, छ सात मील लम्बा और पानी के रोकावके सिर तक ऊंचा हो गया।

सन् १८९४ ई० की तारीख २५ अगस्त शनिवार को १२½ बजे रात को ८५० फीट ऊंचा डाट अर्थात पानी के रोकाव में से ३२० फीट डाट एक दम बह गया। पानी विकराल रूप से आगे दौड़ने लगा। पानी आने पर अलकनन्दा की धारा १२ मील तक पीछे लौट गई। एक घंटे में लगभग २० मील पानी दौड़ने लगा। वह चमोली १ बजे रात में, नन्दप्रयाग १ बज के १९ मिनट पर, कर्णप्रयाग २ बजे, रुद्रप्रयाग २¾ बजे, श्रीनगर ३ बज के ५० मिनट पर और देवप्रयाग में ४¾ बजे पहुंच गया। रविवार सुबह को विरही ताल शान्त हो गया। इस बाढ़ से कोई आदमी और पशु नहीं मरे, पर स्थावर धन का सर्व नाश हो कर गोहना से हरिद्वार तक हा हा कार मच गया।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—स्कंदपुराण—(केदारखण्ड, प्रथमभाग, ५८ वां अध्याय) नंदप्रयाग से १ योजन दूर वशिष्टेश्वर शिवलिंग है। उससे उत्तर ओर त्रिहिका नामक पवित्र नदी बहती है। उससे आगे पापों के विनाश करने वाली विरहवती नदी (जिसको विरही कहते हैं) का दर्शन होता है। महादेवजी ने पूर्व काल में सती के विरह से संतप्त होकर उसी के निकट तप किया था; तभी से उस का नाम विरहवती हो गया। शिवजी के तप करने पर चंडिका ने प्रकट हो कर शिवजी से कहा कि हे देवेश! मैं हिमवान पर्वत के गृह जन्म लेकर फिर तुम्हारी पत्नी हूँगी। उसके उपरांत महादेवजी कैलास में चले गए; किंतु उस स्थान पर एक अंश से विरहेश्वर नाम से स्थित हो गए। वहां स्नान, दान और मृत्यु तीनों का विशेष माहत्म्य है। उसके पूर्व भाग में मणिभद्रसर और दक्षिण भाग में महाभद्रा नदी है। उससे २ कोस पर दंडाश्रम है, जहां दंडनामक सूर्यवंशी राजा ने, जिन के नाम से दंडकारण्य

लोक में प्रसिद्ध है, तप किया था। अलकनन्दा के उत्तर तीर पर विल्वेश्वर महादेव हैं; उसी स्थान पर विना कांटे का एक वेल का वृक्ष है, जिसके फल वैर के समान होते हैं।

हाटचट्टी औरविल्वेश्वर महादेव—अलकनन्दा और विरही के संगम से आगे १/४ मील पर एक झरना और ढोकों के नीचे ३ गुफा; ३/४ मील आगे पहाड़ से गिरता हुआ झरना; १ १/४ मील आगे पर्वत से गिरता हुआ वड़ा झरना, उस से आगे एक छोटा झरना और पीपल के २ वृक्ष और २ १/४ मील आगे हाटचट्टी है। संगम से हाटचट्टी तक अलकनन्दा का पानी गहरा और गंभीर है।

हाटचट्टी पर मोदियों के केवल ३ छप्पर हैं; वहां ३ झरने और पीपल का १ वृक्ष है। गोहना झील के वढ़ने के समय पर्वत के कटि स्थान पर हाटचट्टी से गोपेश्वर तक सीधी सड़क वनाई गई; पर कड़ी चढ़ाई के कारण यात्री उस सड़क से नहीं आते।

हाटचट्टी से आगे वाएं तरफ कुछ दूर पर पक्के मकानों के साथ १ वड़ी वस्ती और सड़क के पास १ छोटी कोठरा में १ देवता और दहिने की तरफ एक कोठरी में विलेश्वर शिव और १/२ मील आगे ५२ फीट लम्वा और ५ फीट चौड़ा अलकनन्दा नदी पर लोहा का पुल है, जो गोहना झील टूटने के पीछे सन् १८९५ ई० में फिर वना। वहां से पुल पार होकर अलकनन्दा के वाएं किनारे चलना होता है। चमोली से अलकनन्दा के वाएं किनारे एक पगदण्डी मार्ग आकर वहां यात्रियों की सड़क से मिल गई है। पुल के पास ३ झरने हैं। चट्टी से ३/४ मील आगे दहिनी ओर १ गुफा, १ १/४ मील आगे दो जगह २ झरने, २ गुफा और थोड़ा मैदान और हाटचट्टी से २ मील पर पीपलकोटी है। ऊखीमठ से वहां तक तीन आने सेर आटा विकता था।

पीपलकोटी चट्टी—चमोली से पुल तक सुगम चढ़ाव उतार की राह है। पुल से मैदान तक ३/४ मील कड़ी चढ़ाई है। पीपलकोटी उसदेश की वड़ी वस्तियों में से एक है। इसकी दुकानें वारहो मास खुली रहती हैं।

श्रीनगर के बाद पीपलकोटी ही में सब जरूरी चीजें मिल सकती हैं। वहां कपड़ा, बरतन, मेवे, मशाला, कागज़, पिंसिल, आदि मनेरी की चीजें; चंवर, शिलाजित, कस्तूरी, निर्विषी, जहरमोहरा, आदि पर्वती चीजें और पूरी मिठाई इत्यादि भोजन की वस्तुएं मिलती हैं। कस्तूरी और चंवर भोट से आते हैं। शिलाजित उस जगह तय्यार होता है। दुकान्दारों के पास नोट बिकजाता है। वहां एक मंजिले, दो मंजिले पचीस तीस पक्के मकान हैं। चट्टी से बाहर दो तीन धर्मशाले, १ नया छोटा शिव मन्दिर, १ नाला, कई झरने, दो तीन गुफों में गरीब लोगों का घर, पनचक्की और चिठी डालने का बक्स है। आस पास खेत का मैदान है। वहां के पहाड़ में स्लेट के पत्थर बहुत हैं। पीपल के नाम से इस चट्टी का यह नाम पड़ा है। एक पीपल के वृक्ष के नीचे एक कोठरी में चतुर्भुज भगवान की मूर्ति है। चट्टी से थोड़ी दूर ऊपर एक दूसरी बस्ती है। पीपलकोटी से बर्फ वाले पहाड़ देख पड़ते हैं और उस से आगे क्रम क्रम सर्दी अधिक पड़ती है।

पीपलकोटी से आगे १/२ मील पर झरना और २१/४ मील पर इस पार १ दुकान और १ झरना और अलकनन्दा के उस पार रुद्रगंगा का संगम है। रुद्रगंगा, उत्तर की ओर रुद्रनाथ से आकर अलकनन्दा के दहिने किनारे मिल गई है। रुद्रनाथ पंचकेदारों में से है। पीपलकोटी से ३१/२ मील आगे गरुड़गंगा है। पीपलकोटी से ३ मील तक सुगम चढ़ाई उतराई की सड़क और अंत में १/२ मील कड़ी उतराई है।

गरुड़गंगा—गरुड़गंगा की धारा पर्वत से नीचे जोर सोर से गिरती है, जिस में यात्री स्नान करते हैं। बहुत लोग गरुड़ को पेड़ा चढ़ाते हैं और सर्प के भय से बचने के लिये नदी के पत्थर के टुकड़े अपने घर लेजाते हैं। केदारनाथ और बदरीनाथ के यात्रियों में से कई आदमी जगह जगह चट्टियों पर गुड़ आदि गरुड़ का प्रसाद यात्रियों को बांटते हैं और यात्री लोग पहाड़ी रास्ता सुगम होने के लिये गरुड़ का नाम लेते हैं। जगह जगह गरुड़ की मूर्ति देख पड़ती है। महाभारत-शान्तिपर्व्व के ३२७ वें अध्याय में लिखा है कि हिमालय पर्वत पर गरुड़जी सदा निवास करते हैं। गरुड़गंगा के पास खड़ी

पहाड़ी में एक गुफा है और एक कोठरी में दहिने गरुड़ और बाएं विष्णु की मूर्ति है। वहां नदी पर काठ का पुल बना है। यह नदी थोड़ी आगे जाकर अलकनन्दा में मिलगई है।

गरुड़गंगा से थोड़े आगे पर्वत से ओरी के समान पानी चूता है; ¼ मील आगे खड़े पर्वत से बड़ा झरना गिरता है, जिस पर काठ का पुल बना है और ½ मील आगे गरुड़गंगाचट्टी है। चमोली से गरुड़गंगाचट्टी तक मार्ग के किनारों पर क्रम क्रम से जंगली वृक्षों की बटती देख पड़ती हैं। नदियों में सफेद, गुलाबी, नील इत्यादि रंग के पत्थर के बहुत चट्टान और टुकड़े देखने में आते हैं।

गरुड़गंगाचट्टी—चट्टी पर आठ दस बड़ी बड़ी पकी दुकानें; कई एक झरने, जिनमें एक बहुत बड़ा है; और एक सरकारी पकी धर्मशाला है, जिस की दीवार पर सन १८७९ ई० लिखा हुआ है। दुकानों पर पूरी मिठाई भी मिलती हैं।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—स्कंदपुराण—(केदारखण्ड, प्रथमभाग, ६७ वां अध्याय) बिलेश्वर के बाद अलकनन्दा के दहिने किनारे पर गरुड़गंगा है, जिस में स्नान करके गरुड़जी की पूजा करने से विष्णु लोक में निवास होता है। जिस स्थान में गरुड़गंगा की शिला रहती है। वहां सर्प का भय नहीं होता। उस नदी के टुकड़े को जल में घिस कर पीने से सर्प का विष उतर जाता है। उसके बाद गणेश नदी मिलती है, जिस में स्नान करने से पापों का नाश होजाता है। वहां सिंदूर के समान मृत्तिका है।

पातालगंगाचट्टी—गरुड़गंगाचट्टी से आगे १¼ मील पर झरना और १½ मील पर बेलचट्टी है जिस को देवदारु चट्टी भी कहते हैं। उस के आस पास पर्वत के ऊपर देवदारु के बहुत वृक्ष हैं, इस से उस का नाम देवदारु चट्टी पड़ा है। वहां मोदियों के बड़े बड़े ६ मकान, झरना और डोलची बनाने वाला है और गरुड़ चट्टी से ३¼ मील पर पातालगंगा चट्टी है। देवदारुचट्टी के आगे ¾ मील चढ़ाई और १ मील कड़ी उतराई है। पातालगंगा से २ मील आगे घुमाव की सड़क है।

पातालगंगा नदी पर पुल बना है। नदी के किनारे बड़े बड़े ८ पक्के मकान, ३ छप्पर से बने हुए मकान, एक कोठरी में गणेशजी की मूर्ति, झरना और नदी का पानी और कई पनचक्की हैं। वह नदी वहां से १ मील आगे जाकर अलकनन्दा से मिल गई है।

पातालगंगा से १½ मील आगे पर्वत के ऊपर गुलावगढ़ वस्ती और गुलाव गढ़ का मन्दिर दूर से दिखाई पड़ता है। लोग कहते हैं कि टिहरी के गुलावसिंह ने वस्ती को वसाया और मन्दिर वनाया था। पातालगंगा से १¾ मील आगे एक झरना और २ मील आगे गुलावकोटी चट्टी है। गरुड़गंगाचट्टी से वहां तक चीड़ के पेड़ों का जंगल है।

गुलावकोटीचट्टी—वहां २ दो मंजिले मकान, २ फूस के छप्पर वाले मकान और २ झरने और नीचे १ वस्ती है।

कुंभारचट्टी—गुलावकोटी चट्टी से १¾ मील आगे छोटी कुँभारचट्टी पर मैदान में १ मोदी का मकान और २¼ मील आगे वड़ी कुँभारचट्टी है। गुलावकोटी चट्टी से ½ मील कड़ी चढ़ाई, ½ मील उतराई, वाद सुगम चढ़ाई उतराई है।

कुँभारचट्टी पर वारह चौदह वड़े वड़े पक्के मकान, १ सरकारी पक्की धर्मशाला और कई झरने हैं। वहां कपड़े, वरतन, मेवा, मसाले और कस्तूरी, शिलाजित, चँवर, आदि पहाड़ी चीजें विकती हैं। भेड़ वकरों और गदहों पर जिन्स लादे हुए भोटिए व्यापारी देख पड़े थे। कुँभारचट्टी के उस पार एक नदी आकर अलकनन्दा में मिली है।

आदिबदरी।

कुँभारचट्टी से ६ मील पश्चिमोत्तर अलकनंदा के उस पार ऊर्जम गांव है, जहां ऊर्जमुनि ने तप किया था। उसी स्थान पर पंच बदरी में से एक आदिब-दरी विराजते हैं। ऊर्जमुनि की कथा मंडल गांव के वृत्तांत में देखो।

कल्पेश्वर।

आदिवदरी से २ मील आगे पंच केदारों में से कल्पेश्वर महादेव का मंदिर है। कुँभारचट्टी से आदिवदरी और कल्पेश्वर का दर्शन करके फिर कुँभार-चट्टी पर लौटकर आगे जाना होता है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—स्कंदपुराण—(केदारखंड, प्रथम भाग, ५३ वां अध्याय) शिवजी के ५ स्थानों में से पांचवां स्थान कल्पस्थल करके प्रसिद्ध है। उसी स्थान पर देवराज इन्द्र ने दुर्वाशाजी के श्राप से श्रीहत होने के पश्चात् महादेवजी का पूजन किया था और पार्वतीजी के सहित महा-देवजी की आराधना करके कल्पवृक्ष पायाथा। तभी से शिवजी कल्पेश्वर नाम से प्रसिद्ध हुए। कथा ऐसी है कि एक समय इन्द्र ऐरावत हस्ती पर चढ़कर कैलास में गया। वहां महर्पि दुवाशी ने एक स्त्री से फूल का माला मांगकर इन्द्र को दिया। इन्द्र ने अभिमान से उस माला को हाथी के मस्तक पर रखदिया। तव दुर्वाशा ऋषि ने माला का तिरस्कार देखकर इन्द्र को शाप दिया कि तुमने लक्ष्मी से प्रमत्त हो मेरा अपमान किया इसलिये तुह्मारी लक्ष्मी तीनों लोक से नष्ट होजायगी। उस समय इन्द्र दंड के समान पृथ्वी में प्रणत होकर महर्षि से वोला कि हे विप्र! मैंने अज्ञान से तुह्मारा अपमान किया इसलिये तुम इसको क्षमा करो। दुर्वाशा वोले कि हे दुर्वुद्धि इन्द्र! मेरा शाप अमोघ है। तुम महादेवजी की आराधना करके फिर अपना पद प्राप्त करो। उसके पश्चात् इन्द्र अपने शत्रुओं से पराजित होकर राज्य पद से च्युत होगया। तीनो लोक से उनकी लक्ष्मी नष्ट होगई। जगत् में हाहाकार मचगया। सव राजा दरिद्र होगए। तव ब्रह्माजी ने सव देवताओं के साथ क्षीरसागर के तट पर जाकर विष्णुजी से जगत का दुख कह सुनाया। विष्णु ने देवताओं से कहा कि तुम लोग इन्द्र को खोजो हम लोग उनके साथ शिवजी की आराधना करेंगे। वायु ने कैलास पर्वत पर अलकनंदा के उत्तर तीर पर श्रीक्षेत्र में मशककेरूप में इन्द्र को देखा। इन्द्र कीलित होकर वहां निवास किये था, इस कारण से उस पर्वत का नाम इन्द्रकील होगया। ब्रह्मादिक सव देवता

इन्द्र के पास आए। इन्द्र मशक रूप छोड़कर देवताओं सहित शिवजी के स्थान में गया।

(५४ वां अध्याय) इन्द्र ने सब देवताओं के सहित उस पर्वत पर १० हजार वर्ष तक शिवजी की आराधना की। ब्रह्मा और विष्णु भी महादेवजी की बड़ी स्तुति की। तब शिवजी प्रकट हुए। ब्रह्मादिक देवताओं ने अपना दुःख उनसे कह सुनाया। महादेवजी की आज्ञानुसार देवताओं ने शिवजी के नेत्र का जल समुद्र में डाल समुद्र को मथ कर लक्ष्मी, कल्पवृक्ष आदि रत्नों को पाया और सब जगत् पूर्ववत लक्ष्मी से युक्त होगया। जिस स्थान पर इंद्रादिक देवताओं ने शिवजी का तप किया, उस स्थान पर शिवजी कल्पेश्वर नाम से विख्यात होगए।

(५५ वां अध्याय) कल्पेश्वर में शिवलिंग के दक्षिण ओर कपिल लिंग है, जिसके दर्शन मात्र से मनुष्य शिवलोक में पूजित होता है। उसके नीचे हिरण्यवती नदी बहती है, जिसके दक्षिण तीर पर भृङ्गीश्वर महादेव हैं, जिसके दर्शन मात्र से एक कल्प तक शिवलोक में वास होता है। उस क्षेत्र का विस्तार २ कोस है।

(५६ वां अध्याय) केदार, मध्यमेश्वर, तुंगनाथ, कल्पेश्वर, और महालय, अर्थात् रुद्रनाथ, ये ५ शिवजी के महान् स्थान हैं। जो मनुष्य भक्ति से अथवा बलात्कार से ज्ञान से या अज्ञान से इन क्षेत्रों में जाते हैं; उनके दर्शन मात्र से पापी मनुष्य पवित्र हो जाते हैं और दर्शन करने वाले मनुष्य इसलोक में सुन्दर भोगों को भोग कर मरने पर मोक्ष पाते हैं।

वृद्धबदरी।

कुँभारचट्टी से ½ मील आगे १ झरना और दूसरा १ बहुत बड़ा झरना और १½ मील आगे छोटा झरना है। उससे थोड़ही आगे बाईं ओर एक पगदंडी राह बहुत नीचे पैनीमठ को गई है। पैनीमठ में २ मकान और वृद्धबदरी का मन्दिर है। दहिनी ओर ऊपर पहाड़ पर पैनी गांव है। कुँभार चट्टी से २¼ मील आगे बड़ा झरना और २½ मील आगे पैनी चट्टी है।

पैनीचट्टी—उस चट्टी पर मोदियों के चार मकान और १ बड़ा झरना है। चट्टी से १/२ मील नीचे पैनीमठ में वृद्धवदरी है, पर चट्टी से वहां जाने की राह नहीं है।

पैनीचट्टी से आगे २ मील पर बड़ी गुफा और उस पार अलकनंदा और एक नदी का संगम है। उससे आगे जगह जगह चार पांच गुफाओं के बाद बहुत बड़ा झरना और ३ मील आगे १ गुफा और १ मोदी का मकान है। उस जगह से नीचे विष्णुप्रयाग की और ऊपर जोशीमठ की राह गई है। वहां से विष्णुप्रयाग नीचे की राह से ११/४ मील और जोशीमठ होकर २१/४ मील है। पैंनीचट्टी से ३१/२ मील आगे बाईं ओर एक नया छोटा मंदिर और २ पक्के घर और जगह जगह बहुत झरनें और ४१/४ मील आगे जोशीमठ है। कुंभारचट्टी से जोशीमठ तक सुगम चढ़ाई उतराई की राह है।

जोशीमठ।

जोशीमठ उस देश की बड़ी बस्तियों में से एक है। श्रीशंकराचार्य्य स्वामी ने, जो नवीं शतक में थे जोशीमठ को कायम किया था। श्रीनगर के बाद इतनी बड़ी बस्ती कोई नहीं मिलती है। जोशीमठ में पत्थर के टुकड़ों से छाए हुए करीब ५० पक्के मकान, कई धर्मशाले, झरने और पनचक्कियां हैं और पश्चिम ऊंची जमीन पर एक सरकारी बंगला, सड़क के पास पुलिसकी चौकी और मन्दिरों से दक्षिण डाकखाना और सफाखाना है। कपड़े मेवे, मशाले, जिन्स, पूरी, मिठाइयां, कागज, चंवर, आदि सब वस्तुएं मिलती हैं। बस्ती के उत्तर भाग में नृसिंहजी के मन्दिर से पश्चिम एकही जगह दो किते बदरीनाथ के रावल अर्थात प्रधान पुजारी के मकान हैं। मकान पत्थर के तख्तों से छाए हुए हैं। पूर्व द्वार पर काष्ठका नकाशीदार चौकठ लगा है। जाड़े के आरंभ में जब बदरीनाथ का पट बन्द होता है तब लगभग ६ मास तक बदरीनाथ की पूजा जोशीमठ में होती है। पट खुलने के समय रावल बड़ा उत्सव करके जोशीमठ से बदरीनाथ जाते हैं और लगभग ६ मास वहां रहते हैं।

नृसिंहजी का मन्दिर—रावल के मकान से पूर्व पत्थर के तख्तों से छाया हुआ दक्षिण मुख का दो मन्जिला नृसिंहजी का मन्दिर है। उसके दोनो ओर २ पाख और सिर पर तीन जगह तीन कलश हैं। कलशों के पास एक एक ध्वजा खड़ी है। नीचे के मन्जिल में पूर्व ओर दक्षिण मुख की कोठरी में नृसिंहजी की सुन्दर मूर्ति पश्चिम मुख से वैठी है। इनका मुकुट और छत्र सोनहुला है। इनके वाएं राम और लक्ष्मण और दहिने वदरीनाथ, ऊधवजी, और चण्डी की मूर्तियां हैं। नृसिंहजी की कोठरी से पश्चिम अर्थात मन्दिर के मध्य भाग में पुजारी की कोठरी और उस कोठरी से दक्षिण शेपशाई भगवान और पश्चिम-दक्षिण लक्ष्मणजी की मूर्ति है। मन्दिर से वाहर चारों तरफ मकान और पूर्व ओर दरवाजा है। नृसिंहजी के मन्दिर के दरवाजे से पूर्व एक दालान में दो जगह पीतल के नल लगे हैं। जिन से झरने का पानी निकल कर नीचे एक छोटे कुण्ड में गिरता है। उनको लोग दण्डधारा कहते हैं।

वासुदेव का मन्दिर—नृसिंहजी के मन्दिर से पूर्व चार दिवाली के भीतर वासुदेव का पुराना मन्दिर पश्चिम मुख से खड़ा है। मन्दिर के शिखर पर वीस द्वार की वारहदरी है। वासुदेव अर्थात कृष्ण की श्यामल मूर्ति मनुष्य के समान ऊंची और उसके दहिने उससे छोटी वलदेवजी की मूर्ति है दोनों मूर्तियां वहुत पुरानी हैं। वहां के लोग कहते हैं कि शंकराचार्य्य ने इनको स्थापित की थी। मन्दिर के घेरे के भीतर पश्चिमोत्तर की कोठरी में आठ भुजाओं में आठ हथियारलिए हुए गणेशजी की विचित्र मूर्ति, जिस के साथ छोटी छोटी कई मूर्तियां हैं; पूर्वोत्तर की कोठरी में सत्यनारायण; पूर्व-दक्षिण की कोठरी में ध्यान वदरी; दक्षिण की कोठरी में गणेश और एकही पत्थर में विचित्र तरह की वनी हुई ९ दुर्गाओं की ९ मूर्तियां और दक्षिण-पश्चिम की कोठरी में एकही साथ शिव और पार्वती की मूर्ति है, जिसको लोग तांडव शिव कहते हैं। मन्दिर के घेरे के वाहर पश्चिम ओर के चवूतरे पर पीतल का गरुड़ है।

संक्षिप्त प्राचीनकथा—स्कंदपुराण—(केदारखंड, प्रथम भाग, ५८ वां अध्याय) विष्णुकुण्ड से २ कोस पर ज्योतिर्धाम है, जहां नृसिंह

भगवान और प्रह्लादजी निवास करते हैं। इस पीठ के समान सिद्ध देने वाला और संपूर्ण कामनाओं के पूर्ण करने वाला कोई दूसरा पीठ नहीं है।

भविष्यवदरी।

जोशीमठ के सफाखाने के पास से एक मार्ग जोशीमठ के मन्दिर हो कर आगे की ओर श्रीवदरीनाथ को और दूसरा मार्ग दहिनी ओर तपोवन, नीती को ओर भोट होकर काठ गोदाम को गया है। जोशीमठ से ६ मील पूर्व तपोवन और तपोवन से दक्षिण की ओर काठ गोदाम है। उस मार्ग से भोटिए व्योपारी, जो खास कर के शोके कहलाते हैं और पुराणों में शक लिखे गए हैं, सैकड़ों भेड़, वकरे, गदहे, खच्चर, जोवरा (जो एक प्रकार की गौ हैं उनकी पूंछ पर वहुत वाल होता है) इत्यादि जानवरों पर जिन्स लाद कर व्योपार करते हैं। भोटिए लोग अंगरेजी, नैपाल और तिव्वत इन तीनों राज्यों के सीमाओं पर और सीमाओं के निकट वसे हैं। भोट देश में व्यासजीने तप किया था, इस लिये उसदेश को व्यासखंड भी कहते हैं। कैलास पर्वत और मानसरोवर उसदेश के निकट है। महाभारत-शान्तिपर्व के ३२७ वें अध्याय में लिखा है कि व्यासदेव हिमालय के पूर्व दिशा को अवलंवन करके विविक्त पर्वतपर शिष्यों को वेद पढ़ाते थे; उनके पुत्र शुकदेवजी उस आश्रम में गए।

जोशीमठ से ६ मील पूर्व पर्वत पर तपोवन है। उसदेश के लोग कहते हैं कि हनुमानजी ने उसी स्थान पर कालनेमि राक्षस को मारा था। तपोवन से ५ मील दूर धवली गंगा के निकट पंच वदरी में से एक भविष्यवदरी का मन्दिर है जिसको तपवदरी भी कहते हैं। राह सुगम है; किन्तु खाने का सामान साथ में ले जाना पड़ता है और जोशीमठ में लौटकर वदरीनाथ जाना होता है।

संक्षिप्त प्राचीनकथा—स्कंदपुराण—(केदारखंड, प्रथमभाग, ५८ वां अध्याय) गंधमादन के दहिने भागमें धवली गंगा के तट पर भविष्यवदरी है। पूर्वकाल में महर्षि अगस्त्य ने उस स्थान पर हरि की आराधना की थी;

उस समय से बदरीनाथ वहां निवास करते हैं। उस स्थान पर दो पवित्र धारा हैं, जिनमें से एक धारे का जल गर्म है, जिसमें स्नान करने से मनुष्य को विष्णु-लोक प्राप्त होता है। उस स्थान पर अग्नि ने तप किया था। वहां महादेवजी मुनीश्वर नाम से प्रसिद्ध हैं, जिनके दर्शन मात्र से शिवलोक मिलता है। भविष्य-बदरी महापातकों के नाश करनेवाली है। उसके बाद अगस्त्य मुनि का पवित्रस्थल मिलता है; वह ४ योजन चौड़ा और ५ योजन लंबा है। जहां महात्माओं ने बहुत शिवलिंग स्थापित किया है और देवी तथा देवताओं के मन्दिर बनाए हैं; उसी स्थान पर मानसोद्भेदन पर्वत से धवलीगंगा निकली है। पूर्व कालमें राजा धवल ने वहां गंगा की सेवा की, इस लिये उसका नाम धवलीगंगा हो गया, वह गंगा की ९ वीं धारा है। धवलीगंगा के दर्शन मात्र से मनुष्य निष्पाप हो जाते हैं।

विष्णुप्रयाग।

जोशीमठ से १¼ मील आगे तिर्मुहानी सड़क और १ झरना और १½ मील आगे विष्णुप्रयाग है। संगम के समीप धवलीगंगा के ऊपर के लोहे का पुल टूट गया है। गंगा के मध्य में एक बहुत बड़ा पत्थर का ढोका पड़ा है; उसके ऊपर से दोनों ओर धवलीगंगा के दोनों किनारों तक तख्तों से पाट कर १३० फीट लंबा काठ का पुल बना है। यात्रीगण उस पुल से चट्टी पर जाते हैं। वहां उत्तर से अलकनन्दा आई है और पूर्व नीतीघाटी से धवलीगंगा, जिसको लोग विष्णुगंगा भी कहते हैं, आकर अलकनंदा में मिलगई है। संगम पर नदियों की धारा बड़ी तेजी से गिरती है। चट्टी से ७० सीढ़ियों के नीचे एक गुंजदार छोटा मन्दिर हाल में बना है, जिस से ६० सीढ़ियों के नीचे संगम है। सहारे से उतरने के लिये सीढ़ियों के दोनों बगलों में सीकड़ लगे हैं। वहां की धारा बड़ी तेज है। यात्रीगण लोटे में जलभर कर संगम पर स्नान करते हैं; उसी स्थान को विष्णुकुण्ड कहते हैं।

संगम पर संकीर्ण स्थान में विष्णुप्रयाग की चट्टी है। वहां चार पांच छोटे छोटे मकान और १ कोठरी में विष्णुभगवान, बदरीनाथ और दूसरे कई एक

देवताओं की मूर्तियां हैं। दुकानों पर जिन्सों के अलावे, पूरी मिठाई और चंवर, कस्तुरी आदि पहाड़ी चीजें भी विकती हैं। विष्णुप्रयाग गढ़वाल जिले के पंचप्रयागों में से एक है। जोशीमठ से विष्णुप्रयाग तक कड़ी उतराई है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—स्कंदपुराण—(केदारखंड, प्रथमभाग, ५८ वां अध्याय) ज्योतिर्धाम से २ कोस पर विष्णुप्रयाग है, जिसमें स्नान करनेवाला विष्णुलोक में पूजित होता है। उसके समीप अनेक तीर्थ विद्यमान हैं, जिनमें से १० प्रधान कहे जाते हैं;—ब्रह्मकुण्ड, विष्णुकुण्ड, शिवकुंड, गणेशकुंड, भृङ्गीकुंड, ऋषिकुंड, सूर्यकुंड, दुर्गाकुंड, धनदकुंड और प्रह्लादकुंड। उन कुंडों में स्नान करनेवाला मनुष्य कृतकृत्य होजाता है। महर्षि नारद ने उस प्रयाग में विष्णुभगवान की आराधना करके सर्वज्ञत्व लाभ की; तभी से विष्णुकुंड प्रसिद्ध हो गया। उस स्थान पर स्नान और जप करके वदरिकाश्रम जाना उचित है। संपूर्ण पापों के हरनेवाली धवलीगंगा की धारा महादेवजी के समीप से आई है। संगम से १ वाण की दूरी पर धवलीगंगा के उत्तर तट पर ब्रह्मकुंड, उससे १४ दंड पर शिवकुंड और शिवकुंड से आधे वाण पर गणेशकुंड; और अलकनन्दा के किनारे पर विष्णुकुंड से १ वाण पर भृंगीकुंड, उससे आधे वाण पर ऋषिकुंड, उसके वाद सूर्यकुंड, उससे ४ दंड पर दुर्गाकुंड, उसके वाद धनदा यक्षिणी का तीर्थ(धनदकुंड) और वाद प्रह्लादकुंड है।

घाटचट्टी—विष्णुप्रयाग से आगे पूर्ववत् अलकनन्दा के वाएं किनारे चलना पड़ता है।

विष्णुप्रयाग से आगे ½ मील पर वड़ा झरना और एक गुफा; उससे थोड़ीही आगे काठ के पुल के साथ वहुत वड़ा झरना; ¼ मील आगे छोटा झरना और एक कोठरी; १ मील आगे टूटा हुआ पुल के पास वड़े वड़े ढोकों के नीचे ऊपर वड़े वेग से विचित्र तरह से अलकनन्दा का पानी गिरता है और १½ मील आगे १६० फीट लम्बा और ५ फीट चौड़ा लोहे का पुल है। पुल पार होकर अलकनन्दा के दहिने किनारे चलना होता है। पुल के वाद ऊपर दो झरने हैं। विष्णुप्रयाग से २ मील आगे वड़ी गुफा, २¼ मील आगे अलकनन्दा के वाएं

एक नदी का संगम, ३¾ मील आगे दो झरने और बड़े ढोके के नीचे १ गुफा और ४½ मील आगे घाटचट्टी है।

विष्णुप्रयाग से घाटचट्टी तक संकीर्ण सड़क है। अलकनन्दा के दोनों तरफ ऊंचे खड़े पत्थरीले पर्वत हैं, जिन पर वृक्ष और पौधे बहुत कम हैं। राह नीची ऊंची ठोकर वाली और जगह जगह सीढ़ियों की कड़ी चढ़ाई उतराई है।

यह छोटीचट्टी अलकनन्दा के पानी के पास है, इससे इसका नाम घाटचट्टी वा गटचट्टी पड़ा है। पहाड़ी भाषा में घाट को गट कहते हैं। वहां मैदान में मोदियों के २ बड़े बड़े पक्के मकान और १ पनचक्की है।

घाटचट्टी से ¼ मील आगे बड़ा झरना और उस पार पर्वत के ऊपर से गिरता हुआ झरना; ¾ मील आगे बस्ती के ३ मकान और बस्तीवालों के लिये अलकनन्दा पर काठ का पुल; १½ मील आगे छोटा झरना और २ मील आगे पाण्डुकेश्वर चट्टी है। घाटचट्टी से पाण्डुकेश्वर तक बाएं के पहाड़ पर हरियाली है; किंतु दहिने के पर्वत पर नहीं। घाटी के जंगल में फूली हुई सेवती बहुत देख पड़ी थीं।

पांडुकेश्वर।

पांडुकेश्वरचट्टी गढ़वाल जिले की बड़ी बस्तियों में से एक है। वहां छोटे बड़े चालीस पचास मकान बने हुए हैं, जिनमें से बहुतेरे कड़ियों के ऊपर पत्थर के तख्तों से और बहुतेरे लकड़ी के तख्तों पर फूस से छाए गए हैं। वहां के बहुतेरे निवासी मोदी के काम करते हैं। वहां सरकारी धर्मशाला, कई एक पनचक्कियां, अलकनन्दा और एक बड़े झरने का पानी और योगबदरी और बासुदेवजी का मन्दिर है। पूर्वकाल में राजा पांडु ने मृगरूपी मुनि के शाप से दुखी होकर इसी स्थान पर तप किया था।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—महाभारत—(आदिपर्व, ११८ वां अध्याय, हस्तिनापुर के राजा पांडु हिमालय पर्वतके दहिने छोर में घूमघाम कर कुंती और माद्री अपनी स्त्रियों के सहित पर्वत की पीठ पर बस कर आखेट खेलने लगे। एक समय उन्होंने मैथुन धर्म में आशक्त एक मृग को देखा; तब पांच

वाणों से उस मृग और मृगी को मारा। कोई तेजस्वी ऋषिकुमार मृग का स्वरूप धारण कर के मृगी से मिला था; उसने पांडु को शाप दिया कि जब तुम काम युक्त होकर अपनी स्त्री से मिलो गे, तब मृत्यु को प्राप्त होगे। ऐसा कह वह मृग मर गया। (११९ वां अध्याय) उस के उपरांत राजा पांडु ने अपने और अपनी स्त्रियों के सब वस्त्र और भूषण ब्राह्मणों को देकर सारथियों और नोकरों को हस्तिनापुर भेज दिया। उस के पश्चात् वह अपनी दोनों स्त्रियों के साथ नागशत पर्वत को पधारे और हिमलाय से होते हुए गंधमादन में जा पहुंचे। अंत में वह इन्द्रद्युम्न ताल को पाकर के हंसकूट को पीछे छोड़ शतशृंग नामक पर्वतपर पहुंच कठोर तप करने लगे। (१२३ वां अध्याय) अनंतर शतशृंग पर्वतही पर पांडु के युधिष्ठिर आदिक ५ पुत्र जन्मे। (१२५ वां अध्याय) एक समय वसंत ऋतुमें माद्री को देख कर पांडु कामाशक्त होगए। वह शाप की बात भूल कर माद्री को पकड़ मैथुन धर्म में प्रवृत्त हुए। उसी समय उनका देहांत हो गया और माद्री उनके संग गई। (१२६ वां अध्याय) वहां के महर्षिगण कुन्ती, उसके बेटे और दोनों मृतकों को ले कर हस्तिनापुर आए। कौरवों ने पांडु और माद्री की देह को गंगा के तट पर लेजाकर चिता में जलाया।

स्कंदपुराण—(केदारखंड, प्रथमभाग, ५८ वां अध्याय) राजा पांडु ने मृगरूपधारी मुनि के शाप से दुखी होकर तप किया; तभी से वह स्थान पांडु-स्थान के नाम से प्रसिद्ध होगया। उस समय विष्णुभगवान प्रकट होकर बोले कि हे पांडो! तुम्हारे क्षेत्र में धर्मादिकों के अंश से बलवान पुत्र उत्पन्न होंगे। ऐसा कह कर विष्णु चले गए। उस स्थान पर पांडूीश्वर महादेव विराजते हैं।

योगबदरी

पांडुकेश्वर में योगबदरी का शिखरदार मन्दिर पश्चिम मुख से खड़ा है। यह मन्दिर बड़े बड़े ढोकों से बना हुआ है और प्राचीन होने के कारण जर्जर हो गया है। योगबदरी पांच बदरियों में से एक हैं, जिसको लोग ध्यानबदरी

भी कहते हैं। इनकी धातु की मूर्ति, सोनहले मुकुट, क्षत्र और वस्त्रों से सुशोभित है। मन्दिर के आगे के जगमोहन में, जिस के आगे पाख में द्वार है, किसी धातु के वड़े वड़े ४ तख्तों पर खोदे हुए लेख हैं, जो पढ़े नहीं जाते हैं। पूछने पर पुजारीने मुझ से कहा कि यह लेख पांडवों के समय के हैं। जगमोहन से वाहर छोटी कोठरी में एक शिवलिंग और एक दूसरा देवता है।

वासुदेव का मन्दिर—योगवदरी के मन्दिर के पासही दक्षिण उसी मन्दिर के आकार का वासुदेव जी का मन्दिर है, जिस की मरम्मत पटियाले के महाराज ने करवादी है। वासुदेव जी की धातु प्रतिमा, सुंदर वस्त्र, सुनहले क्षत्र और मुकुट से सुशोभित है। दोनों मन्दिरों में केवल एकही पुजारी है।

शेषधारा—पांडुकेश्वरचट्टी से ½ मील आगे एक नाला होकर झरने का पानी भूमि पर वहता है; उसी को लोग शेषधारा कहते हैं। वहां एक छोटी कोठरी में १½ हाथ ऊंचा अनगढ़ लिंग के समान शेषजी हैं और पांच छ पक्के मकान, जिन में से कई एक रीवां के महाराज के हैं, वने हुए हैं। वहां महाराज का सदावर्त जारी है और एक दो दुकान भी रहती है।

शेषधारा से आगे ¼ मील पर जोरशोर से ऊपर से गिरता हुआ एक वड़ा झरना, नीचे ३ झरने और १ पनचक्की; आगे वड़े वड़े ४ झरने; १ मील पर ३ मकान और उस पार एक वस्ती और वहुत वड़ा झरना; १¼ मील पर एक झरना; १½ मील पर वहुत वड़ा झरना; १¾ मील पर कई झरने; २ मील पर वहुत वड़ा झरना; वाद १ झरना; उसके वाद पनचक्की; उसके आगे वड़ा झरना और १ गुफा; २¼ मील आगे लामवगड़ चट्टी पर मोदी के २ पक्के मकान और झुंझुनूवाले रायसूर्यमल की पक्की धर्मशाला; २½ मील आगे अलकनन्दा पर ७० फीट लंबा और ७¼ फ़ीट चौड़ा काठ का पुल, जिस को पार होकर अलकनन्दा के वाएं किनारे चलना होता है; ३¼ मील पर एक झरना और ५½ मील पर हनूमानचट्टी है।

एक मील पहले से हनूमान चट्टी तक पत्थर के वड़े वड़े सैकड़ों ढोके पड़े हैं, जिनसे जगह जगह वहुतेरी गुफाएं वन गई हैं और भोटिए व्योपारियों ने अनगढ़ पत्थर के टुकड़ों की दीवार और डाढ़पात के छप्पर से छोटे छोटे

घर बनाए हैं। घाटचट्टी से हनूमानचट्टी तक अलकनन्दा के किनारों पर लतावृक्षों की विचित्र हरियाली देखने में आती है।

हनूमानचट्टी—इसचट्टी को अमलागाड़चट्टी भी लोग कहते हैं। वहां मोदियों के चारपांच पक्के मकान, पूरी मिठाई की भी दुकानें, एक कोठरी में हनूमान जी की छोटी मूर्ति, एक छोटी धर्मशाला और अलकनन्दा तथा घृतगंगा का जल है। यात्री लोग घृतगंगा का जल पीते हैं। पहाड़ी लोग उस के आस पास के जंगल से सूखी लकड़ियां अपनी पीठ पर बदरीक्षेत्र लेजाते हैं, उससे आगे बर्फ अधिक रहने के कारण जंगल नहीं है।

वैखानस मुनि का स्थान—हनूमानचट्टी के पास अलकनन्दा के उस पार क्षीरगंगा और इस पार घृतगंगा, अलकनन्दा में मिली है। उसी स्थान पर पूर्व काल में वैखानस मुनि ने तप किया था। लोग कहते थे कि यज्ञ की राखी अब तक पाई जाती है और राजा मरुत ने भी इसी स्थान पर यज्ञ किया था।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—स्कंदपुराण—(केदारखंड, प्रथमभाग ५८ वां अध्याय) बदरिकाश्रम से २ कोस पर वैखानस मुनि का आश्रम और यज्ञ-भूमि है, जिसके हवन के स्थान पर विंदुमती नदी बहती है और अबतक जले हुए जव और तिल तथा अंगार देख पड़ते हैं। उसके ऊपर पर्वत पर योगीश्वर नामक भैरव रहते हैं; उनका पूजन करके बदरिकाश्रम में जाना उचित है।

महाभारत—(द्रोणपर्व, ५३ वां अध्याय) राजा मरुत के यज्ञ में, जिसकी संपूर्ण वस्तु सुवर्ण भूषित बनी थी, बृहस्पति के सहित संपूर्ण देवता हिमालय पर्वत के सुवर्ण मय सिखर पर एकत्र हुए थे। (अश्वमेध पर्व ६४ वां अध्याय) युधिष्ठिर आदिक पांडवगण व्यासदेवजी की आज्ञानुसार राजा मरुत के यज्ञ-स्थान से रत्न लाने के लिये अपनी सेनाओं के सहित वहां जा पहुंचे और शिवजी की पूजा कर के ऊंट, घोड़ों, हाथी, शकट, रथ, गदहों और मनुष्यों पर नानाप्रकार के धन और रत्न लदवा कर हस्तिनापुर ले गए।

कुबेरशिला—हनूमानचट्टी से ¾ मील आगे अलकनंदा पर ३६ फीट लम्बा काठ का पुल है। पुल पार होकर अलकनन्दा के दहिने किनारे चलना

होता है। पुलसे आगे तीन चार झरने ; १ मील आगे कई झरने और एक वड़े झरने पर, जो पर्वत के ऊपर से गिरता है, वर्फ जमीहुई है, जिसके ऊपर चलना होता है और १ १/४ मील आगे अलकनन्दा पर ६५ फीट लम्बा काठ का पुल है। पुल पार कई झरने, जहां से अलकनन्दा के वाएं किनारे चलना होता है, देख पड़ते हैं उस पुल से उत्तर वदरीनाथ तक कोई वृक्ष नहीं है; किंतु हनूमानचट्टी से वहां तक छोटे वृक्षों का जंगल है। हनूमानचट्टी से १ १/२ मील आगे अलकन्दा पर इस किनारे से उस किनारे तक ज्येष्ठ महीने में भी वर्फ जमी थी। दोनों किनारों पर पर्वत के ऊपर से एक एक वड़ा झरना अलकनन्दा में गिरता है। चट्टी से १ १/४ मील आगे एक वड़े झरने पर वर्फ जमी हुई है, जिसपर होकर यात्री आगे जाते हैं; २ १/४ मील आगे दोनों तरफ पर्वत के ऊपर से अलकदन्दा में झरना गिरता है, जिस के ऊपर वर्फ जमी है; ३ मील आगे अलकनन्दा और कांचनगंगा का संगम; ३ १/४ मील आगे अलक-नन्दा पर इस किनारे से उस किनारे तक और दो तीन सौ गज लम्बी वर्फ जमी हुई है, जिसके ऊपर आदमी चल सकते हैं; परन्तु यात्रियों को उधर जाने का काम नहीं पड़ता; और हनूमानचट्टी से ३ १/२ मील आगे कुवेरशिला है। हनूमानचट्टी से कुवेरशिला तक जगह जगह संकीर्णमार्ग और स्थान स्थान पर कड़ी चढ़ाई है।

कुवेरशिला के पास से श्रीवदरीनाथ जी का मन्दिर देख पड़ता है। वहां गणेशजी का एक छोटा मन्दिर है। वहुतेरे यात्री वहां ढोकों के नीचे अपना जूता रख कर वदरीनाथ की पुरी में जाते हैं।

कुवेरशिला से थोड़े आगे तक ढोकों का मैदान; उस के आगे वदरीनाथ की पुरी तक सुन्दर ढालू मैदान है। कुवेरशिला से १/२ मील आगे अलकनन्दा पर ४२ फीट लंबा काठ का पुल है, जिस को पार करके अलकनन्दा के दहिने किनारे से चलना होता है। थोड़े आगे ऋषिगंगा पर लकड़ी का छोटा पुल है, जिस से नदी पार होकर अलकनन्दा के पुल से १/४ मील और कुवेरशिला से ३/४ मील आगे वदरिकाश्रम वस्ती में पहुंचते हैं। ऋषिगंगा के दक्षिण एक वस्ती और उत्तर वदरीनाथ की वस्ती है, जिस के उत्तर भाग में श्रीवदरी-

नाथ का मन्दिर सुशोभित है। मैं हरिद्वार से चलने पर २७ वें दिन और केदारनाथ से चलने पर १० वें दिन ज्येष्ठसुदी एकम के दिन हरिद्वार से २४९ मील और केदारनाथ से ९९¼ मील पर बदरीनाथ की पुरी में पहुंच गया।

घाटचट्टी से बदरीनाथ तक अलकनन्दा का जल मार्ग के पास ही है। ढालू भूमि पर जोरशोर से अलकनन्दा का पानी गिरता है। किसी किसी स्थान पर बहुतही जोर से बड़े बड़े ढोकों के नीचे ऊपर होकर विचित्र तरह से पानी दौड़ता है।

बदरीनाथ।

बदरीनाथ में अलकनन्दा नदी उत्तर से आई है। अलकनन्दा के दहिने किनारे पर गढ़वाल जिले में बदरीनाथ की बस्ती है। नदी के ढालू भूमि पर उत्तर से दक्षिण तक तीन चार पंक्ति नीचे ऊपर एक मंजिले दो मंजिले १०० से कुछ अधिक मकान बने हैं, उनमें बहुतेरे धर्मशाले हैं। कुल मकान पक्के हैं। उनके ढालू छप्परों पर काठ के तख्ते जड़े हुए हैं। किसी किसी मकान के छप्पर पर भोजपत्र बिछाकर ऊपर से मिट्टी दी गई है। बहुतेरे मकानों में यात्री टिकते हैं और बहुतेरे में दुकानें हैं। बहुतेरे पहाड़ी लोग दुकान के लिये मकान बनाए हैं और बहुतेरे लोग श्रीनगर आदि दूर की बस्तियों से आकर किराये के मकानों में दुकान करते हैं। वहां की दुकानों में कपड़ा, बरतन, मेवे, मसाले, पूरी मिठाई, हर तरह की जिंस, आलू, पहाड़ी चीजें, चीनी, मिश्री सब वस्तुएं मिलती हैं। भोटिए लोग भेड़ बकरे आदि जानवरों पर आटा आदि जिन्स वहां पहुँचाते हैं। लकड़ी ४ मील दक्षिण से आकर वहां मंहगी बिकती है। पानी बहुत ठंढा रहता है। वहां सैकड़ों यात्री प्रति दिन पहुँचते हैं। साधारण लोग तीन या पांच अथवा सात रात्रि वहां वास करते हैं; परन्तु गरीब लोग तो जाड़े के भय से उसी दिन या एक रात्रि निवास करके वहां से चल देते हैं। जिसको ब्राह्मण साधु खिलाना होता है वह बाजार से पूरी मिठाई मोल लेकर उनको खिलाता है। वहां बड़े बड़े कई झरने; एक कोठरी में डाकखाना; काश्मीर के महाराज, पटियाले के महाराज,

इन्दौर के महाराज और झुंझुनू वाले रायसूर्य्यमल बहादुर का एक एक सदावर्त है। वहां इसवर्ष आटा ४ आने सेर, पूरी ८ आने सेर, चांवल ८ आने सेर और घी १ रुपये का पाव भर बिकता है।

वहां चारो तरफ पर्वत के ऊपर सर्वत्र बर्फ जमी है; जाड़े के दिनों में भूमि और मकानों पर सर्वत्र बर्फ का ढेर लग जाता है। बदरीनाथ की सबसे ऊंची चोटी समुद्र के जल से २३२०० फीट ऊंची है। पूर्व और पश्चिमवाले पहाड़ों को लोग जय और विजय कहते हैं। पर्वतों के बीच में समुद्र से १०४०० फीट की ऊंचाई पर उत्तर से दक्षिण लम्बा ढालू मैदान है, जिसमें अलकनन्दा बहती है और बदरीनाथ की पुरी है। पुराणों में इस स्थान का नाम मन्दराचल और बदरीकाश्रम लिखा है। यहां जाड़ा बहुत है; दिनमें भी धुस्सा, दोलाई ओढ़ने का काम रहता है, पर केदारपुरी की जाड़ा से यहां जाड़ा कम है। भारतवर्ष के प्रसिद्ध ४ धामों में से इसके उत्तरीय सीमा के निकट बदरीकाश्रम एक धाम है।

बदरीनाथजी का मन्दिर—यह मन्दिर बस्ती के उत्तर अलकनन्दा के दहिने पत्थर से बना हुआ ४५ फीट ऊंचा (पूर्वमुख का) है। मन्दिर के शिखर पर दोहरी चकूटी है। निचली चकूटी टीन या ताम्रपत्र से छाई हुई है। उसमें चारो ओर तीन तीन द्वार हैं। उससे ऊपर की दूसरी चकूटी में भी, जो पहली से छोटी है, चारो तरफ १२ द्वार हैं। उसकी ढालुए छत पर पटियाले के महाराजने ताम्बेका पत्तर जड़वाकर सोने का मुलम्मा करवा दिया है। उसके सिरपर सुनहला कलश है। मन्दिर के भीतर द्वार के सामने एक हाथ ऊंची बदरीनारायण की द्विभुज श्यामल मूर्ति विराजमान है। बहुमूल्य वस्त्र, भूषण और विचित्र मुकुट से सुशोभित ध्यान में मग्न वह बैठे हैं। उनके ललाट पर हीरा लगा हुआ है और उनके ऊपर सोने का छत्र लगा है। बदरीनारायण के पास लक्ष्मीजी, नर, नारायण, नारद, गणेशजी, सोने के कुबेर, और गरुड़ और चान्दी के उद्धव हैं। कुबेर का मुखमण्डल मात्र स्वरूप है। कहा जाता है कि बदरीनारायण पहले गुप्त थे। सन् ई० के नवीं सदी में महाराज शंकराचार्य्यने इनकी मूर्ति को नदी में पाया

और मन्दिर बनवाकर मूर्ति को स्थापित किया । कूर्मपुराण-ब्राह्मीसंहिता के २९ वें अध्याय में है कि नीललोहित शंकर भक्तोंके मंगल के लिये प्रकट होंगे और श्रौत और स्मार्त मतकी प्रतिष्ठा के लिये सकल वेदान्त का सार ब्रह्मज्ञान और निर्दिष्ट धर्म्म, शिष्यों को उपदेश देंगे और शिवपुराण के सातवें खण्ड के प्रथम अध्याय में भी शंकराचार्य्य को शिवका अवतार लिखा है।

मन्दिर के आगे के कमरे की ढालू छत की ओरी मन्दिर के दहिने और बाएं है। कमरे के पूर्व खास मन्दिर के समान ऊंचा सुनहला कलशवाला गुम्बजदार जगमोहन है। मन्दिर और जगमोहन के बीचवाले कमरे में वदरी-नारायण के सन्दूक आदि असवाव रक्खे हुए हैं और पुजारी और पार्षद बैठते हैं। जगमोहन में कमरे के द्वार के दोनों ओर पत्थर के जय और विजय खड़े हैं। मन्दिर के परात, घड़े आदि वर्तन और आसा, सोटा चान्दीके हैं। खास मन्दिर और बीचवाले देवढ़ के आगे के किवाड़ों में रुपहला काम है।

वदरीनाथजी का पट नियत समय पर दिन रात में तीन चार बार खुलता है। यात्रीलोग किसी समय बीचवाले देवढ़ में जाकर और किसी समय जगमोहन में रहकर दूरहीं से दर्शन करते हैं। साधारण यात्री अनेक भांति के मेवे और चने की दाल हरिद्वार से साथ में लाकर पुजारी द्वारा वदरीनाथ को चढ़ाते हैं। धनीलोग वस्त्र, भूषण, रुपये, सोने, भूमि आदि वदरीनाथ को अर्पण करते हैं और रावल को अपनी रुचि के अनुसार अटका अर्थात् भोग की सामग्री का मूल्य देते हैं। यात्रीगण ताम्बे और लोहे के कंगण अर्थात् कड़े, अगुंठी और वदरीनारायण इत्यादि मन्दिर के भीतर की देवमूर्तियों के पट अर्थात् ताम्बे के पतरोंपर बने हुए वदरीनाथ आदि की मूर्तियों को पुजारी-द्वारा वदरीनाथ से स्पर्श कराकर अपने घर लेजाते हैं। भगवान वदरीनारा-यणजी को प्रातः काल कुछ जलपान और शाम को कच्ची रसोईं भोग लगता है। प्रति दिन ३ मन का भोग लगता है, जिसको यात्रीलोग जाति भेद के विचार के विना जगन्नाथपुरी के प्रसाद के समान भोजन करते हैं। वदरीनाथ आदि के गलों की माला, जो पुष्प और तुलसी पत्र के बनते हैं, और चनेकी कच्चीदाल प्रसाद मिलता है। वहां के यात्री जगन्नाथपुरी के यात्री

के समान प्रतिदिन प्रसाद नहीं खाते; वे लोग अपने डेरे पर रसोई बनाते हैं, अथवा बाजार से पूड़ी ले कर भोजन करते हैं। पूर्व समय की अपेक्षा अब पहाड़ी मार्ग सुगम हो गया है, इससे यात्रियों की संख्या बढ़ती जाती है। प्रतिवर्ष भारतवर्ष के प्रत्येक विभागों से लाखों यात्री वदरीनाथ में जाते हैं।

वदरीनाथ के मन्दिर के पीछे धर्मशिला नामक एक पत्थर का टुकड़ा; मन्दिर के बाए १ हाथ लम्बा चौड़ा चरणोदक कुण्ड, जिस में मोरी से मन्दिर का पानी आता है; जगमोहन से उत्तर की ओर एक कोठरी में घंटाकर्ण और पूर्व मैदान में पाषाण का गरुड़ है। मन्दिर के आस पास दूसरे कई देव मूर्त्तियां हैं और चारो ओर दिवार और साधारण मकान बने हैं। पूर्व के फाटक की बाहरी दोनों ओर कोठरियां और छोटे छोटे कई दालान और फाटक के भीतर एक ओर को दीवार के ताखों में ब्रह्मा, विष्णु, और शिव और एक ओर सूर्य्य की मूर्त्ति है। फाटक में बड़ा घंटा लटका है। फाटक के आगे तप्तकुण्ड और अलकनन्दा हैं।

लक्ष्मीजी का मन्दिर—वदरीनाथ के जगमोहन से दक्षिण लक्ष्मी जी का एक गुम्मजदार छोटा मन्दिर पत्थर से बना हुआ है। लक्ष्मीजी की श्यामवर्ण छोटी मूर्त्ति उत्तम वस्त्रों से सुसज्जित की हुई है। उस मन्दिर का पुजारी दूसरा है। मन्दिर के पासही पूर्व भण्डार घर में प्रति दिन ३¼ मन चावल का भात और इस के अतिरिक्त दाल, भाजी, आदि भोग की सामग्री बनाकर वदरीनाथ को भोग लगाया जाता है। एक ही बड़े चूल्हे पर बीच में १ बड़ा और चारो ओर छोटे छोटे भांड़े चढ़ते हैं।

पंचतीर्थी—वदरिकाश्रम में ऋषिगंगा, कूर्मधारा, प्रह्लादधारा, तप्तकुण्ड और नारदकुण्ड इन्हीं पांचों का नाम पंचतीर्थ है। (१) ऋषिगंगा;—यह वदरीनाथ के मन्दिर से ¼ मील पर और वदरीनाथ की बस्ती से थोड़ही दक्षिण अलकनन्दा से मिली है। यात्रीगण संगम पर स्नान या मार्जन और आचमन करते हैं। ऋषिगंगा का जल साफ है। (२) कूर्मधारा;—वदरीनाथ के मन्दिर से कुछ दक्षिण एक दीवार में कूर्मका मुख बना है। उससे ३ हाथ लम्बे और २ हाथ

चौड़े हौज में झरने का पानी गिरता है। (३) प्रह्लादधारा;—कूर्मधारा से उत्तर एक चबूतरे के नीचे एक नलके द्वारा कूर्मधारा के हौज से छोटे हौज में झरने से गरम जल गिरता है। उसको लोग प्रह्लादधारा कहते हैं। यात्रीलोग दोनों धाराओं के जल से मार्जन करते हैं। (४) तप्तकुण्ड;—वदरीनाथ के मन्दिर के सामने पूर्व, ६५ सीढ़ियों के नीचे अलकनन्दा के दहिने किनारे पर खुला हुआ मकान में पन्दरह सोलह हाथ लम्बा और वारह तेरह हाथ चौड़ा तप्तकुण्ड है। कुण्ड के पश्चिम की दीवार में पश्चिमोत्तर के कोन के पास पीतल के २ नल लगे हैं। एक झरने का गरम जल कुछ वाहर और कुछ उन दोनों नलों द्वारा तप्त-कुण्ड में गिरता है। उनमें से एक नल को गरुड़धारा और दूसरी को लक्ष्मी-धारा कहते हैं। कुण्ड में २½ हाथ ऊंचा गरम जल रहता है। अधिक पानी नलद्वारा वाहर निकला करता है। दोनों नलों का गरम पानी देह पर सहा नहीं जाता, कुण्ड के जल की गरमी कम होने के लिये इन के मुख वन्द रहते हैं। नलों के मुख वन्द करके एक एक ब्राह्मण बैठे रहते हैं और यात्रियों से पैसा लेने पर नलों का पानी उन की देह पर छिड़कते हैं। कुण्ड का पानी देह के सहने योग्य है। यात्रियों को उस वर्फ मय देश में तप्तकुण्ड के गरम पानी में स्नान करते समय वड़ा सुख होता है। कुण्ड से ऊपर छोटे छोटे नलों से झरने का गरम पानी वाहर गिरता है। उसको यात्री लोग हाथ पैर धोने के लिये लेजाते हैं। तप्तकुण्ड के उत्तर गौरीकुण्ड और सूर्य्यकुण्ड नामक वहुत छोटे छोटे २ कुण्ड हैं, जिन में झरने का गरम पानी गिरता है। उन से भी छोटे एक हौज में विष्णुधारा नामक नलद्वारा झरना का गरम पानी गिरता है। तप्त-कुण्ड के पश्चिम एक कोठरी में अनगढ़ शिवलिंग के समान शंकराचार्य्य हैं और रास्ते के उत्तर एक छोटे मन्दिर में लिंगस्वरूप आदि केदार स्थित हैं। उनके आगे नन्दी है। (५) नारदकुण्ड;—तप्तकुण्ड के पासही पूर्वोत्तर के कोने पर अलकनन्दा में नारदकुण्ड है। वहां नारदशिला नामक पत्थर का एक वड़ा ढोंका है, जिस के नीचे अलकनन्दा का पानी संकीर्ण गुफा से गिरता है; उसी को नारदकुण्ड कहते हैं। उस जगह यात्रीगण स्नान या मार्जन करते हैं।

पंचशिला—वदरिकाश्रम में नारदशिला, वाराहशिला, मार्कण्डेयशिला,

नृसिंहशिला और गरुड़शिला ये पांचों प्रसिद्ध हैं;—(१) नारदशिला का वृत्तांत ऊपर नारदकुण्ड के साथ लिखाहै। (२) वाराहशिला नारदशिला से पूर्व अलकनन्दा में है। (३) मार्कंडेशिला और (४) नृसिंहशिला ये दोनों एकही जगह नारदशिला से दक्षिण अलकनन्दा में हैं। (५) गरुड़शिला तप्तकुण्ड से पश्चिम रावल के मकान से पूर्व एक कोठरी में है। ये पांचो शिला पत्थर के बड़े बड़े ढोंके हैं।

ब्रह्मकपाली—बदरीनाथ के मन्दिर से लगभग ४०० गज उत्तर अलकनन्दा के दहिने किनारे पर ब्रह्मकपाली चट्टान है, जिस पर बैठ कर यात्रीगण पितरों को पिण्डदान करते हैं। बदरीनाथजी के प्रसाद (भात) की बहुत छोटी छोटी १६ गोलियां बनाई जाती है. जिन को यात्रीलोग एक एक करके अपने मरे हुए पिता, पितामह, प्रपितामह और मातामह, प्रमातामह और वृद्धप्रमातामह और इनकी स्त्रियों को देते हैं; और शेष ४ गोलियों को वे अपने गुरु, मित्र, तथा अपने कुल के मरे हुए लोगों को नाम लेकर भूमि पर रखते हैं। पीछे वे लोग पिण्डों को अलकनन्दा में डाल कर नदी में पितरों को जल अंजुलि देते हैं। ब्रह्मकपाली पर काम कराने ओर वहां के दक्षिणा लेने वाले बदरीकाश्रम के पण्डे नहीं है, वहां दूसरे ब्राह्मण रहते हैं।

अलकनन्दा नदी—यह नदी उत्तर की ओर सतपथ अलकापुर के पहाड़ से बदरिकाश्रम में आकर वहां से दक्षिण और कुछ पश्चिम को ओर १२१ ३/४ मील पर देवप्रयाग के पास गंगा में मिली है। अलकनन्दा के किनारे पर पाण्डुकेश्वर, विष्णुप्रयाग, जोशीमठ, कुंभारचट्टी, पीपलकोटीचट्टी, चमोली, नन्दप्रयाग, कर्णप्रयाग, रुद्रप्रयाग, श्रीनगर और देवप्रयाग प्रसिद्ध स्थान हैं।

वसुधारा—बदरीनाथ से १ ३/४ मील उत्तर मानागांव बस्ती और २ १/४ मील पर वसुधारा तीर्थ है। आषाढ़ और श्रावण के महीनों में वर्फ कम होने पर कोई कोई यात्री वसुधारा में स्नान करने जाते हैं। वहां पूर्वकाल में अष्टवसुओं ने तप किया था। वहां ऊंचे पहाड़ से वसुधारा नामक बड़ीधारा गिरती है। वसुधारा से आगे वर्फमय पर्वत है, किंतु वर्फ कम होने

पर अंगरेजी राज्य और तिब्बत के सीमा के आस पास के रहनेवाले और मान सरोवर की तरफ के लोग उस मार्ग से इधर आते जाते हैं।

बदरीनाथ के मन्दिर का प्रबन्ध—बदरीनाथ के मन्दिर का पट वृष (जेष्ठ) की संक्रान्ति से दो चार दिन पहले शुभ सायत में खुलता है और वृश्चिक (अगहन) की संक्रान्ति के कई दिन पीछे अच्छी सायत में बन्द होता है। इस वर्ष मेष मासकी २९ तिथि मिती ज्येष्ठ वदी १३ रविवार को पट खुला था। पट बन्द होजाने पर छ महिने के लगभग बदरीनाथ की पूजा बदरीनाथ के रावल जोशीमठ में करते हैं और जाड़ेके भय से सब लोग पाण्डुकेश्वर में और उस से नीचे चले जाते हैं। पाण्डुकेश्वर से उत्तर कोई नहीं रहता।

अंगरेजीसरकार और टिहरी के राजा की अनुमति से सुयोग्य दक्षिणी नम्बोरी ब्राह्मण बदरीनाथ का पुजारी बनाया जाता है, जिसको रावल कहते हैं। रावल विवाह नहीं करता। पाण्डुकेश्वर, जोशीमठ, टिहरी, आदि पहाड़ी बस्तियों का कोई कोई ब्राह्मण या क्षत्री अपनी पुत्री को बदरीनाथ को पूजा चढ़ाता है। वहां के परम्परा नियम के अनुसार वही लड़की रावल की स्त्री होती है। रावल अपनी स्त्री का बनाया हुआ अन्न भोजन नहीं करता। ब्राह्मणी से जो सन्तान होता है ब्राह्मण और क्षत्रिया की सन्तान क्षत्री कही जाती है। रावल के मरने पर रावल के पुत्र रावल नहीं होते; किंतु नया रावल दक्षिण से मंगाया जाता है। पद्मपुराण—स्वर्गखण्ड के २२ वें अध्याय में लिखा है कि जो कोई स्त्री मोल लेकर किसी देवता को चढाता है वह कल्प भर स्वर्ग में बसता है और फिर पृथ्वी पर राजा या धनी होता है। महाभारत —अनुशासन पर्व्व के ४७ वें अध्याय में लिखा है कि ब्राह्मण का धन १० हिस्सों में बटेगा। ब्राह्मणी का पुत्र उस पितृ धन में से ४ भाग, क्षत्रियां स्त्री के गर्भ से उत्पन्न हुआ पुत्र ३ हिस्से, वैश्या स्त्री से उत्पन्न हुआ पुत्र २ भाग और शूद्रा से उत्पन्न ब्राह्मण का पुत्र एक भाग पावेगा। वर्तमान रावल पुरुषोत्तम नम्बोरी अति वृद्ध हैं। वह कई वर्षों से मन्दिर के प्रबन्ध से इस्तीफा देकर १०० रुपए मासिक लेकर पूजा करते हैं। बदरीनाथ की

आमदनी, जो जागीर, पूजा और अटके से आती है सालाना तीस चालीस हजार है। इसमें से लग भग ४ हजार रुपया प्रतिवर्ष गढ़वाल और कमाऊं जिलों के बहुतेरे गांवों से मालगुजारी आती है। २ वर्ष से अंगरेजी सरकार की तरफ से हयातसिंह, जो तीसरे दरजे का मजिष्ट्रेट था, ७५ रुपए माहवारी तनखाह पर मन्दिर के प्रबन्ध के लिये मनेजर हुआ है। वह यात्रियों के साथ पण्डे लोगों को मन्दिर के भीतर जानें नहीं देता। पण्डों ने मिलकर सरकार में अर्जी दी है और मोकदमा चलरहा है।

बदरीनाथ के सब पण्डे देवप्रयाग के रहने वाले हैं। ये लोग सुफल करने के समय अपने यात्री के दोनों हाथों को फूल की माला से बान्ध देते हैं। हाथ बान्धे हुये यात्री घंटों तक गिड़गिड़ाते रहते हैं। पण्डे लोग जहां तक होसक्ता है दक्षिणा कबूल करवा कर तब अपने यात्री को फूल माला के बन्धन से मुक्त करते हैं। केदारनाथ के पण्डे भी इन्हीं के रास्ते से चलते हैं।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—पाराशरस्मृति—(पहला अध्याय) ऋषिगण धर्म के तत्व को जानने के लिये व्यासजी को आगे करके बदरिकाश्रम में गए थे। वह नानाप्रकार के पुष्प लताओं से परिपूर्ण, फलफूलों से सुशोभित, नदी और झरनों से युक्त और देवताओं के मन्दिर तथा पवित्र तीर्थों से प्रकाशित था। व्यासदेवजी ने वहां ऋषियों की सभा में बैठे हुए महर्षि पराशर की पूजा करके उनसे पूछा कि हे पितः! मैंने मनु, वशिष्ट, कश्यप, गर्ग, गौतम, उशनस, अत्रि, विष्णु, संवर्त, दक्ष, अंगिरा, शातातप, हारीत, याज्ञवल्क, आपस्तम्ब, शंख, लिखित, कात्यायन, प्राचेतस इन स्मृतियों के कहे हुए धर्मों को जाना है। इस मन्वंतर के कलियुग में कृतयुग, त्रेता आदि का धर्म नष्ट हो गया है। आप चारो वर्णों के करने योग्य उन का साधारण आचार मुझ से कहिए। ऐसा सुन पाराशरजी ने धर्म का निर्णय कहा।

महाभारत—(वन पर्व्व-१२ वां अध्याय) अर्जुन बोले कि हे कृष्ण (पूर्वजन्म में) तुम १०० वर्ष तक वायु भक्षण करके उर्द्ध्व बाहु होकर, विशाल बदरिकाश्रम में एक चरण से खड़े रहे थे। कृष्ण बोले हम तुम हैं और तुम हमारे रूप हो अर्थात् तुम नर हो और हम नारायण हैं। हम दोनों नर नारायण ऋषि समय पाकर

जगत में प्राप्त हुए हैं। (४७ वां अध्याय) इन्द्र ने लोमश ऋषि से कहा कि जो पुराने ऋषियों में उत्तम थे, वही दोनों नर नारायण ऋषि किसी कार्य्य के वस से पृथ्वी में कृष्ण और अर्जुन के अवतार लेकर पवित्र लक्ष्मी को धारण कर रहे हैं। जिस पवित्र आश्रम को देवता और महात्मा मुनि भी नहीं देख सकते हैं, वही जगत विदित बदरिकाश्रम नरनारायण का स्थान है। वहां से सिद्ध चारणों से सेवित गंगा चली है।

(८२ वां अध्याय) बदरिकाश्रम के बसुधारा तीर्थ में जाने से ही अश्वमेध का फल मिलता है। वहाँ बसुओं का तड़ाग है, जिस में स्नान करने से मनुष्य वसुओं का प्यारा होता है।(९० वां अध्याय)विष्णु की पवित्र शिला बदरिकाश्रम के पास है। उसी देश में तीन लोकों में विख्यात और पवित्र आश्रम है, जहां गंगा का उष्ण (गर्म) जल बहता है। बदरिकाश्रम के पास सुवर्ण सिकता नामक तीर्थ है, जहां जाकर ऋषि और देवतागण परमेश्वर नारायण को प्रणाम करते हैं।

(१४० वां अध्याय) (राजा युधिष्ठिर, भीम, नकुल, सहदेव, द्रौपदी, और लोमस ऋषि के साथ अर्जुन को खोजने के लिये हिमालय पर गए।) वे कुलिन्द देश के राजा सुबाहु की रक्षा में सारथी, नगर निवासी, रसोइयां और दासियों को छोड़कर आगे चले। (१४१ वां अध्याय) युधिष्ठिर बोले अब हम लोग उस उत्तम पर्वत को देखेंगे, जहां विशाल बदरिकाश्रम तथा नर नारायण का स्थान है। (१४२ वां अध्याय) लोमश बोले यह महानदी अलकनन्दा बदरिकाश्रम से आती है। इसी के जल को शिवने अपने सिर पर धारण किया है। यही नदी गंगाद्वार में गई है। (१४३ वां अध्याय) जिस समय पाण्डव लोग गन्धमादन पर्वत पर पहुंचे उस समय महावर्षा और भारी आंधी आई। वे लोग धीरे २ गन्धमादन की ओर फिर चले। (१४४ वां अध्याय) जब पाण्डव लोग १ कोस चले तब द्रौपदी थक कर कांपने लगी और पृथ्वी में गिरगई। (१४५ वां अध्याय) पाण्डवों की आज्ञा से भीम के पुत्र घटोत्कच राक्षस ने द्रौपदी और पाण्डवों को अपने कन्धों पर बैठाया, दूसरे राक्षसों ने ब्राह्मणों को अपने ऊपर चढ़ालिया और लोमश ऋषि योग मार्ग से आपही आकाश में चलने लगे। अनेक वन और बागों को देखते हुए वे लोग बदरी-

नारायण की ओर चले। दूर जाने पर उन्हों ने कैलाश पर्वत के नीचे नर और नारायण के आश्रम को देखा, जहां स्वभाविक समान भूमि, सुन्दरस्थान और हिम से शीतल कंटक रहित पृथ्वी थी। वहां वे सब राक्षसों के कन्धों से धीरे धीरे उतरे। अनन्तर पाण्डवों ने गंगा के तटपर नरनारायण के रमणीय आश्रम को देखा और वे ब्राह्मणों के साथ उसी स्थान पर रहने लगे। अत्यन्त दुःख से जाने योग्य देवऋषियों से सेवित उसी देश में भागीरथी के पवित्र जल में पाण्डव लोग पितरों का तर्पण करने लगे। (१५८ वां अध्याय) पाण्डव लोग कुवेर की सम्मति से अर्जुन का मार्ग देखते हुए थोड़े दिन गन्धमादन पर्वत पर रहे। (१५७ वां अध्याय) आगे वे उत्तर दिशा को चले और चौदहवें दिन वृषपर्वा के आश्रम में पहुचे। उसके पश्चात् उन्हों ने माल्यवान् पर्वत पर पहुंच कर आगे गन्धमादन को देखा। (१६४ वां अध्याय) अर्जुन ५ वर्ष इन्द्रलोक में निवास करने के पश्चात् गन्धमादन पर आकर युधिष्ठिर आदि भाइयों से मिले। (१७६ वां अध्याय) वे लोग कुवेर के स्थान पर ४ वर्ष रहे। (१७७ वां अध्याय) पाण्डव लोग लौट कर फिर वदरिकाश्रम में ठहरे। वहां उन्हों ने कुवेर की पोखर को देखा। अनन्तर वे लोग सुख से चलते २ एक महीने में किरातराज सुवाहु के राज्य में पहुंच कर अपने नौकर और दासियों से मिले और वहां से घटोत्कच को विदा कर के, जो उन को अपने कन्धे पर ले चलता था, रथों पर चढ़ कर आगे चले और एक वनमें १ वर्ष निवास करके काम्यकवन में आए।

(१८७ वां अध्याय) सूर्य्य के पुत्र वैवस्वत मनु ने वदरिकाश्रम में जाकर उर्द्ध्व बाहु होकर १० सहस्र वर्षतक घोर तप किया। एक दिन भीगे वस्त्र मनु के पास जाकर एक मत्स्य बोला कि हे भगवन्! मैं वहुत छोटा मत्स्य हूं, इस से मुझे वड़े मत्स्यों से डर लगती है। तुम हमारी रक्षा करो। मैं भी इस उपकार का वदला तुम को दूंगा। तव मनु ने निर्मल पानी से भरे हुए पात्र में उस को छोड़ दिया। वह मत्स्य भोजनादिक पाकर उसी पात्र में वढ़ने लगा। कुछ काल में वह मत्स्य वहुत वड़ा होगया। तव वह बोला कि हे भगवन्! अव आप मेरे लिये कोई दूसरा स्थान वताइए। मनुने उस मत्स्य को एक वड़ी भारी

वावड़ी में डाल दिया। वह वावड़ी ८ कोस लम्बी चौड़ी थी; परन्तु कुछ दिनों के पश्चात् वह मत्स्य इतना वढ़ा कि उसमें चल फिर नहीं सकता। तव मनुने उस को गंगा में डाल दिया। वह गंगा में भी वढ़ कर चलफिर नहीं सकता था। तव मनुने उस को गंगा से उठा कर समुद्रमें छोड़ दिया। उस समय वह मत्स्य हँसकर मनुसे बोला कि हे भगवन्! थोड़ेही दिनमें जगत् के सव चर और अचर का प्रलय होगा, इसलिये आप एक नाव वनाईए और उसमें दृढ़ रस्सी वान्धिए। जव प्रलय का समय आवेगा, तव आप सप्त ऋषियों के सहित उसी नाव में चढ़िएगा और उसी नाव में सव जगत के वस्तुओं की वीजों को रक्षा पूर्वक क्रमसे रखलीजिएगा। आप उस नाव में वैठकर हमारा मार्ग देखते रहिएगा। अनन्तर वे दोनों इच्छानुसार चले गए। कुछ समय के पश्चात् प्रलय के समय मनुने मत्स्य का ध्यान किया। तव वह मत्स्य एक सींग धारण करके मनुके पास पहुंचा। मनुने नाव को रस्सी को मत्स्य के सिर में वान्ध दिया। उस समय आकाश और सव दिशा जल मय देखाती थीं। जगत के डूवजानेपर केवल सप्तऋषि, मनु और वह मछली देखाई देती थी। वह मत्स्य नाव को खींचते खींचते हिमांचल के सव से ऊंचे शिखर पर पहुंचा और उसके कहने के अनुसार ऋषियों ने नाव को हिमाचल के शिखर से वान्ध दिया। अनन्तर मत्स्य ने ऋषियों से कहा कि हमारही नाम प्रजापति और ब्रह्मा है। हमने मत्स्य रूप धारण करके आपलोगोंको इस समय से छोड़ाया है। मत्स्यके अन्तरध्यान होजाने पर वैवस्वत मनुने सृष्टि वनाने की इच्छा की। (यह कथा मत्स्यपुराण के प्रथम अध्याय में लिखी है)

(शान्ति पर्व्व ३३४ अध्याय) पहले समय स्वायम्भू मन्वन्तरके सत्य-युग में विश्वात्मा नारायण ४ मूर्ति धारण करके धर्म के पुत्र हुए—नर, नारायण, हरि, तथा कृष्ण (वसुदेव का पुत्र नहीं)। उनमें से नर और नारायण ने वदरीकाश्रम को अवलम्बन करके माया मय शरीर से निवास करते हुए तपस्या की थी। (३४४ वां अध्याय) नारदने नर नारायण के आश्रम में देव परिमाण से सहस्त्र वर्ष तक वास करके अनेक प्रकार से नारायण मंत्र को विधि पूर्वक जप किया और वह नर नारायण

की सब प्रकार से पूजा करते हुए उनके आश्रम में निवास करने लगे। (३४६ वां अध्याय) उन्हो ने वहां निवास करके भगवान का आख्यान सुन कर निज स्थान में गमन किया। नर नारायण उस आश्रम में उत्तम तपस्या करने लगे।

वामनपुराण—(पूर्वार्द्ध ६ वां अध्याय) धर्म की अहिंसा भार्य्या में हरि, कृष्ण (वासुदेव नहीं), नर और नारायण ये ४ पुत्र हुए।

वाराहपुराण—(४८ वां अध्याय) काशी का विशाल नामक राजा शत्रुओं से पराजित हो वदरिकाश्रम में जाकर गन्धमादन पर्वत की कन्दरे में तपकरने लगा। नर, नारायण प्रसन्न होकर राजासे बोले कि हे विशाल! आज से इस स्थान का नाम विशाला करके लोक में प्रसिद्ध होगा।

(उत्तरार्द्ध—१३९ वां अध्याय) हिमालय पर्वत के वदरी नामक स्थान में स्नान व्रत और भगवान के दर्शन करने से प्राणी को फिर माता के गर्भ में निवास नहीं होता। उसी वदरी में अग्निसत्यपद नाम तीर्थ है, जिसमें पर्वत के मध्य से उष्णोदक की धारा मूसल की वरावर गिरती है। वदरी में पंचशिख नामक तीर्थ है, जिसमें पर्वत के शिखर से पांच धारा गिरती है। जो प्राणी वहां निरशन व्रत करके प्राणत्याग करते हैं, वे विष्णुलोक में वसते हैं।

देवीभागवत—(८वां स्कन्ध पहला अध्याय) नारदजी पृथ्वी पर्य्यटन करते हुए नारायणश्रम में पहुंचे और वहां टिक कर नारायण से प्रश्न करने लगे।

ब्रह्मवैवर्तपुराण—(ब्रह्मखण्ड-२९ वां अध्याय) नारदने वदरीवन में नारायणाश्रम में जाकर नारायण ऋषि से प्रश्न किया। (३० वां अध्याय) नारायणने कथा आरंभ की।

आदिब्रह्मपुराण—(१८ वां अध्याय) अलकनन्दा नामक गंगा दक्षिण की ओर भारतखण्ड में जाकर समुद्र में मिलती है।

(९८ वां अध्याय) कृष्णजी बोले कि हे उद्धव! तू गन्धमादन पर्वतपर नर नारायण के स्थान पवित्र वदरिकाश्रम में तप की सिद्धि के लिये चला जा। (श्रीमद्भागवत—११ वे स्कन्ध, २९ वें अध्याय; विष्णुपुराण-५ वें अंश, ३७ वें अध्याय; और शिवपुराण-७ वें खण्ड १० वें अध्याय में भी कृष्ण की आज्ञा से उद्धव के वदरिकाश्रम में जाने की कथा लिखी हुई है)।

श्रीमद्भागवत—(पहला स्कन्ध-तीसरा अध्याय) धर्म की स्त्री के नर और नारायण विख्यात ऋषि हुए। उन्होंने संसार के जीवों को दिखाने के लिये बदरीकेदार में जाकर तप किया। (४ था स्कन्ध, पहला अध्याय) नर और नारायण ने भूमिके भार उतारने के लिये अवतार धारण किया। नर के अंश से अर्जुन हुए और नारायण ने कृष्ण रूप धारण किया।

(१२ वां अध्याय) राजा ध्रुव ३६००० वर्ष राज्य करने के उपरान्त अपने पुत्र को राजतिलक देकर बदरिकाश्रम को चले गए और वहां बहुत काल तक भगवान के स्वरूप का ध्यान करके विमान पर चढ़ ध्रुवलोक में गए।

(५ वां स्कन्ध-१७ वां अध्याय) विष्णु के चरण से उत्पन्न हुई गंगा ब्रह्मा के सदन में गिरती हैं और वहां पर ४ धाराओं में विभाग होकर चारों ओर को बहती हुई समुद्र में मिली है;—सीता, अलकनन्दा, चक्षु और भद्रा। इनमें अलकनन्दा नामक धारा पर्वतों को तोड़ती फोड़ती हेम कूट में होती हुई भारतवर्ष में व्याप्त होकर दक्षिण की ओर लवण समुद्र में जा मिली है।

गरुड़पुराण—(पूर्वार्द्ध ८१ वां अध्याय) नरनारायण का स्थान बदरिकाश्रम भुक्तिमुक्ति देनेवाला है।

पद्मपुराण—(सृष्टिखंड, ११ वां अध्याय) बदरिकाश्रम में गंगाजी के तट पर श्राद्ध करने से गया में पिंडदान करने के समान पितरों की मुक्ति हो जाती है। (उत्तरखंड, दूसरा अध्याय) सवा लाख पर्वतों के बीच में बदरिकाश्रम स्थित है। वहां श्वेतवर्ण नरजी और श्याम वर्ण नारायण जी रहते हैं। सूर्य के उत्तरायण रहने के समय वहां बड़ी पूजा होती है और ६ मास सूर्य के दक्षिणायन रहने पर वर्फ बहुत पड़ने के कारण वहां पूजा नहीं होती। मनुष्य बदरिकाश्रम के अलकनन्दा गंगा में स्नान करने से बड़े बड़े पापों से विमुक्त हो जाते हैं।

कूर्मपुराण—(उपरिभाग, ३६ वां अध्याय) हिमवान पर्वत नाना धातुओं से अलंकृत सिद्ध चारण और गंधर्वगणों से सेवित ८० योजन लंबा है। गंगा नदी और हिमवान पर्वत सर्वत्र पवित्र हैं। हिमालय पर नारायण का अति प्रिय स्थान बदरिकाश्रम है। वहां जाने से प्राणी का संपूर्ण पाप

विनाश हो जाता है और वहां श्राद्धादि कर्म करने से अक्षयफल प्राप्त होता है।

स्कंदपुराण—(केदारखंड, प्रथम भाग, ५७ वां अध्याय) कण्वाश्रम से नंदगिरि (अर्थात् नंदप्रयाग) तक पुण्यक्षेत्र बदरिकाश्रम है, जिस के सेवन करने से भुक्ति और मुक्ति दोनों मिलती हैं। महर्षि कण्व के आश्रम में नारायण को नमस्कार करने से दुरात्मा मनुष्य भी दुःख रहित पद को प्राप्त करता है और नंदप्रयाग में स्नान करके नारायण की पूजा करने से मनुष्य को सब कुछ प्राप्त होता है। कलियुग में जो पुरुष बदरिकाश्रम में जाते हैं वे धन्य हैं। यहां ब्रह्मादिक देवता निवास करते हैं। वह क्षेत्र अनेक तीर्थों से सुशोभित है। बदरिकाश्रम में निवास करने वाला विष्णु रूप होजाता है। वह क्षेत्र ४ प्रकार का है;—स्थूल, सूक्ष्म, अति सूक्ष्म और शुद्ध। वह १२ योजन लंबा और ३ योजन चौड़ा पापी लोगों को अगम है। गंधमादन पर्वत पर बदरिकाश्रम में कुबेर आदिक शिलाओं और नाना तीर्थों से सुशोभित नरनारायण का पवित्र आश्रम है। उसी स्थान में अग्नि तीर्थ से उत्पन्न तप्त जल की धारा देखने में आती है। जो मनुष्य अज्ञान वस बदरीनाथ जी का नैवेद्य परित्याग करता है, वह चांडाल से भी अधम है। यदि चांडाल भी नैवेद्य को छू देवे तौ भी उसको खाने में कोई दोष नहीं है। जो मनुष्य बदरिकाश्रम में पितरों को कण मात्र भी जल देता है; जानना चाहिए कि वह पितरों की मुक्ति होने का संपूर्ण कार्य कर चुका। काशी, कांची, मथुरा, गया, प्रयाग, अयोध्या, अवंती, कुरुक्षेत्र इत्यादि तीर्थ जिन पापों को नहीं छुड़ा सकते और जिस गति को नहीं दे सकते उस को बदरिकाश्रम देता है। वहां पापों का विनाश करने वाली साक्षात् गंगाजी विद्यमान हैं और विष्णु, ब्रह्मा, शिवजी आदि देवता निवास करते हैं। जब तक शरीर शिथिल नहीं हो तबही तक बदरिकाश्रम में जाना चाहिए।

(५८ वां अध्याय) गंगा के दक्षिण भाग में नर नामक पर्वत पर हजारों तीर्थ और सैकड़ों लिंग विद्यमान हैं, जिन में से कितने अगम्य और कितने गम्य हैं। उस स्थान पर तप्त और शीतल जल के बहुतेरे पवित्र कुंड देखने में आते हैं। उत्तर के पर्वत पर दिव्यमहर्षि, सिद्ध, नाग, इत्यादि रहते हैं। बैखा-

नस मुनि के स्थान के पास पर्वत पर योगीश्वर नामक भैरव हैं; उन को नम-स्कार करके सूक्ष्म क्षेत्र में जाना चाहिए। कुवेरशिला को नमस्कार करने से मनुष्य दरिद्री नहीं होता। नरनारायण पर्वत को मुनि लोग वंदना करते हैं। नरनारायण के आश्रम में शरीर छोड़ने से प्राणी जन्म मरण से रहित होजाता है। ऋषिगंगा में स्नान करके उस के जल पीने से मनुष्य परम धाम को जाता है। जो मनुष्य कूर्मधारा के पवित्र जल में आचमन और पंचशिलाओं को नमस्कार और परिक्रमा करके पूजन करता है वह इस लोक में धन्य है। जो वदरिकाश्रम में केदारेश्वर जी का पूजन करता है वह शिवलोक में पूजित होता है। वदरी-नाथजी की परिक्रमा करने से संपूर्ण पृथ्वीदान करने का फल मिलता है। उस क्षेत्र में विष्णु लोक को देनेवाला नारदशिला है; वहां जो कर्म किया जाता है उसका कोटिगुण फल मिलता है। जो मनुष्य नारदकुंड में स्नान करता है, वह जन्म मरण से रहित होजाता है। सव कामनाओं की देने वाली वाराहीशिला और गंगा जी में वाराहकुंड है, जिस में स्नान करने से अनंत फल लाभ होता है। सव पापों के नाश करनेवाली नारसिंही शिला तथा भोग और मोक्ष को देनेवाला नृसिंह कुंड है। लोक में दुर्लभ मार्कंडेयशिला है, जिस का स्पर्श करने से मनुष्य सव पाप से छूट जाता है। जिस स्थान पर गरुड़जी ने तप करके हरिके वाहन वने, उस स्थान पर गरुड़शिला है, जिसके दर्शन, स्पर्श और पूजन करने से मनुष्य नारायण का रूप होजाता है। इन ८ शिलाओं के मध्य में श्रीवदरीनाथ जी का आसन और वन्हितीर्थ है। उसी स्थान पर अग्नि ने हरि की आराधना करके सर्व वस्तुओं को जलाने की शक्ति प्राप्त की थी। पितर लोग ब्रह्मकपाल में अपने वंश जो की चाह करते हैं; इस लिये वहां पिंडदान करना उचित है। ज्ञान से वा अज्ञान से भक्ति से अथवा विना भक्ति से जो मनुष्य उस स्थान पर पिंडदान और जल में तर्पण करता है दुर्गति में पड़े हुए उस के पापी पितर भी तरजाते हैं। ब्रह्मकपाल पर पितर कर्म करने वालों को गया में जाने से और अन्य तीर्थों में तर्पण करने से क्या प्रयोजन है। उस स्थान में जो जो कर्म किये जाते हैं उन का कोटिगुणा फल मिलता है, इस लिये वहां पिंडदान और तर्पण अवश्य करना चाहिये।

वहां पिंडदान करने से मातृवंश, पितृवंश, शाले, सम्बन्धी, मित्र और दूसरे प्रिय जन, वृक्ष, पशु, पक्षी आदि किसी योनि में प्राप्त होय विष्णु के परम पद को पाते हैं। गंगाजी में शिलारूप से नृसिंहजी निवास करते हैं। वहां भुक्ति मुक्ति को देने वाला नारायण कुंड है। बदरीनाथ के धाम से पश्चिम आधे कोस पर उर्वशी कुण्ड है; इसी स्थान पर राजा पुरूरवाने ५ वर्ष उर्वशी के साथ रमण करके पुत्रों को उत्पन्न किया था। बदरिकाश्रम में साढ़े तीन किरोड़ तीर्थ हैं।

बदरीनाथ से २ कोस पर स्वर्णधारा तीर्थ है, जिसमें स्नान करके ३ रात्रि उपवास करने से कुवेरजी का दर्शन होता है। वैखानसतीर्थ में एक वर्ष स्नान और फलाहार करने से मनुष्य मृत्युको जीत लेता है। गंगा के शेषतीर्थ में स्नान करनेवाला अच्छे भोगों को भोग कर परलोक में परमगति पाता है। बदरीनाथ के वाम भाग में इंद्रधारा तीर्थ है। मनुष्य वहां स्नान करने से इंद्रके समान हो जाता है। सर्व वेदमय वेदधारा तीर्थ है, जिसमें स्नान करने से ब्रह्म-हत्यादि पाप छूट जाता है। सब पापों के नाश करने वाला वसुधारा तीर्थ है, जिस के जल का विंदु पापियों के मस्तक पर नहीं पड़ता। स्नान कर के धर्म-शिला पर बैठकर अष्टाक्षर मंत्र से ८ लाख जप करने से विष्णु सारूप मिलता है। वहां सोम तीर्थ है, जहां चंद्रमा ने तप कर के सुन्दर रूप पाया। सत्यपद तीर्थ में स्नान करने से विष्णु सायुज्य और चक्रतीर्थ में स्नान करने से विष्णु लोक मिलता है। रुद्रतीर्थ में स्नान करने से रुद्रलोक और ब्रह्मतीर्थ में स्नान करने से ब्रह्मलोक में निवास होता है।

(५९ वां अध्याय) महर्षि नारद विष्णुमना का पुत्र विष्णुरतिनाम से प्रसिद्ध हुए थे। उन को गान विद्या का व्यसन हुआ। वह गवैओं के साथ रहने लगा; तब उसके पिता ने मूर्ख समझ कर उसको घर से निकाल दिया। विष्णुरति सब का संग छोड़ कर कैलास पर्वत पर बदरीवन में जाकर नारायण के समीप गान करने लगा। वह गंगा जी में स्नान करके नित्य विष्णु के समीप उनका गुनगान करता था। महाविष्णु प्रकट होकर बोले कि हे विष्णु-रति! तुम इच्छित वर मांगो। विष्णुरति बोला कि तुह्मारे में मेरी भक्ति होवे; गान विद्या में, मैं कुशल होऊं और संसार मुझको स्पर्श न करे। भगवान बोले

कि सब होगा; किंतु शिवजी की आराधना करने पर तुम राग विद्या में कुशल होगे। पूर्व काल में तुह्मारा नाम नारद था; दक्ष के शाप से तुम संसार में प्राप्त हुए हो; तुम ने नार अर्थात गंगा का जल मुझ पर चढ़ाया इससे अब भी तुम नारद नाम से प्रसिद्ध होगे; यह नारदकुंड मुक्ति को देनेवाला होगा। ऐसा कह विष्णु अन्तर्द्धान होगए। विष्णुरति नारदत्व पाया और पीछे वह शिवजी की आराधना करके गान विद्या में परम कुशल होगया।

(६२ वां अध्याय) गंगाद्वार से ३० योजन पूर्व भोग और मोक्ष का देनेवाला महाक्षेत्र (अर्थात बदरिकाश्रम) है। वहां पापों को छुड़ानेवाले अनंत तीर्थ और तीनों लोकों को पवित्र करने वाली गंगा हैं। मनुष्य एक बार बदरीनाथ के दर्शन करने से संसार में फिर नहीं जन्म लेता। बदरीनाथ का नैवेद्य भोजन करने से अभक्ष भक्षण का दोष छूट जाता है।

प्रथम केदारनाथ की पूजा करके तब बदरिकाश्रम में जाकर बदरीनाथ का दर्शन करना चाहिए। बिना केदारनाथ के दर्शन किए बदरीनाथ की यात्रा निष्फल होजाती है। ऋषिगंगा से उत्तर सूक्ष्म क्षेत्र है। उस में जाकर एक रात्रि क्षेत्रोपवास करना चाहिए। प्रातःकाल गंगाजी और नारदकुंड आदि तीर्थों तथा वन्हितीर्थ में स्नान करके केदारभवन में जाना उचित है। वहां यथाशक्ति नैवेद्य चढ़ावे और दर्शन, प्रदक्षिणा तथा दान करे। उस क्षेत्र में जो कर्म किया जाता है उस का फल कोटिगुणा होता है। बदरिकाश्रम में जाने वाले मनुष्यों का संसार में फिर जन्म नहीं होता; देवता लोग भी उनकी पूजा करते हैं।

(दूसरा भाग, पहला अध्याय) नंद पर्वत से काष्ठगिरि तक केदारक्षेत्र है। रत्नस्तंभसे माया क्षेत्र तक हिमालय के पास में पुण्य दायक स्थान है। जो मनुष्य इस में वास करते हैं; मुक्ति उन के हाथ में रहती है।

पांचवां अध्याय।

(गढ़वाल जिले में) नंदप्रयाग, कर्ण-प्रयाग, सोलचौरी; (कमाऊं जिले में) रानीखेत, अल्मोड़ा, नैनीताल, भीमताल; (तराईजिलेमें) काठगोदाम, काशीपुर और हलद्वानी।

नंदप्रयाग

उलटे फिरने का मार्ग—मैं ३ रात्रि बदरिकाश्रम में रहकर ज्येष्ठ शुक्ल ४ के प्रातः काल वहां से पीछे की ओर फिरा और १६½ मील विष्णु-प्रयाग तक पूर्व कथित मार्ग-से आया। विष्णुप्रयाग से चलने पर ¼ मील आगे जोशीमठ की सड़क बाएं तरफ छूट गई। मैं नीचे की सीधी सड़क से चला। विष्णु प्रयाग से १¼ मील आगे ४ छप्पर की २ दुकानें और कई झरने और जगह जगह खेतों का मैदान है। चट्टी के पहले जगह जगह पर ४ झरने मिलते हैं और ¼ मील आगे कई झरने हैं। विष्णुप्रयाग से १¼ मील पर जोशीमठ वाली सड़क मिल जाती है। विष्णुप्रयाग से वहां तक कड़ी चढ़ाई है। बदरीनाथ को जिस रास्ते से लोग जाते हैं, चमोली तक ४४¼ मील (जोशीमठ छोड़कर) उसी सड़क से लौट आते हैं। केदारनाथ होकर बदरिकाश्रम जानेवाले यात्रियों को लौटने पर चमोली से अलकनन्दा के बाएं के नए मार्ग से चलना होता है।

मैं चमोली से बरहे अर्थात रस्से का झूला लांघ कर अलकनन्दा नदी के बाएं किनारे चलने लगा। कर्णप्रयाग की तरफ के नीचे की सड़क बह गई थी; अब ऊपर नई सड़क बनी है। चमोली से इधर जाड़ा बहुत घट जाता है, मक्खी अधिक हैं, जगह जगह आम और केला के वृक्ष और अलकनन्दा के

किनारे वालू और मैदान देख पड़ते हैं। चमोली से ½ मील आगे छोटा झरना और १¾ मील आगे पुल के नीचे एक साधारण झरना है। वहां से अलकनन्दा के उसपार एक सड़क देख पड़ती है, जो पश्चिम की ओर अगस्त्यचट्टी तक गई है। बकरी भेड़वाले व्यापारी जिन्स लेकर उस रास्ते से अगस्त्यचट्टी होकर आगे जाते हैं। चमोली से २ मील आगे कुवेलचट्टी है।

कुवेलचट्टी—यहां लम्बे चौड़े २ पक्के और १ छप्परवाला मकान, कुवेल नामक नदी और चट्टी के आस पास ढालू मैदान और कई पनचक्की हैं। कुवेलचट्टी से आगे १¼ मील पर झरना; २ मील पर छप्परवाले ३ मकान और एक झरना; उससे थोड़े आगे छप्पर का एक दुकान और एक झरना; ३ मील आगे एक छप्पर की दुकान, बड़ा झरना, नीचे उजाड़ बस्ती और एक पक्का मकान; ३¼ मील आगे एक झरना; ४½ मील आगे एक झरना; ४¾ मील आगे एक झरना और ५ मील आगे नन्दप्रयाग है। चमोली से सड़क के पास छोटे छोटे वृक्षों का जंगल और पर्वत के ऊपर जगह जगह चीड़ आदि के बड़े बड़े वृक्षों का वन देख पड़ता है।

नन्दप्रयाग—इस से नीचे अलकनन्दा के पानी के पास पहले पक्का बाजार, नन्दजी, लक्ष्मीनारायण और देवी के मन्दिर, वाग और पुल था; जो सन् १८९४ में गोहना झील के टूटने पर सब के सब वह गए, वहां अब वालू का मैदान है। उस समय वहां ११३ फीट ऊंचा अलकनन्दा का पानी हुआ था।

अब अलकनन्दा के ऊपर कण्डासुगांव के पास नन्दप्रयाग के एक मंजिले दो मंजिले तीस पैंतीस पक्के मकान बने हैं। इनमें बहुतेरे बनरहे हैं। वहां कपड़ा, बरतन, मसाला, जिन्स और कस्तुरी, चमर, शिलाजित, निर्विषी, जहरमोहरा आदि पर्वती चीजें मिलती हैं। दुकान्दार के यहां नोट बिक जाता है। नन्दप्रयाग में एक डाक खाना और कई झरने हैं।

नन्दप्रयाग गढ़वाल जिले के पंचप्रयागों में से एक है। नन्दप्रयाग बस्ती से ½ मील नीचे ननवानी नदी, जिसको नन्दा भी कहते हैं, पूर्व के त्रिपुरली से आकर अलकनन्दा में मिली है। नन्दा के बाएं अलकनन्दा के संगम तक वालू का मैदान है। नन्दा नदी पर ११५ फीट लम्बा लोहे का लटकाऊ पुल बना है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—स्कंदपुराण—(केदारखंड, प्रथम भाग, ९७ वां अध्याय) कण्वाश्रम से लेकर नंदगिरि (अर्थात नंदप्रयाग) तक पुण्यक्षेत्र (बदरिकाश्रम) है । जो मनुष्य नंदप्रयाग में स्नान करके नारायणजी की पुजा करता है उसको सब पदार्थ मिल जाता है और मुक्ति उसके हाथ में हो जाती है ।

(९८ वां अध्याय) पूर्वकाल में इस स्थान पर नंद नामक धर्मात्मा राजा ने विधि पूर्वक यज्ञ करके बहुत अन्न और दक्षिणा ब्राह्मणों को दिया। ब्रह्मादिक देवताओं ने मूर्तिमान होकर अपने अपने भागों को ग्रहण किया और प्रसन्न होकर उनके नाम से उस क्षेत्रका नाम नंदप्रयाग रक्खा। उस स्थान पर नंदा और अलकनंदा के संगम में स्नान करने से मनुष्य शुद्ध हो जाता है। वहां विष्णुभगवान शिवजी और वशिष्ठजी के साथ सर्वदा निवास करते हैं। नंदप्रयाग से १ योजन पर वशिष्ठेश्वर शिवलिंग हैं।

लिंगासू चट्टी—नन्दप्रयाग से ½ मील आगे नन्दानदी पर लोहे का पुल, ३ मील आगे सुरला चट्टी पर एक मोदीका एक पक्का मकान और एक झरना और नीचे पन्द्रह बीस घर-की बस्ती और अलकनंदा के किनारे ½ मील लंबा चौड़ा खेत और मैदान है; उसके आस पास १¼ मील चीड़ के बड़े बड़े दरख्तों का घना जंगल है। नन्दप्रयाग से ३½ मील आगे एक झरना; ३¼ मील आगे एक मोदी और एक झरना; ४½ मील आगे बड़े झरने पर पुल; ४¼ मील आगे एक मोदी के फूस के २ मकान, १ झरना और १ नई कोठरी में गौरीशंकर की मूर्तियां; ५ मील आगे एक छोटी नदी, पनचक्की, दो तीन झरने और एक मोदी के फूस के २ मकान; ५¼ मील आगे केले के झाड़ों के साथ एक बस्ती, ६ मील आगे एक छोटा झरना; और ६½ मील आगे लिंगासूचट्टी है । चमोली से इधर राह सुगम है।

लिंगासूचट्टी पर मोदियों के बड़े २ आठ नव पक्के मकान, एक कोठरी में नृसिंहजी और एकमें चण्डी की मूर्ति और चट्टी के पास लिंगासू नामक पहाड़ी बड़ी बस्ती और खुला हुआ एक बड़ा झरना है। चट्टी से अलकनन्दा

दूर है। बीच में खेतों का बड़ा मैदान है। लिंगासू से थोड़े आगे एक छोटी नदी पर काठ का पुल और पनचक्की है।

लिंगासूचट्टी से १/४, १, १½, और २ मील पर एक एक झरना; २½ मील आगे अलकनन्दा पर झूला; ३½ मील आगे लकड़ियों की बल्ली और फूस से बना हुआ एक मोदी का मकान और झरना; ४ मील आगे इस पार एक छोटा झरना और उस पार खेतों का मैदान; और तीन चार बस्ती; ४½ मील आगे एक बड़ा और एक छोटा झरना; ५ मील आगे एक झरना और ६ मील आगे कर्णप्रयाग है। चमोली से वहां तक रास्ता सुगम उतराई का है।

कर्णप्रयाग

अलकनन्दा पूर्वोत्तर से वहां आकर वहां से पश्चिम रुद्र प्रयाग को गई है। पिंडारक नदी, जिसको कर्णगंगा भी कहते हैं, दक्षिण नन्दा कोटि से आकर कर्णप्रयाग बाजार से ½ मील, उत्तर अलकनन्दा से मिलगई है। पिंडारक नदी का पानी हरित और साफ है। नदी के लोहे का पुल टूट गया है। पांच छः मोटे २ सहतीर रक्ख कर पुल बना है। कर्णप्रयाग में पूर्व समय में कुन्ती के पुत्र राजा कर्ण ने सूर्य्यका बड़ा यज्ञ किया था।

कर्णगंगा के दहिने किनारे पर कर्णका मन्दिर; संगम पर कर्णशिला नामक एक छोटा चट्टान; कर्णगंगा पर लटकाऊ पुल; और बाएं किनारे पर कर्णप्रयोग का बजार, अस्पताल, थाना, आदि थे; जो सन् १८९४ के गोहना झील के टूटने पर, जब अलकनन्दा का पानी वहां १३० फीट ऊंचा हुआ था, सब के सब बह गए। अब कर्ण के मन्दिर का चबूतरा बाकी है, जिसके पास महादेव का एक नया मन्दिर बना है और पुराना बाजार से थोड़ा दक्षिण पर्वत के जंघे पर कर्णप्रयाग बसा है। वहां बीस पचीस पक्के मकान, एक पक्की धर्मशाला, अस्पताल, पुलिस की चौकी, पोष्ट आफिस और २ झरने हैं और पूरी मिठाई आदि सब चीजें मिलती हैं। इधर आटा क्रम क्रम सस्ता होता जाता है। कर्णप्रयाग में ३ आने सेर आटा बिकता है। कर्णप्रयाग गढ़वाल जिले के प्रसिद्ध पंच

प्रयागों में से एक है, जो केदारनाथ और बदरीनाथ के यात्रियों को सब से पीछे मिलता है।

कर्णप्रयाग से यात्रियों के लिये देश जाने के दो रास्ते हैं, एक वहां से पश्चिम रुद्रप्रयाग और रुद्रप्रयाग से दक्षिण श्रीनगर, देवप्रयाग और हृषीकेश होकर हरिद्वार को और दूसरा दक्षिण आदिबदरी, मिलचौरी होकर काठगोदाम को। पंजाबी लोग और हरिद्वार के आस पास के यात्री हरिद्वार जाकर और पूर्व—दक्षिण के यात्री काठगोदाम जाकर रेलगाड़ी पर चढ़ते हैं। कर्णप्रयाग से हरिद्वार ११२¾ मील और काठगोदाम १०४¼ मील है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—स्कंदपुराण—(केदारखंड, प्रथम भाग, ८१ वां अध्याय) महाराज कर्ण ने कैलास पर्वत पर नंद पर्वत के निकट गंगा (अर्थात अलकनंदा) और पिंडारक के संगम के समीप शिवक्षेत्र में सूर्य का बड़ा भारी यज्ञ किया और वह शिवजी की आराधना करके देवीजी के भवन में स्थित हुआ। सूर्य भगवान ने कर्ण को अभेद कवच, अक्षय तूणीर और कर्णेयन्द दिया और उस क्षेत्र का नाम कर्णप्रयाग रक्खा। तब से ब्रह्मवादी मुनि लोग वहां स्थित हुए; उनके नामों से बहुत कुंड प्रसिद्ध हुए, जिनमें स्नान करने से सूर्यलोक मिलता है। वहां सूर्यकुंड है, जिसमें स्नान करनेवालों को चारो वर्ग मिलता है। कर्णप्रयाग में उमा नाम्नी देवी और उमेश्वर नामक महादेव स्थित हैं। जब कर्ण ने शिवजी की आराधना की तब शिवजी उस स्थान पर कर्णेश्वर नाम से प्रसिद्ध हो गए, जिनकी पूजा करने से १०० यज्ञ करने का फल मिलता है। वहां रक्तवर्ण विनायकशिला है, जिसका स्पर्श और परिक्रमा करने से विघ्नों का नाश होता है। जो मनुष्य कर्णप्रयाग में मरता है वह एक कल्प तक शिवपुर में निवास करता है।

रुद्रप्रयाग की सड़क—कर्णप्रयाग से ५ मील चटवा पीपलचट्टी, १० मील वगड़ासू, १३ मील शिवानन्दीचट्टी और २१ मील रुद्रप्रयाग है। सब चट्टियों पर दुकानें और झरने हैं। हरिद्वार जानेवाले यात्रियों को रुद्र प्रयाग से ऊर्द्ध लिखित मार्ग से हृषीकेश होकर और काठगोदाम जानेवालों को नीचे लिखे हुए मार्ग से जाना चाहिए।

सेमलचट्टी—काठगोदाम जानेवाले यात्रियों को कर्णप्रयाग से अलकनन्दा नदी छूट जाती है, पिंडारक नदी के किनारे चलना होता है। काठगोदाम के मील के पत्थरों का नम्बर कर्णप्रयाग से आरंभ होता है। कर्णप्रयाग से चलने पर पहले सेमलचट्टी मिलती है। कर्णप्रयाग से आगे ½ मील, ¾ मील और १ मील पर एक एक झरना; २ मील आगे एक गुफा और एक खुला झरना; २½ मील आगे दो जगह दो झरने और ३¾ मील आगे सेमल चट्टी है।

सेमलचट्टी पर छ सात पक्के मकान, एक सरकारी पक्की धर्मशाला, झरना, पिण्डारक नदी पर झूला और चट्टी तक ½ मील खेत का मैदान है। वहां आदिवदरी नामक नदी आकर पिंडारक नदी में मिली है। वहां से आदिवदरी नदी के वाएं और सन्मुख चलना होता है।

सेमलचट्टी से ¾ मील आगे नदीपर ११५ फीट लम्बा लोहाका लटकाऊं पुल है। उसको पार होकर आदिवदरी नदी के दहिने किनारे चलना होता है। पुल पार एक झरना है। संगम से आगे पिंडारक नदी के वाएं होकर एक सड़क नारायणवगड़ को गई है। सेमलचट्टी से १¼ मील आगे एक झरना; १¾ मील आगे २ झरने; २¼ मील आगे सिरोलीचट्टी पर मोदीके छप्पर का मकान और दो झरने; ३ मील आगे छोटा झरना; ३½ मील आगे छोटा झरना; ३¾ मील आगे लकड़ी फूस से वना हुआ वटौलीचट्टी पर एक मोदी का मकान, दो झरने, दो पीपल के पेड़ जहां तक वड़े वड़े वृक्षों के जंगल की विचित्र हरियाली देखने में आती है; आगे २ झरने; ४¾ मील आगे छोटा झरना; ५½ मील आगे २ झरने; ५¾ मील आगे छोटे छोटे २ झरने; ६¼ मील आगे एक कोठरी; जहां से पश्चिम एक सड़क पौड़ी को गई है; उस पार एक छोटी नदी इस नदी से मिली है; ६¾ मील आगे एक पीपल का पेड़ और २ झरने; और ८ मील आगे आदिवदरी है।

आदिवदरी—यह वदरी पंचवदरी में से नहीं है। पंचवदरी में के आदिवदरी कुंभारचट्टी से ६ मील ऊर्जम गांव में है। कर्णप्रयाग से वहां तक सुगम चढ़ाव उतार की सड़क और जगह जगह चौरस भूमि है।

आदिवदरी चट्टी पर मोदियों के दश वारह मकान, जिनमें एक वहुतही वड़ा है; एक सरकारी पक्की धर्मशाला; पोष्टआफिस; खुला हुआ एक वड़ा झरना और नीचे एक नदी और खेत का मैदान है।

चट्टी के पास १४ देवताओं के शिखरदार छोटे छोटे चौदह मन्दिर हैं। वहां के सव देवताओं में आदिवदरी प्रधान हैं। इनका मन्दिर वहां के सव मन्दिरों से वड़ा है। आदिवदरी की सुन्दर छोटी मूर्ति मुकुट, वस्त्रों से सुशोभित है। १४ मन्दिरों में से ६ तो केवल चार पांच हाथ ऊँचे हैं। मन्दिरों में नीचे लिखे हुए देवता हैं,—(१) आदिवदरी, (२) पार्वती, (३) अन्नपूर्णा, (४) महिषमर्दिनी देवी, (५) गणेशजी, (६) वुढ़ाकेदार, (७) गरुड़, (८) सत्यनारायण, (९) लक्ष्मीनारायण, (१०) चक्रपाणि, (११) परशुराम, (१२) पारब्रह्म वा परब्रह्म, (१३) गोकुलस्वामी और (१४) हनूमानजी। मन्दिरों के पास पांच छ ब्राह्मण रहते हैं।

आदिवदरी से ¼ मील आगे १ वड़ा और २ छोटे झरने; १¼ मील आगे छोटी छोटी २ नदियों का संगम; १½ मील, १¾ मील और २ मील पर एक एक झरने; २¾ मील आगे ३ झरने और १पक्का घर; ३¼ मील और ३½ मील पर एक एक झरना और ४¾ मील आगे जोकापानीचट्टी है।

जोकापानीचट्टी—वहां लकड़ी के शाखों और फूस के छप्पर से वने हुए चार पांच मकान और एक झरना है। आदिवदरीवाली नदी उस चट्टी से पहले छूट जाती है और ½ मील पहले ¾ मील की कड़ी चढ़ाई मिलती हैं।

जोकापानी चट्टी से ½ मील आगे एक झरना और वहां से १ मील तक कड़ी चढ़ाई; ¾ मील, २ मील, २¼ मील, २½ मील, २¾ मील पर एक एक झरना; ३ मील आगे कालामाटीचट्टी पर लकड़ी की शाखों और फूस के छप्परों से वने हुए छोटे छोटे ५ मकान और एक झरना; ३½ मील आगे एक झरना; ३¾ मील आगे सिंहकोटीचट्टी पर लकड़ी की शाखों और फूस के छप्परों से वने हुए ३ मकान और २ झरने; ४मील; ४¼ मील और ५ मील पर एकएक झरना और ५¼ मील पर गोहड़चट्टी है। जोकापानीचट्टी से सिंहकोटीचट्टी तक मार्ग के पास वड़े वड़े वृक्षों का सघन वन है।

गोहड़चट्टी—वहां एक नदी पर काठ का पुल; दोनों किनारों पर २ मोदियों के चार पांच पक्के मकान; उस पार एक झरना; दोनों तरफ ऊपर जगह जगह पक्के मकानों की चार पांच बस्तियां और नदी के किनारों पर खेत का ढालू मैदान है।

गोहड़चट्टी से नदी पार हो कर १/४ मील तक नदी के बाएं किनारे चलना होता है। आगे नदी दहिने छूट जाती है, बड़ा मैदान मिलता है। ३/४ मील आगे लोहबा में दहिने एक अंगरेजी बंगला और दो तीन पक्के मकान हैं, जिन के पास चाह की खेती होती है। बंगले के चारो तरफ ढालू बड़ा मैदान है। गोहड़चट्टी से १ १/२ आगे धोबीघाटचट्टी है।

रामगंगा नदी—यह नदी ऊपर लिखा हुआ लोहबा के पहाड़ से निकली है। धोबीघाट के पास दोनों तरफ से दो धारें आकर इसमें मिली हैं; तो भी वहां गर्मी की ऋतुओं में जगह जगह आदमी रामगंगा को फांद जाते हैं। यह नदी मुरादाबाद और बरैली होकर ३०० मील बहने के उपरान्त फर्रुखाबाद के नीचे गंगा में मिल गई है।

धोबीघाटचट्टी—वहां सड़क के दोनों किनारों पर पन्द्रह सोलह पक्के मकान, पोष्ट आफिस, पुलिस की चौकी और रामगंगा नदी है।

धोबीघाट चट्टी से रामगंगा के बाएं किनारे चलना होता है। ३/४ मील आगे उस पार बहुत छोटे छोटे २ मन्दिर, इस पार दो पन चक्की और एक झरना; १ १/४ मील आगे एक बस्ती और १ बंगला; १ ३/४ मील आगे १ बड़ी बस्ती; २ १/२ मील आगे बड़ा झरना; २ ३/४ मील आगे ऊपर १ गुफा; ३ १/४ मील आगे मोदी का एक छोटा मकान; ३ ३/४ मील आगे एक झरना; ४ १/४ मील आगे छोटे छोटे कई झरने; ४ ३/४ मील आगे एक झरना; और ५ ३/४ मील आगे मीलचौरी चट्टी है।

धोबीघाट चट्टी से मीलचौरी तक रामगंगा के दोनों तरफ जगह जगह खेतोंका बड़ा मैदान और बस्तियां हैं। आदिबदरी से वहां तक सुगम उतराई का मार्ग और जगह जगह सड़क समतल है। कर्णप्रयाग से मीलचौरी तक

सड़क चौड़ी और बिना ठोकर की है । उस सड़क पर जिन्स लादे हुए घोड़े चलते हैं। मोदियों के मकान मन्दाकिनी और अलकनन्दा के किनारों के मकानों के समान बड़े बड़े नहीं हैं। छोटी छोटी चट्टीयों पर भाजी आदि बहुत चीजें नहीं मिलतीं। हवा पानी अच्छा नहीं है। बाई, पेट मरोड़, आदि कई रोग बहुत लोगों को होते हैं। कर्णप्रयाग से इधर हरे के [illegible] और फल बहुत हैं और पदुम काठ और तेजबल की लाठी बहुत बिकती है।

मीलचौरी

मील चौरी में रामगंगा नदी पर आगे पीछे काठके २ पुल हैं। नदी के बाएं किनारे पर मोदियों के ४ मकान और झम्पान और कूली का ठीकेदार और दहिने किनारे पर आठ दस पक्के मकान, पुलिस की चौकी और चीठी का बक्स है।

हरिद्वार और हृषीकेश से आये हुए झम्पान और कंडीवाले कूली मील-चौरी से अपने घर को बिदा होते हैं। वहां नए झम्पान और बोझेवाले कूली ठीकेदार के मारफत मुकर्रर होते हैं। मैंने काठगोदाम जाने के लिये १५ रुपए नकद और प्रतिदिन दो सेर आटा देने के करार पर एक झम्पान भाड़ा पर किया।

मीलचौरी से आगे गढ़वाल जिला छूट कर कमाऊं जिला आजाता है, जिस के हाकिम अल्मोड़े में रहते हैं। मील के पत्थरों का नम्बर अल्मोड़े से आरंभ हुआ है। अल्मोड़े से मीलचौरी ४३½ मील ऊपर है।

मीलचौरी से ¾ मील आगे लोहागढ़ी नामक शिखर पर एक कोठरी में भैरवनाथ की मूर्ति; १½ मील आगे २ झरने; २ मील आगे सिमालखेतचट्टी पर लकड़ी की शाखों और फूस के छप्परों से बने हुए छोटे छोटे २ मकान और १ झरना; २½ मील और २½ मील आगे एक एक झरना; ३½ मील आगे खुला हुआ झरना; ३¾ मील आगे नारायणचट्टी पर लकड़ी की शाखों और फूस के छप्पर से बना हुआ १ मकान और थोड़ी दूर पर एक बस्ती; ४½ मील आगे खुला

हुआ एक झरना, जहां से दहिने पहाड़ के ऊपर केदारनाथ नामक एक शिव का मन्दिर देख पड़ता है, ५½ मील आगे एक बड़ी बस्ती; ६ मील आगे वृषभूचट्टी पर लकड़ी की शाखों और फूस के छप्परों से बने हुए ३ मकान, १ झरना, एक कोठरी में कोई देवता, चट्टी के पास एक बस्ती और थोड़े आगे एक दूसरी बस्ती और एक झरना, ६¾मील आगे चबूतरे के साथ पीपल का एक बड़ा वृक्ष; ७¼ मील आगे मोदी के २ घर और ८ मील आगे चौखुटिया है, जिसको गनाई भी कहते हैं।

मीलचौरी से लोहागढ़ तक कड़ी चढ़ाई और सिमालखेतचट्टी से आगे की घाटी में खेत का बड़ा मैदान है।

गनाई वा चौखुटिया— मीलचौरी से छुटी हुई रामगंगा चौखुटिया के पास फिर मिल जाती है और वहां से दक्षिण मुरादाबाद गई है। चौखुटिया के पास रामगंगा पर १२५ फीट लम्बा लोहा का पुल बना है। नदी के दहिने किनारे डाकखाना, बाएं किनारे पर पन्द्रह बीस पक्के मकानों का बाजार और बाजार से ½ मील दूर सफाखाना है। चौखुटिया में आटा २¼ आने सेर बिकता था। बाजार के लोग रामगंगा का पानी पीते हैं। सफाखाना के पास एक छोटा झरना है।

चौखुटिया से आगे २ सड़क गई हैं,-एक दक्षिण की ओर चिलकिया अर्थात् रामनगर होकर मुरादाबाद को और दूसरी दक्षिण-पूर्व काठगोदाम को। अब अधिक यात्री काठगोदाम जाकर रेलगाडी में बैठते हैं।

जो लोग मुरादाबाद के स्टेशन पर रेल में सवार होना चाहते हैं, उनको नीचे लिखे हुए रास्ते से जाना चाहिए। चौखुटिया से ४ कोस चौपट्टा, ८ कोस पर बुढाकेदार, ११ कोस पर भिकीसैन, १७ कोस पर गवानी, २३ कोस पर मोहन चौकी, २७ कोस पर उमादेवी का मन्दिर, २८ कोस पर गिरिजा-चट्टी, और ३५ कोस पर रामनगर है, जिसको चिलकिया भी कहते हैं। रामनगर से पहले पहाड़ छूट कर है, देश शुरू होता है, बैलगाड़ी और घोड़े मिलने लगते हैं। रामनगर से तराई जिले का प्रधान कसबा काशीपुर १२

कोस और मुरादाबाद ३० कोस है। चट्टियों पर छोटी छोटी दुकानें रहती हैं। भिकीसेन में धर्मशाला और अस्पताल और गिरिजाचट्टी पर धर्मशाला और डाकबंगला है।

काठगोदाम के मार्ग में चौखुटिया से ¼ मील आगे १ दुकान और हौज का पानी; २¼ मील आगे छोटा झरना; २½ मील आगे २ झरने; २¾ मील आगे छोटा झरना और ४¼ मील आगे महाकालचट्टी है।

महाकालचट्टी—वहां पक्के और लकड़ी के वल्लियों और फूस के बने हुए छ सात मकान; एक झरना; सड़क के पास एक छोटी नदी पर ९८ फीट लम्बा लोहे का पुल और दहिने नीचे एक कोठरी में महाकालेश्वर नामक १ शिवलिंग है।

महाकालचट्टी से ½ मील आगे खुला हुआ झरना; ¾ मील आगे शाहपुरचट्टी पर लकड़ी फूस से बना हुआ, मोदी का एक मकान और नदी का पानी, १¾ मील आगे बाएं तरफ बस्ती; २¼ मील आगे घराटचट्टी पर पेड़ के नीचे एक चबूतरे के गढ़हे में १ शिवलिंग, २ पक्की धर्मशाले, एक मोदी, एक नदी, १ झरना और १ पनचक्की; ३ मील आगे १ मकान और लेटरबक्स; ३¾ मील आगे छोटा झरना; ४¼ मील आगे डाकबंगले की सड़क; ४¾ मील अमीरचट्टी पर लकड़ी फूस से बना हुआ मोदी का एक मकान और काठ का पुल; ५ मील आगे छोटा झरना और ६¼ मील आगे द्वारहाट है।

सिमालखेतचट्टी से अमीरचट्टी तक पहाड़ की घाटी में खेती का बड़ा मैदान और जगह जगह बस्तियां हैं; कई बस्तियों में केले लगे हैं; मार्ग प्रायः समथल और जगह जगह सुगम चढाव उतार हैं। १ मील कड़ी चढ़ाई के पीछे द्वारहाट मिलता है।

द्वारहाट—वहां सड़क के किनारों पर पन्द्रह बीस पक्के मकान हैं, जिन में कपड़ा, बरतन और सब जिन्स बिकती हैं और यात्री टिकते हैं। वहां सफाखाना, डाकखाना झरने और डाकबंगला है। वहां से १ सड़क सोमेश्वर को गई है। इश्तिहार की तख्ती पर सोमेश्वर १३ मील और रानीखेत १२¾

मील लिखा है। बाजार से बाहर पहाडियों पर पक्के मकानों को छोटी छोटी कई बस्तियां और नीचे एक जगह ३, एक जगह २ और कई जगह एक एक शिखरदार पहाड़ी मन्दिर देख पड़ते हैं। आगे एक छोटी नदी पर काठ का पुल है; वहां से एक सड़क डांकबंगले को गई है। द्वारहाट के पास मैदान है।

रानीखेत की सड़क—द्वारहाट से ¾ मील आगे पुलिस-चौकी का दो मंजिला मकान है। उससे आगे दो सड़क गई है;-दहिने की सड़क से रानीखेत छावनी १२ मील और आगे की सड़क से अलमोड़ा २४¼ मील है। रानीखेत वाली सड़क दूसरी सड़क से यात्रियों के लिए सुगम है। दोनों सड़क खैरना में जाकर मिल गई हैं। पुलिस की चौकी से खैरना आगेवाली सड़क से ३२ मील और रानीखेत होकर २७ मील है।

तिमुहानी सड़क से ½ मील, १ मील और १½ मील पर एक एक झरना; २ मील आगे एक नया पक्का मकान और दोनों तरफ २ झरने; २¼ मील आगे १ झरना, २¾ मील आगे एक नदी पर ५५ फीट लम्बा काठ का पुल; ३ मील आगे भनरगों की दुकान पर एक मोदी के २ मकान और झरना; ३¾ मील आगे पर्वत के नीचे एक पानी का हौज; ४¼ मील आगे बगवाली पोखरचट्टी पर मुसलमानों की वस्ती और इन्हीं की २ दुकानें, डाकखाने में हिन्दू की एक दुकान, छाया हुआ कुंआ हौज, १२ कोठरीवाला एक पक्की धर्मशाला, एक कोठरी में शिवलिंग और जगह मैदान और ५¼ मील आगे बांसुरी सेराचट्टी है।

बांसुरीसेराचट्टी-चट्टी के पास गगास नदी पर ८५ फीट लम्बा लोहे का पुल है। चट्टी पर मोदियों के पक्के ३ मकान; यात्रियों के टिकने के लिये लकड़ी और फूस की २ पलानी; गोरिला देवता का एक बड़ा चौपार मन्दिर, जिसमें एक मूर्ति और बहुत कोठरी हैं; एक झरना; और नदी का पानी है।

बांसुरीसेराचट्टी से ¼ मील आगे से २ सड़क हैं। वहां से बाएं की सड़क पर अलमोड़ा १८¾ मील है। दहिने की सड़क पर चट्टीसे ¾ मील आगे एक

झरना; १½ मील आगे मलयनदी चट्टी पर २ मोदी, टिकने के लिए २ पक्के मकान, एक झरना, २ नदियों का संगम, दोनों नदी पर २ पुल; ३¼ मील आगे छाया हुआ कूँआ हौज; ३½ मील आगे रेवतीगांव चट्टी पर छप्पर की १ दुकान और रेवतीगांव; ४¾ मील आगे बैलगाड़ी की सड़क, जो पीछे रानीखेत को और आगे अलमोड़ा को गई है और ५¼ मील आगे मजखली चट्टी है। मलय नदी से आगे २¾ मील तक कड़ी चढ़ाई है।

मजखलीचट्टी—मजखलीचट्टी पर एक मोदी का एक पक्का मकान और टिकने के लिये एक बड़ी पलानी और पेड़ों तर जगह है। उस के आस पास दूरतक समथल में सड़क है, जिस पर नित्य बहुतेरी बैल गाड़ियां और बहुतेरे टट्टू टिकते हैं। चट्टी से थोड़ही दूर पर एक झरना है।

मजखली धर्मशाला—मेरे झम्पान का एक कुली बिमार होगया, इस लिये मैं झम्पान को छोड़ कर मजखली चट्टी से पैदल चला। ½ मील आगे मजखली की धर्मशाला मिली। वहां एकही छप्पर के नीचे चारो तरफ मुख वाले एक धर्मशाले में १२ कोठरियां, मोदी की २ पलानी और जगह मैदान है। थोड़ही आगे ऊपर डाक बंगला और नीचे झरना का हौज है। वहां से पीछे की तरफ रानीखेत ८¼ मील और आगे की ओर बाएं वाली सड़क से अलमोड़ा १४½ मील है। इस सड़क द्वारा सिकरम काठगोदाम से रानी खेत होकर अलमोड़ा जाते हैं। वहां से रानीखेत और अलमोड़ा यात्रियों के लिये सब जगहों से अधिक निकट है। बाएं वाली सड़क से अलमोड़ा होकर काकरीघाटचट्टी २७¾ मील और चढ़ाई उतराई की सीधी सड़क से काकरी घाटचट्टी केवल १४¾ मील है। अलमोड़े वाली सड़क पर चढ़ाई उतराई नहीं है। उस पर बैल गाड़ी चलती है।

रानीखेत।

यह द्वारहाट से १३ मील, मजखली-धर्मशाले से ८¼ मील, तिर्छानी सड़क

से ११ मील और खैरना से १५ मील पर है। बदरीनाथ से लौटे हुए यात्री को द्वारहाट से या मजखली से और काठ गोदाम से, जानेवालों को खैरना से रानीखेत जाना चाहिए। रानीखेत से मजखली होकर अल्मोड़ा २२¼ मील और चढ़ाई उतराई की सड़क से काठगोदाम ३९ मील है।

रानीखेत पश्चिमोत्तर देश के कमाऊं जिले में एक मशहूर फौजी छावनी है। गोरे और हिन्दुस्तानी फौज वहां रहती हैं और गर्मी की ऋतुओं में युरोपियन, सिविलियन और दूसरे सरीफ लोग निवास करते हैं। वहां का जल वायु बहुत उत्तम है। सन १८८० ई० के सितम्बर की खास मनुष्य-गणना के समय रानीखेत में ६६३८ मनुष्य थे; अर्थात् ३२४३ हिन्दू, २०७२ युरोपियन, १२९३ मुसलमान, ७ युरेसियन, ७ देशी कृस्तान और १६ दूसरे।

अल्मोड़ा।

अल्मोड़ा मजखली धर्मशाला से १४½ मील, काकरीघाटचट्टी से १३¼ मील और भिमौली से २५ मील पर है। बदरीनाथ से लौटे हुए यात्री को मजखली से और काठगोदाम से जानेवालों को भिमौली अथवा काकरीघाटचट्टी से अल्मोड़ा जाना चाहिए। काठगोदाम से भीमताल, भीमौली, खैरना और काकरीघाटचट्टी होकर चढ़ाई उतराई की सड़क से अल्मोड़ा ४३½ मील है, परन्तु भीमौली से सीधी सड़क से जाने से काठगोदाम से अल्मोड़ा ३७ मील पर मिलेगा।

अल्मोड़ा पश्चिमोत्तर देश के कमाऊं जिले का सदर स्थान और जिले में प्रधान और पुराना कसबा समुद्र के सतह से ५५०० फीट ऊपर है। वहां गोरखों की २ पल्टने रहती हैं। कमजोर फेफड़ों के आदमियों के रहने के लिये वह प्रसिद्ध स्थान और सौदागरी की मण्डी है। वहां सरकारी इमारतों के अलावे एक कोढ़ीखाना है।

सन १८८१ की मनुष्य-गणना के समय छावनी के सहित अल्मोड़े में

७३९० मनुष्य थे अर्थात् ६३२३ हिन्दू, ८६६ मुसलमान और २०१ कृस्तान। इनमें से म्युनिस्पलिटी के भीतर केवल ४८१३ मनुष्य थे।

कमाऊं जिला—यह पश्चिमोत्तर देश में कमाऊं बिभाग का एक जिला है। जिले का क्षेत्रफल ६००० वर्ग मील और इसका सदर स्थान अल्मोड़ा है। इस जिले में ३ सबडिवीजन हैं,—अलमोड़ा या खास कमाऊं, गढ़वाल और भावर। कमाऊं जिले में हिमालय पहाड़ियों का सिलसिला है। पहाड़ियां और तराई के बीच में १० मील से १५ मील तक चौड़ा भावर अर्थात् बिनापानी का जंगल फैला हुआ है। हिमालय के सिलसिले पूर्व से पश्चिम को गए हैं। नीतीपास का शिखर समुद्र के जल से १६५७० फीट, नानापास का १८००० फीट और जुहार पास का १७२७० फीट ऊंचा है। जिले के पश्चिम गढ़वाल की सीमा पर त्रिशूल पहाड़, जिसकी चोटियां त्रिशूल की शकल की हैं, स्थित है,—इनमें से पूर्ववाली चोटी समुद्र के जलसे २२३४२ फीट, मध्य की चोटी २३०९२ फीट और पश्चिम की चोटी २३३८२ फीट ऊंची है। त्रिशूल पहाड़ के आस पास लगभग १४० मील लंबाई और ४० मील चौड़ाई में नन्दादेवी, नन्दाकोट इत्यादि ३० चोटियों से अधिक १८००० फीट से अधिक ऊंची हैं। जिले में छोटी नदीयां बहुत हैं। कालीनदी के हिस्से को सारदा और गागरा कहते हैं, जिनमें चउलों, गुंका, गोरीगंगा, पूर्वी रामगंगा और सरजू मिली हैं। कई नदियां अलकनन्दा में मिलगई हैं। पश्चिमी रामगंगा गढ़वाल जिले में लोहवा के निकट निकली है। हिमालय के सिलसिले पर नैनीताल, भीमताल, नवकुचिया और मालवाताल प्रधान झील हैं। जिले में पत्थर, लोहा, ताम्बा इत्यादि की खाने हैं; परन्तु पूरे तौर से उनमें काम नहीं होता है। जंगली जानवरों में तेंदुए, भालू, हिमालय के बैल, अनेक प्रकार की हरिन इत्यादि होते हैं। भावर में और शिवालिक पहाड़ियों के जंगलों में हाथी रहते हैं।

इस जिले में सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय ५६६९४६ मनुष्य थे; अर्थात् २९६२८३ पुरुष और २७०६६४ स्त्रियां और सन् १८८१ में ४९३६४१ थे; अर्थात् ४७९९४८ हिन्दू, ११२६१ मुसलमान, २३०३ कृस्तान,

३२ बौद्ध और ७ पारसी। जातियों के खाने में २१६२४७ राजपूत, १२०१३७ ब्राह्मण, १०४९३६ डोम थे। ५१५१ गांव पहाड़ियों के बगलों पर हैं, जिन में से लगभग ४६६२ गांवों में २०० से कम ४३५ गावों में २०० से ५०० तक, ४४ गांवों में ५०० से १००० तक और केवल १० गावों में १००० से अधिक मनुष्य थे।

बड़ीचोटियों के उत्तर के देश मे भोटिए बसते हैं। उनकी शकल और भाषा तिब्बत के लोगों से बहुत मिलती है। कमाऊं के निवासी साधारण प्रकार से सुन्दर हैं। सब बातों को विचारने से इन की चाल चलन अच्छी है। वहां के पुरुष चालाक, सच्चे और परीश्रमी होते हैं। स्त्रियां प्रायः सब सुन्दर होती हैं। वहां के लोग पत्थर की दीवार बना कर स्लेट से छाकर के मकान बनालेते हैं।

इस जिले में केवल अलमोड़ा देशी कसबा है। चांद राजाओं की उजड़ी हुई राजधानी चम्पावत अब एक गांव के समान है। रानीखेत और नैनीताल में युरोपियन स्टेशन और बाजार हैं। मिलनजुहार भोटियों के रहने की प्रधान जगह एक बड़ा गांव है। राम नगर बड़ा बाजार है। कमाऊं में खेती करने के योग्य भूमि कम है। खेतों के लिये पहाड़ियों के बगलों पर काट कर के सीढ़ियों के समान भूमि बनाई जाती है। गेहूँ, तम्बाकू, जव, सन, जनेरा, ऊख, कपास, तेल के बीजें सब कुछ जगह जगह उत्पन्न होते हैं। कमाऊं में फल बहुत होते हैं, वहां की नारंगी बहुत उत्तम है वहां चायकी खेती बहुत होती है।

भोटिए लोग तिब्बत और मैदान के साथ कमाऊं की सौदागरी करते हैं। टट्टू, भेड़, निमक, ऊन, बेशकीमती पत्थर, मोटा ऊनी कपड़ा, चीनी, रेशम इत्यादि दूसरी जगहों से कमाऊं में आते हैं और गल्ले, रुई का असबाब, तम्बाकू, चीनी, मसाला, रंग, चाय, मकान की लकड़ी, मोटा कपड़ा इत्यादि दूसरे देशों में भेजे जाते हैं। उत्तर के रहनेवाले लोग ऊनी कपड़े पहनते हैं। कमाऊं से चाय, अदरक, हलदी, लालमिरचा, आलू, मसाला, मधु, मीम, थोड़ा लोहा ताम्बा, लकड़ी भावर की पैदावार इत्यादि चीजें मैदान में भेजी जाती हैं। बड़ी नदियों के ऊपर पुरानी चाल के रस्से के झुलाओं के स्थान पर लोहे के लटकाऊं पुल बने हैं। गाड़ी की सड़क हलद्वानी से नैनीताल तक

और रामनगर से रानीखेत और अल्मोड़े तक गई है । सन् १८८२—८३ में बनवाई हुई सड़कों की लम्बाई १४०२ मील थी। अकतूबर से अपरैल तक ७ मास इसदेश के जल वायु खुसनुमा रहते हैं। कमाऊं विभाग में ३ जिले हैं,—कमाऊं, तराई और गढ़वाल।

इतिहास—ऐसा प्रसिद्ध है कि सन ईसवी की दसवीं शदी में चांद घराने का पहला राजा सोमचन्द्रने प्रयाग के पास के झूँसी से आकर कमाऊं जिले के कालीकमाऊं अर्थात् चम्पावत को अपने राज्य का प्रधान स्थान बनाया। राजा कल्यानचन्द्रने चम्पावत को छोड़ कर अल्मोड़ा को अपनी राजधानी बनाया। उसके पुत्र रुद्रचन्द्रने सन् १५८७ में लाहौर में जाकर बादशाह अकबर को नम्रता दिखलाई। मुसलमान बादशाह पहाड़ में कभी नहीं जा सके, किंतु सन १७४४ में अलीमुहम्मदखां ने कमाऊं पर चढ़ाई करके अल्मोड़ा को लूटा और उसे लेलिया। मुसलमान लोग ७ महीनों के पश्चात् अपने मैदान को लौट गए। सन १७४९ में रोहिला मुसलमानों ने फिर पहाड़ी देश पर चढ़ाई की; किंतु वे परास्त हो कर लौट गए। कुछ काल बीतने पर गोरखों की सेना कालीनदी पार हो कर गंगोली और कालीकमाऊं होती हुई अल्मोड़े में आई। कमाऊं का राजा मैदान से भाग गया। उसका संपूर्ण राज्य गोरखों ने लेलिया। चौदह वर्ष तक नैपाली हुकूमत रही। सन १८१५ में अंगरेजी सरकार ने कमाऊं और गढ़वाल जिले को गोरखों से छीन लिया।

मजखली धर्मशाले से आगे चीड आदि बड़े बड़े वृक्षों से भरा हुआ हरित जंगल है। चट्टियों के अतिरिक्त किसी जगह आग सुलगाने अथवा तम्बाकू पीने का हुकुम नहीं है। धर्मशाले से $\frac{1}{8}$ मील आगे एक झरना; २$\frac{1}{8}$ मील आगे १ हौज और २$\frac{1}{8}$ मील आगे तिमुहानी सड़क है। उससे दहिने पीछे की तरफ रानीखेत ११ मील और बाएं तरफ अल्मोड़ा १८ मील है। दोनों तरफ बैलगाड़ी की सड़क है। मजखली से ३ मील आगे झरना पर पुल; ४$\frac{1}{8}$ मील आगे बहता हुआ पानी; ४$\frac{1}{2}$ मील आगे बहुत छोटे २ झरने; ४$\frac{1}{8}$ मील आगे दहिने एक दूसरी सड़क; ५ मील आगे २ छोटे झरने; ८ मील आगे तार का खंभा और ९ मील आगे सीतला-

चट्टी है। धर्मशाले से वहां तक सुगम चढ़ाई उतराई की सड़क और जगह जगह समथल भूमि और एक जगह १ मील कड़ी चढ़ाई है।

सीतलाचट्टी—सीतलाचट्टी के पास चीड़ के बड़े बड़े वृक्षों का बाग; १ पक्का और २ लकड़ी फूस से बने हुए मकान और १ झरना है। मैं वहां से काठगोदाम जाने के लिये ३½ रुपये पर एक टट्टू किराया करके उस पर सवार हो आगे चला।

सीतलाचट्टी से २ मील आगे १ झरना; २¾ मील आगे छोटा झरना; २¾ मील आगे नीचे १ अच्छी बस्ती और ४ मील आगे बाएं तरफ कोशलानदी है। वह नदी अलमोड़ा होकर आई है। उसके बाएं किनारे अलमोड़ा की सड़क है। चट्टी से ५¼ मील आगे कोशला नदी पर लोहे का पुल, जिसको पार होकर आगे चलना होता है और ५¾ मील आगे कांकरीघाटचट्टी है। सीतलाचट्टी से १¾ मील सुगम चढ़ाई के बाद कांकरियाघाट तक कड़ी उतराई है।

कांकरीघाट चट्टी—वहां मैदान में २ पक्के और ४ पलानीवाले मकान, १ गुफा, कोशला नदी का पानी और अलमोड़े की सड़क पर एक मोदी का मकान और १ झरना है।

जो आदमी बांसुरीसेराचट्टी अथवा मजखली की धर्मशाले से अलमोड़ा जायगा, वह इसी जगह यात्रीवाली सड़क पर घुमाव रास्ते से ऊपर होगा। यहां चौमोहानी सड़क है,-पहली पीछेवाली सड़क, दूसरी १३¼ मील की अलमोड़ें तक की सड़क, तीसरी १२ मील की खैरना तक गाड़ी वाली सड़क और चौथी ६¼ मील चढ़ाई उतराई वाली खैरना तक की सड़क।

कांकरीचट्टी से १¼ मील आगे पहड़ियाचट्टी पर एक मोदी के पलानी से छाए हुए २ मकान; ४ मील आगे चमड़ियाचट्टी पर एक मोदी की ३ पलानी, एक नदी और २ झरने; ४¼ मील आगे बड़ा झरना; ५¼ मील आगे छोटा झरना और ६¼ मील आगे खैरनाचट्टी है। कांकरीघाट से वहां तक सुगम चढ़ाव उतार का मार्ग है।

खैरनाचट्टी—खैरना में पन्द्रह बीस पक्के मकान, डाकखाना, पुलिस की चौकी, बाजार और कोशलानदी है। कोशला नदी पर लोहे का कैंचीदार

बड़ा पुल है। पुल होकर लोग रानीखेत जाते हैं। द्वारहाट के पास रानीखेत की सड़क छुटी थी वह वहां मिल गई। वहां से एक गाड़ी की सड़क पूर्व कथित कांकरीघाटचट्टी होकर अल्मोड़े को गई है। बैलगाड़ी काठगोदाम से नैनीताल, खैरना, रानीखेत और अल्मोड़े को जाती है। खैरना से रानीखेत २७ मील ऊपर की ओर है। गाड़ीवाली सड़क से काठगोदाम ३४ मील नीचे है; परन्तु चढ़ाई उतराई वाली सड़क से वह केवल २४ मील पर है। कोशला नदी खैरना मे छूट जाती है। उस नदी में एक तरह के सफेद और काले पत्थर बहुत हैं। आगे की तरफ से १ नदी आकर वहां कोशला में मिल गई है। काठगोदाम जानेवाले लोग उसी नदी के सन्मुख उसके दहिने किनारे होकर आगे चलते हैं। खैरना से आगे गाड़ीवाली सड़क पर चलना होता है। आगे की ओर से तार आकर रानीखेत और अल्मोड़े को गया है।

चौमोहानी सड़क—खैरना से १/२ मील आगे १ मोदी और १ पलानी; १/४ मील आगे गरमपानी चट्टी पर ३ मोदी, पांच छ पलानी और झरना; २१/२ मील आगे रामगढ़ चट्टी पर १ मोदी; २ पलानी और नदी पर १२० फीट लम्बा कैंचीदार पुल; ३ मील आगे ऊपर डाकबंगला और नीचे १ दुकान, १ झरना और १ झरना हौज और ३१/२ मील आगे चौमोहानी सड़क है। उस से आगे दहिनी ओर १ सड़क नैनीताल को गई है। उस सड़क से गाड़ी नहीं जाती है। नैनीताल वहां से १२ मील है। चौमोहानी सड़क के पास १ मोदी है, ऊपर चढ़ने पर थोड़ा घूम कर गाड़ी वाली सड़क फिर मिल जाती है। पीछे की तरफ १ सड़क रामगढ़ को गई है।

चौमुहानी सड़क से १/४ मील आगे एक चट्टी पर १ झरनाहौज, २ मोदी, ६ पलानी और २ झरने, २ मील आगे १ झरना, २१/२ मील आगे छोटा झरना, ३ मील आगे पानी झरता हुआ पर्वत और ३१/२ मील आगे कैंचीचट्टीपर १ मोदी, २ पलानी; खैरना वाली नदी और १ झरना है। वहां यात्री लोग गाड़ीवालों सड़क छोड़कर चढ़ाई उतराई की सड़क से १/२ मील रास्ते का बचाव करलेते हैं, आगे फिर गाड़ीवाली सड़क मिल जाती है। चौमुहानी से ४१/२ मील आगे पानी झरता हुआ पर्वत; ५ मील और ५१/२ मील आगे बड़ा झरना और छोटा

पुल; ६ मील आगे निगलाटचट्टी पर १ मोदी, ३ पलानी, १ झरना और मैदान जगह; ७½ मील आगे छोटा झरना और ८½ मील आगे भिमौलीचट्टी है। खैरना से भिमौलीचट्टी तक गाड़ी की सड़क है। खैरनावाली नदी यहां से छूट जाती है।

भिमौलीचट्टी–भिमौलीचट्टी पर १२ कोटरी वाली १ धर्मशाला, ३ मोदी, टट्टुओं के टिकने के लिये कई पलानी, पेड़ों के नीचे बड़ा मैदान, १ टूटी हुई छोटी धर्मशाला, साधु की समाधि, बहुत छोटा शिव मन्दिर और दो तीन झरने हैं।

भिमौली में ५ सड़कों का मेल है। पहली सड़क पीछे खैरना को, दूसरी बाईं ओर पीछे की तरफ २५ मील अल्मोड़े को, तीसरी २२ मील की गाड़ी की सड़क नैनीताल के नीचे होकर काठगोदाम को; चौथी चढ़ाव उतार की ७ मील की सड़क नैनीताल को और ५ वीं चढ़ाव उतार की सड़क भीमताल होकर काठगोदाम को गई है।

नैनीताल।

भीमौलीचट्टी से ७ मील और काठगोदाम से भीमताल छोड़कर सीधी सड़क से १२ मील कमाऊं जिले में नैनीताल एक स्वास्थ्य कर स्थान है। भीमौलीचट्टी से जाने में करीब २ मील की चढ़ाई पड़ती है। काठगोदाम के रैलवे स्टेशन से २ मील रानीबाग तक देश समतल और रानीबाग से आगे सड़क चढ़ाव की है। काठगोदाम से ९ मील तक टांगा पर और अन्त के ३ मील डण्डी में या टट्टू पर नैनीताल जाना होता है।

नैनीताल में पश्चिमोत्तर देश के गवर्नमेन्ट के रहने के लिये कोठी बनी हुई है और एक छोटा फौजी स्टेशन है। गर्मी की ऋतुओं में पश्चिमोत्तर देश के लेफ्टिनेन्टगवर्नर और दूसरे बहुतेरे युरोपियन वहां रहते हैं।

नैनीताल की झील करीब १ मील लम्बा और ५०० गज चौड़ा १२० एकड़ के क्षेत्र फल में फैला है। इसकी सब से अधिक गहराई ९३ फीट है और इसके तलाव का सतह ६४१० फीट समुद्र के जल से ऊपर है। कसबा झील के किनारों पर पहाड़ियों के बगल में बसा हुआ है। झील के पश्चिमोत्तर प-

धान आबादी है। नैनीताल के पश्चिमोत्तर की चिनाजो चोटी समुद्र के जल से ८५६८ फीट और देवपत्थर चोटी ७५८९ फीट ऊंची है। कमाऊं विभाग का बड़ा हाकिम कमिश्नर साहब नैनीताल में रहता है।

नैनीताल की मनुष्य-संख्या गर्मी के दिनों में बहुत बढ़ जाती है। सन् १८८१ की फरवरी में मनुष्य-गणना के समय केवल ६५७६ मनुष्य थे; अर्थात् ५६३९ हिन्दू, ८११ मुसलमान और १२६ कृस्तान; किन्तु सन् १८८० के सितंबर में खास मनुष्य-गणना के समय १००५४ मनुष्य थे; अर्थात् ६८६२ हिन्दू, १७४८ मुसलमान, १३२८ युरोपियन, ५७ देशी कृस्तान, ५४ युरेसियन और ५ दूसरें।

भीमौलीचट्टी से आगे¼ मीलपर एक झरना; १¼मील पर परसौलीचट्टी पर एक मोदी, १ बड़ी पलानी और १ झरना; २½ मील पर आगे बंगला की सड़क; ३ मील आगे से मैदान; ४ मील आगे चार पांच पक्के मकान, १ सुन्दर झरना, पहाड़ी के ऊपर बंगले और पुलिस की चौकी; आगे खेत के मैदान में बड़ा झरना, जिस का पानी आगे जाकर भीमताल में गिरता है और ४½ मील आगे भीमताल है।

भीमताल।

भीमताल करीब १ मील लम्बा और औसत में ¼ मील चौड़ा है। उसकी सब से अधिक गहराई ८७ फीट है। तालाब के पूर्व किनारे पर भीमेश्वर शिव का मन्दिर, ३ बंगले, १ सफाखाना और बारह चौदह पक्के मकान हैं। तालाब में पानी रोकने की दीवार और पानी निकलने के रास्ते बने हैं। तालाब के पश्चिमोत्तर १ दुकान और १ बड़ी पलानी; दक्षिण-पश्चिम १ मोदी, १ पलानी और सफाखाना और चारो तरफ सड़क है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—स्कंदपुराण—(केदारखंड, प्रथमभाग, ८१ वां अध्याय) एक भीमतीर्थ है, जहां पूर्वकाल में भीम ने महादेव जी का तप किया था; वहां भीमेश्वर महादेव स्थित हैं।

नवकुंचियाताल—भीमताल से दो मील पूर्व नवकुंचियाताल है।

उसमें नव कोने होने से उस का नवकुंचिया नाम पड़ा है। उसकी लम्बाई लगभग १००० गज, चौड़ाई ७५० गज और सबसे अधिक गहराई १३२ फीट है। उस के अतिरिक्त उस देश में छोटे बड़े कई झील हैं।

भीमताल से २ मील आगे छोटा झरना; २½ मील आगे और ३½ मील आगे एक एक झरना; ४ मील आगे नवचंडी चट्टी पर नवचण्डी देवी का छोटा मन्दिर, १६ कोठरी वाली १ धर्मशाला और ३ दुकानें और ५ मील आगे रानीबाग है। भीमताल से ४ मील तक कड़ी उतराई है।

रानीबाग—रानीबाग में पन्द्रह बीस पक्के मकान, डांकबंगला और नदी पर लोहे का लटकाऊं पुल है। वहां १ नदी नैनीताल की ओर से, दूसरी भीमताल से और तीसरी गोगंगा नामक नदी दहिने से, आकर मिली है। नदी में एक सरकारी पनचक्की है। बैलगाड़ी की सड़क जो भिमौली में छुटी थी वह वहां मिल गई। रानीबाग से पहाड़ छूट जाता है, आगे बराबर जमीन पर चलना होता है।

काठगोदाम।

रानीबाग से २ मील काठगोदाम का स्टेशन बाजार है। वहां जरूरी काम के दुकान्दार और १ छोटी नहर है और एक्के और टमटम वाले बहुत रहते हैं। वहां से सड़क द्वारा आगे को ओर बरेली ६३ मील और पीछे नैनीताल १२ मील है। गाड़ीवाली सड़क से नैनीताल कई मील अधिक है।

काठगोदाम से उत्तर और कुछ पूर्व एक सड़क भोट, नीती और तपोवन होकर जोशीमठ को गई है, जिस द्वारा भोटिये लोग बदरीनाथ के देश में व्यापार करते हैं और गोरखे लोग काठगोदाम में आकर रेल पर चढ़ते हैं और वहां रेल गाड़ी से उतर कर अपने देश को जाते हैं।

बदरीनाथ से रानीखेत, अल्मोड़ा और नैनीताल छोड़कर काठगोदाम का रेलवे स्टेशन १६८ मील है। दस ग्यारह दिन में यात्री लोग बदरीनाथ से काठगोदाम पहुंच जाते हैं।

काशीपुर।

काठगोदाम से लग भग २५ मील पश्चिम कुछ दक्षिण और मुरादाबाद शहर से ३१ मील पूर्वोत्तर पश्चिमोत्तर देश के कमाऊं विभाग के तराई जिले में प्रधान कसबा और तहसीली का सदर स्थान काशीपुर है। काशीपुर से लग भग १७ मील पश्चिमोत्तर पर्वत के नीचे कमाऊं जिले में चिलिकिया है, जिसको रामनगर भी कहते हैं।

सन १८९१ की मनुष्य-गणना के समय काशीपुर में १४७१७ मनुष्य थे, अर्थात् ८३७१ हिंदू, ६३२५ मुसलमान, ८ जैन, ७ सिक्ख और ६ कृस्तान।

काशीपुर में एक पवित्र सरोवर, कई एक देवमन्दिर और एक खैराती अस्पताल है। काशीपुर से गल्ले दूसरी जगहों में भेजे जाते हैं और वहां मोटा कपड़ा तैयार होता है। काशीपुर में एक जमीदार राजा है।

तराईजिला—पश्चिमोत्तर प्रदेश के कमाऊं विभाग में तराई एक जिला है। जिले का क्षेत्रफल ९३८ वर्ग मील है। इसके उत्तर कमाऊं जिला; पूर्व नैपाल राज्य और पीली भीत जिला; दक्षिण बरैली और मुरादाबाद जिले और रामपुर का राज्य और पश्चिम विजनौर जिला है। जिले का प्रधान कसबा काशीपुर है; किंतु गरमी की ऋतुओं का सदर स्थान नैनीताल है। उस जिले में लग भग ५०० वर्ग मील भूमि खेती के योग्य है, जिसमें से ३०० वर्ग मील में खेती होती है।

तराईजिला पहाड़ियों के क़दम के साथ साथ लगभग १२ मील की चौड़ाई में ९० मील पूर्व से पश्चिम तक चला गया है। उस जिले में बहुत छोटी छोटी नदियां हैं और जंगलों में हाथी, बाघ, भालू, तेंदुए, भेड़िया इत्यादि वन जंतु रहते हैं। तराई का जल वायु खराब है। सन १८६१ में तराई एक जिला कायम हुआ।

उस जिले में सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय २१०८२७ मनुष्य थे, अर्थात् ११५७९७ पुरुष ९५०३० स्त्रियां और सन् १८८१ में २०६९९३ मनुष्य थे; अर्थात् १३१९६६ हिन्दू, ७४९८२ मुसलमान ३४ जैन और ११ कृस्तान।

जातियों के खाने में १८३२० चमार, ९०२० कुर्मी, ८७२२ कहार, ७९७१ वनिया, ६८९७ ब्राह्मण, ६५६४ माली, ४५०८ लोधी, ४२९५ राजपूत, २५७२ गड़ेरिया, २५४० कायस्थ शेषमें दूसरी जातियां थीं। जिले में काशीपुर के अलावे यशपुर एक बड़ी वस्ती है जिसमें ७०५५ मनुष्य थे।

हलद्वानी।

काठगोदाम से ४ मील दक्षिण पश्चिमोत्तर देश के तराई जिले में हलद्वानी एक कसवा है। काठगोदाम से हलद्वानी की ओर चढ़ाव का मार्ग है, इस लिये रेल-महसूल चारही मील का ८ आना लगता है। प्रायः सब यात्री दो तीन आने भाड़ा देकर एक्के पर काठगोदाम से हलद्वानी आते हैं। पहाड़ी व्यापारी या साधारण लोग हलद्वानी से बैलगाड़ी, टट्टू और कंधों पर विविध प्रकार के जिन्स और निमक पहाड़ में ले जाते हैं। हलद्वानी के अधिक मकान दो मंजिले पत्थर के बने हुए हैं और टीन तथा पत्थर के तख्तों से छाए गए हैं। वहां सन् १८९४ ई० की बनी हुई बच्चीगौड़ की दो मंजिली धर्मशाला है। धर्मशाले के पास एक अठपहली दिग्गी और एक गुंवज दार मंदिर है; मन्दिर के चारो ओर उसमें लगा हुआ मेहरावदार दालान बना है।

—o—

काठगोदाम से लखनऊ भोजपुरा जंक्शन और वरैली होकर २१२ मील और भोजपुरा जंक्शन, पीलीभीत और सीतापुर होकर २४१ मील है। अधिक लोग सीतापुर होकर लखनऊ जाते हैं क्योंकि "रुहेलखंड कमाऊं रेलवे" का महसूल प्रतिमील दोही पाई लगता है। लखनऊ से पूर्व-दक्षिण ८३ मील अयोध्या, २०२ मील बनारस, २०९ मील मुगलसराय जंकशन और २९६ मील विहिया का रेलवे स्टेशन है। मैं विहिया में रेलगाड़ी से उतर कर उस से १२ मील उत्तर गंगा के दूसरे पार अपने जन्म स्थान चरजपुरा चला आया।

साधुचरण प्रसाद,

—o—

भारत-भ्रमण पांचवांखंड समाप्त।

—o—